RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2023-25
Desp.02 January 2025

अंक - 07 (मासिक) वर्ष - 20 जनवरी, 2025 मूल्य 20/-

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

माहेश्वरी ऑफ द ईयर 2024

उद्योग और सेवा के 'आदर्श'
रामअवतार जाजू

प्रशासनिक क्षमता के महारथी
IAS गोपाल डाड

रितेश ईनाणी दुबारा चुने गये
हाईकोर्ट बार एसोसिएशन अध्यक्ष

'हस्तशिल्प' के आईकॉन
लेखराज माहेश्वरी

श्री माहेश्वरी मेलापक
वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2025
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-07 जनवरी, 2025 वर्ष-20

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
प्रो. विवेक माहेश्वरी, अहमदाबाद (गुज.)

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

ईश्वर की अभिलाषा शांति

महाभारत के उद्योगपर्व की यह एक अनुपम प्रेरक कथा है। इसके अनुसार कौरव-पांडवों के बीच महायुद्ध से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण शांतिदूत बनकर हस्तिनापुर पहुँचे। कृष्ण चाहते थे कि दुर्योधन पांडवों को उनका राज्य न्यायसम्मत वापस कर दे ताकि भावी युद्ध टाला जा सकें।

भगवान के हस्तिनापुर पहुँचने से ठीक एक दिन पूर्व कौरवराज धृतराष्ट्र ने महामंत्री विदुर को बुलाया और बताया कि उसने कृष्ण को भेंट देने के लिए बहुमूल्य सामग्री एकत्र की है। धृतराष्ट्र ने कहा वह अपनी ओर से कृष्ण को स्वर्णनिर्मित सोलह रथ, आठ हाथी, सौ दासियाँ, हजारों मृगचर्म सहित असंख्य रत्न अर्पित करूँगा। उन्हें ठहराने के लिए दुःशासन का महल दूँगा जो दुर्योधन के महल से भी अधिक सुंदर व सुविधा संपन्न है।

विदुर को आश्चर्य था कि धृतराष्ट्र ने उस शांति सन्धि के विषय में एक शब्द न कहा, जिसके एकमात्र उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर पधार रहे हैं। उसके उलट धृतराष्ट्र उपहारों से उपकृत कर कृष्ण को अपने पक्ष में करना चाह रहा था।

तब विदुर जो अत्यंत समझदार, सबके हितैषी और धृतराष्ट्र के अनुज होकर शुभचिंतक थे, नाराज़ हो उठे। विदुर ने फटकारते हुए कहा, राजन्! आप सरलता को अपनाइए। मूर्खतावश कुटिलता का आश्रय लेकर अपने कुल का नाश न कीजिए।

विदुर ने कहा, 'आशंसमानः कल्याणं कुरूनभ्येति केशवः। येनैव राजन्नर्थेन तदेवास्मा उपाकुरु।।' अर्थात् महाराज! भगवान कृष्ण दोनों पक्षों के कल्याण की कामना लेकर जिस प्रयोजन से कुरुदेश में आ रहे हैं, उन्हें बस उसी का उपहार दीजिए।

इतिहास साक्षी है, मूर्ख धृतराष्ट्र ने विदुर की बात न मानी। उसने इकट्ठा किए उपहार कृष्ण को दिए मगर भगवान ने सब अस्वीकार कर दिए। भगवान शांति चाहते थे वह न मिली और अंततः महायुद्ध हुआ जिसमें धृतराष्ट्र के सारे सौ पुत्र मारे गए।

साधो! सन्देश यह है कि ईश्वर अपने भक्तों से केवल शांति का अभिलाषी हैं। ईश्वर कभी प्रलोभन, पूजा और प्रदर्शन से प्रसन्न नहीं होता। ईश्वर संतुष्ट होता है जब हम स्वयं शांत रहते हैं और अपने आसपास शांति रखते हैं।

यह नववर्ष इसी संकल्प से प्रारंभ हो कि हम शांत रहेंगे और सम्पत्ति के लिए सम्बन्धियों से विवाद न करेंगे तो समझिए कि हमारे कदम ईश्वर की ओर उन्मुख हो गए...!

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

प्रेरणा का स्त्रोत...

माहेश्वरी समाज की उन्नति में सर्वमान्य रूप से माहेश्वरी समाज के संस्कारों व आदर्शों के महत्व को स्वीकारा जाता है। वास्तव में यह सत्य भी है, क्योंकि व्यक्ति तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह सफल व्यक्ति वाले संस्कारों तथा आदर्शों को ग्रहण नहीं करता। अतः ये तो सफलता की पाठशाला ही माने जाते रहे हैं। हमारी हर पीढ़ी को अपने पुरोधाओं से ये संस्कार व आदर्श विरासत के रूप में मिले और हमने भी अपनी इस विरासत को सहेजने-संवारने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। इसी का परिणाम माहेश्वरी समाज की गौरवशाली सफलता है, जिसकी मुरीद पूरी दुनिया है।

संस्कार कोई एक घुटी नहीं होती जिसे हम अपनी पीढ़ी को पिला दें। यह तो वास्तव में हमारा व्यक्तित्व व कृतित्व भी है, जो हमारी भावी पीढ़ी को मार्गदर्शित करता है। इसके लिये हमें अपने आपके व्यक्तित्व व कृतित्व को इस तरह संवारना जरूरी है, जिससे हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरणा ग्रहण कर सके। कहा जाता है कि जैसा वातावरण मिलता है, वैसा ही व्यक्तित्व बच्चों का बन जाता है। जैसे चोर के बेटे को चोरी सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती और वणिक के बेटे को व्यापार। वास्तव में यह सब हमारे संस्कारों का ही प्रतिफल है, जिसके परिणाम हमारी भावी पीढ़ी में दिखाई देते हैं। अतः यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम अपनी भावी पीढ़ी को क्या बनाना चाहते हैं? जैसे वातावरण में हम उन्हें रखेंगे जैसे संस्कार या प्रेरणा हम देंगे, उसी का प्रतिबिंब हमें हमारी भावी पीढ़ी में दिखाई देगा।

''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' द्वारा विगत कई वर्षों से प्रतिष्ठित अवार्ड ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर'' से समाज की ऐसी हस्तियों का सम्मान किया जाता रहा है, जो किसी भी क्षेत्र में राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना उल्लेखनीय योगदान दे रही हैं। इसके अंतर्गत विशेषांक के रूप में ऐसी विभूतियों के कृतित्व तथा व्यक्तित्व का प्रकाशन भी किया जाता है। इस अवार्ड का उद्देश्य समाज का गौरव इन विभूतियों का सम्मान करना तो होता ही है, साथ ही हमारी भावी पीढ़ी को इनके कृतित्व व व्यक्तित्व से परिचित करवाना भी है। वास्तव में ये आलेख इन विभूतियों के संस्कारों व आदर्शों का आयना भी हैं, जिनसे सहज रूप से हमारी भावी पीढ़ी में इन आदर्शों व संस्कारों का बीजारोपण किया जा सकता है, जो उन्हें सफलता की ओर ले जाते हैं।

अवार्ड ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर'' की इस श्रंखला में वर्ष 2024 के ये अवार्ड समाज की तीन विभूतियों को प्रदान किये जा रहे हैं। जिनमें शामिल हैं, जयपुर निवासी श्री लेखराज माहेश्वरी, इंदौर निवासी श्री रामअवतार जाजू तथा इंदौर निवासी आईएएस श्री गोपाल डाड, जिनके योगदानों को श्री माहेश्वरी टाईम्स नमन करती है। श्री लेखराज माहेश्वरी एक ऐसे समाजसेवी हैं, जिन्होंने राजस्थान व गुजरात के पिछड़े क्षेत्रों के हस्तशिल्प के प्रति अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। परिणाम यह है कि वर्तमान में इस शिल्प का न सिर्फ पूरे देश बल्कि देश की सीमाओं के बाहर भी डंका बजता है। इंदौर निवासी श्री रामअवतार जाजू उद्यम व समाजसेवा का ऐसा संगम है, जिसमे उन्होंने उनके सम्पूर्ण योगदानों को ही आदर्श बना दिया। दाल उद्योग में यदि वे शीर्ष पर स्थापित हैं, तो समाजसेवा के क्षेत्र में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है। कहते हैं कि ''माहेश्वरी'' में जन्मजात रूप से प्रबंधन व प्रशासन की क्षमता विद्यमान रहती है। इन्हीं पंक्तियों को अपनी कुशल प्रशासनिक क्षमताओं से साकार कर रहे हैं, इंदौर निवासी आईएएस श्री गोपाल डाड। श्री डाड अपने कार्यकाल में जिस पद पर भी रहे अपने विशिष्ट छाप वहाँ छोड़े बिना नहीं रहे। उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ महाकुम्भ 2016 में आपने अतिरिक्त मेला अधिकारी के रूप में इस तरह अपने दायित्व का निर्वहन किया कि उसे देखते हुए सेवानिवृत्ति के बाद आगामी सिंहस्थ महाकुम्भ 2028 की जिम्मेदारी भी आपको ही सौंपी गई है। इसके लिये आपको विशेष कर्त्तव्य अधिकारी का दायित्व प्रदान किया गया है, जिसमें श्री डाड समस्त जानकारी सीधे मुख्यमंत्री को प्रदान करते हैं।

गरिमामय सम्मान ''श्री माहेश्वरी ऑफ द ईयर'' ग्रहण करने वाली इन विभूतियों के प्रेरक आलेख भी इस विशेषांक में समाहित है। आशा है कि प्रबुद्ध पाठकों को यह विशेषांक भी अवश्य ही प्रेरणीय व संग्रहणीय लगेगा। अपने प्रतिक्रियाओं से अवश्य ही अवगत करवाऐं।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

योग शिक्षक के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रो. विवेक माहेश्वरी वर्तमान में लकुलिश योग विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुज.) के कुलपति के रूप में अपनी विशिष्ट सेवा दे रहे हैं। वर्तमान में आप सपरिवार माता-पिता सहित गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार में निवासरत हैं। आपका जन्म 30 जनवरी 1979 को जावरा (म.प्र.) में श्री जगदीश माहेश्वरी एवं श्रीमती आशा माहेश्वरी के यहाँ हुआ था। आपने एम.ए. मनोविज्ञान के बाद एम.ए. योगा तथा पी.एचडी. योग साइकोलॉजी तक शिक्षा ग्रहण की। वर्तमान दायित्व के पूर्व आप जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं (राज.) तथा देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार में भी कार्यरत रहे हैं। शोध के क्षेत्र में आपके 50 शोधालेख प्रकाशित हो चुके हैं और 10 पीएच.डी. शोधार्थियों का आपने निर्देशन किया है। आपकी धर्मपत्नी गायत्री माहेश्वरी भी पारिवारिक दायित्व का सफल निर्वहन कर रही हैं।

मन के हारे हार है...

हमारे जीवन के दो मूलभूत आधार हैं – शरीर और मन । हम सभी अपने शरीर को ही स्वस्थ रखकर अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं, परंतु उस क्षण हम भूल जाते हैं कि शरीर की अपनी सीमा है। जब तक शरीर में ऊर्जा होगी तब तक वह अपना काम करेगा और फिर ऊर्जा समाप्त होने पर हमें उसे आराम देना होगा। जब हम जीवन के दूसरे मूलभूत आधार अर्थात मन पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं तब हमें यह अहसास होता है कि मन की शक्ति असीमित है और हम सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। लेकिन समस्या इस बात की है कि मन पर पहुँचा कैसे जाए और मन में विचारों की जो उधेड़-बुन चल रही है उसे कैसे दूर किया जाए या कैसे अपने मन को कंट्रोल किया जाए? इस मन को कंट्रोल करने के लिए मन के साथ जिद करनी पड़ेगी, मन के साथ जबरदस्ती करनी पड़ेगी, मन जाएगा और फिर वापिस खींचकर आपको लाना पड़ेगा।

इस आलेख में तीन बिंदुओं पर चर्चा करने का मन है, यदि इन बिंदुओं को हम अपने जीवन में प्रैक्टिस करें तो हम अपने मन पर लगाम लगा सकते हैं। पहला बिन्दु है - आप किसी भी जगह पर बैठे। किसी भी जगह का मतलब है कि आप घर पर बैठ सकते हैं, आप गार्डन में बैठ सकते हैं, आप अपने ऑफिस में बैठ सकते हैं लेकिन थोड़ी सी शांत जगह हो और अपनी आंखों को बंद करें और अपनी आंखों को कम से कम 10 से 15 मिनट तक बंद रखें और इस प्रक्रिया को 24 घंटे में एक बार अवश्य करें। प्रारंभ में जब आप अपनी आंखों को बंद रखेंगे तो आपको अपनी आंखों को खोलने की इच्छा होगी, आपको अंदर से लगेगा कि मुझे कुछ तकलीफ हो रही है, आपके मन में विचार आएंगे-जाएंगे। जब हम आंखों को बंद करते हैं तब बाहर के संसार से कट जाते हैं और अंदर के संसार की ओर धीरे धीरे यात्रा करना शुरू करते हैं। शुरुआत में बहुत दिक्कत आएगी, शुरुआत में आपको लगेगा कि आप कुछ गलत काम कर रहे हैं, आप अपने शरीर से बहुत जबरदस्ती कर रहे हैं परंतु आपको यह करना पड़ेगा।

अब दूसरा बिन्दु है कि आपको आसनों का अभ्यास करना पड़ेगा। मन को नियंत्रित करने के लिए हमें शरीर को माध्यम बनाना पड़ेगा। हमें शरीर को स्थिरता प्रदान करनी पड़ेगी और जब शरीर में स्थिरता आएगी तब मन स्वतः ही स्थिर हो जाएगा। शरीर में स्थिरता लाने के लिए तीन आसन बहुत जरूरी है। इन तीन आसनों का प्रयोग या तीन आसन का अभ्यास हम सबको करना चाहिए। पहला आसन है – ताड़ासन, जो खड़े होकर किया जाता है, दूसरा आसन है – वृक्षासन, वह भी खड़े होकर किया जाता है और तीसरा आसन है पद्मासन, जिसे हम बैठकर करते हैं। यदि इन तीन आसनों का अभ्यास किया जाए तो ये तीन आसन शरीर में फ्लैक्सिबिलिटी और स्थिरता लाएंगे।

तीसरा बिन्दु है विचारों की उथल-पुथल को रोकना। हम अपने 24 घंटों पर दृष्टि डालें तो तो एक दिन में लगभग 60,000 विचार हमारे मन में आते हैं। हम यदि अपने विचारों को नियंत्रित कर लें, हम उन विचारों की उथल-पुथल को शांत कर लें तो मन शांत होगा और मन के शांत होने से ही हम उस मन पर लगाम लगा सकेंगे, उस पर काबू पा सकेंगे। विचारों की उथल-पुथल को रोकने का सबसे अच्छा माध्यम है अपनी सांसो पर ध्यान केंद्रित करना। जब आप सांस लें और सांस छोड़े तो इस पर अपना ध्यान केंद्रित करें और जब आप इस पर ध्यान केंद्रित करेंगे तो आपको लगेगा कि जब आप सांस लेते हैं तो आपका पेट फूल जाता है और श्वास छोड़ते हैं तो आपका पेट सिकुड़ता है। अपने अंदर की आंखों से आप अपनी सांसो पर ध्यान केंद्रित करेंगे तो धीरे-धीरे आपकी श्वास लंबी होती जाएगी। योग के अभ्यास में यह कहा जाता है कि जब स्वास लंबी होती है तो विचारों की उथल-पुथल कम होती है। यदि विचारों की उथल-पुथल कम होगी तो नकारात्मकता में भी कमी आएगी। नकारात्मकता कम होगी तो हमें मन को नियंत्रित करने में बहुत आसानी होगी। यह तीन बिन्दु या तीन तरीके किसी के भी मन को नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

प्रोफेसर विवेक माहेश्वरी
कुलपति-लकुलिश योग विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)
अतिथि सम्पादक

टीम SMT

श्री आसावरी माताजी

श्री आसावरी माताजी माहेश्वरी जाति की असावा खाँप की कुलदेवी हैं। स्थानीय निवासी भी इनके प्रति आगाध श्रद्धा रखते हैं।

श्री आसावरी माताजी का मंदिर राजस्थान के नागोर जिले में ग्राम शंखवास से 10 कि. मी. दूर स्थित आसावरी ग्राम में है। मान्यताओं के अनुसार माताजी की प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन है। वैसे इसके बारे में विस्तृत जानकारी नहीं है।

पूजन-उत्सव

मन्दिर में नित्य तीन समय पूजन होती है। श्रद्धालु अपनी परम्परानुसार माताजी को भोग लगाते हैं। नवरात्रि के दौरान यहाँ विशिष्ट आयोजन होते हैं।

कहाँ ठहरें

छोटा स्थान होने के बावजूद सर्व सुविधायुक्त माहेश्वरी भवन एवं कलंत्री भवन दो स्थानों पर हैं। इसके अतिरिक्त स्थानीय निवासियों के लम्बे-चौड़े आवास भी हैं। दोनों भवनों में वर्तमान में निजी सेकण्डरी स्तरीय विद्यालय संचालित हो रहे हैं।

प्रमुख शहरों से दूरी

मारवाड़ मूण्डवा- 22 कि.मी.
मेड़ता सिटी-40 कि.मी.
नागौर-40 कि.मी.
खींमसर- 40 कि.मी.
जोधपुर- 105 कि.मी.
अजमेर- 155 कि.मी.
जयपुर- 360 कि.मी.

कैसे पहुंचे

अजमेर से मेड़ता रोड़ (75 कि.मी.) आकर सीधे शंखवास (40 कि.मी.) सड़क मार्ग से भी जाया जा सकता है।

रितेश ईनाणी पुनः बने इंदौर हाईकोर्ट बार एसोसिएशन अध्यक्ष

इंदौर। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के इस वर्ष के चुनाव में रितेश ईनाणी पुनः अध्यक्ष चुने गए हैं। ईनाणी इस पद पर निर्वाचित होने वाले सबसे कम उम्र के अधिवक्ता हैं।

देर रात घोषित हुए चुनाव परिणाम में इंदौर हायकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रितेश ईनाणी चुने गए। 48 वर्षीय रितेश ईनाणी बागली के एडवोकेट परिवार के रूप में जाने वाले ईनाणी परिवार से हैं। आपके दादा रामगोपाल ईनाणी ख्यात अधिवक्ता थे तथा पिता राजेंद्र ईनाणी (माहेश्वरी पश्चिमांचल म.प्र. माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष) भी वरिष्ठ अधिवक्ता हैं। 18 दिसम्बर बुधवार को हुई मतगणना शाम 6 बजे से रात 11:30 बजे तक चली। इससे पहले इंदौर हायकोर्ट बार एसोसिएशन के चुनाव का मतदान कड़ी सुरक्षा के बीच कराया गया। इसमें श्री ईनाणी को सर्वाधिक 485 मत प्राप्त हुए। उनके प्रतिद्वंद्वी अमित उपाध्याय 354, अनिल औझा 305, हितेन्द्र मेहता 242 तथा सूरज शर्मा 224 मत ही प्राप्त कर सके। उल्लेखनीय है कि श्री ईनानी श्री माहेश्वरी टाईम्स सम्पादक पुष्कर बाहेती तथा शैलेंद्र राठी के मामाजी के सुपुत्र हैं।

बियाणी का किया सम्मान

कल्याण (मुंबई)। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य एवं तेलंगाना-आंध्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के प्रचार मंत्री श्याम सुन्दर बियाणी का सम्मान कल्याण माहेश्वरी समाज की ओर से किया गया। इस अवसर पर महेश पदपेड़ी के सदस्य दिनेश सोमाणी, भँवरलाल मोदाणी, चंद्रकांत लाहोटी, प्रकाश भराड़िया, पुरुषोत्तम राण्दड़, दामोदर काबरा, संजय असावा, राकेश सोमाणी, उमेश मंत्री, कमल मोदाणी, राधेश्याम काबरा, मनीष मानधने, किशोल बिड़ला, सुनील दरक आदि उपस्थित थे।

महेश अन्न सेवा का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज द्वारा सत्र 2022-25 में आरंभ की गई ''महेश अन्न सेवा'' का आयोजन वर्षपर्यन्त किया जा रहा है। इसी क्रम में गत 13 दिसम्बर को जे.के.लॉन हॉस्पिटल के बाहर लगाए गए सेवा केंद्र पर लगभग 500 जरूरतमंद लोगों को भोजन प्रसादी एवं मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर कैलाश नारायण माहेश्वरी, संयोजक शंकर लाल लद्ढ़ा, सुधा माहेश्वरी, श्रुति माहेश्वरी, मनीष मैनाना, जितेश लद्ढ़ा, श्याम भण्डारी, परशुराम बागड़ी सहित समाज के कई गणमान्य व प्रबुद्धजन मौजूद रहे।

स्वयंसिद्ध मेला का हुआ आयोजन

जलगांव। जिला माहेश्वरी महिला संगठन महिला सशक्तिकरण समिति के अंतर्गत स्वयं सिद्ध मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि स्वयं सिद्ध समिति संयोजक प्रदेश संयुक्त सचिव राधा झंवर के हाथो से हुआ। विशिष्ट अतिथि रेखा मूंदड़ा व स्वयं सिद्ध समिति सह संयोजिका, शारदा कास्ट थी। इस बार आयोजकों ने कपड़े, गहने, आभूषण, घर की सजावट की सामग्री और विशेष भोजन के लिए स्टॉल लगाने का प्रयास किया है। माहेश्वरी समाज के प्रदेश उपाध्यक्ष केदार मूंदड़ा, जिला अध्यक्ष बीजे लाठी, जिला सचिव योगेश कलंत्री, तहसील सभा सचिव मंजू लाठी आदि ने इस मेले का भ्रमण किया। जिला माहेश्वरी संगठन की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। अध्यक्ष सुमती नवल, सचिव मनीषा तोतला, संयोजक ममता राठी आदि का सहयोग रहा।

युगल रात्रिभोज का आयोजन

उदयपुर (राज.)। महेतारी महिला गौरव माहेश्वरी महिला गौरव हास छावारा ने एक निजी रिसेप्शन में युगल रात्रिभोज का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन कौशल्या गट्टानी एवं आशा नाराणीवाल की अध्यक्षता में बाय-बाय 2024 की थीम पर किया गया। सचिव सीमा लाहोटी ने बताया कि महिलाएं लाल साड़ी और पुरुष काली पोशाक में आए। कौशल्या माहेश्वरी और रेखा असला ने 'डाइस नचलाओ गेम खेलो' कार्यक्रम की मेजबानी की। विजेता टीम को पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर निर्मला काबरा, वीणा मोहता, राजकुमारी, रीमा, अध्यक्ष मंजू गांधी आदि विशेष रूप से उपस्थित थीं।

संस्कृत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सफलता

वड़ोदरा। महाकाल नगरी उज्जैन में आयोजित विश्व गीता प्रतिष्ठान महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ मध्य प्रदेश शासन सांस्कृतिक विभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में काबरा फाउंडेशन द्वारा संचालित श्री स्वामी गोविंद देवगिरि वेद संस्कृत महाविद्यालय वाघोडिया वडोदरा के छात्रों ने विविध विषयों पर हिंदी एवं संस्कृत की व्याख्यान प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की। गुजरात की संस्कार नगरी वडोदरा के समीप वाघोडिया में वैदिक संस्कृति के संरक्षण एवं संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार हेतु काबरा फाउंडेशन द्वारा सन 2016 में श्री स्वामी गोविंद देवगिरी वेद संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई। इसके संरक्षक ख्यात उद्यमी त्रिभुवन प्रसाद काबरा हैं। इस महाविद्यालय में सामवेद एवं यजुर्वेद की मौखिक शिक्षा गुजरात माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक बोर्ड गांधीनगर संस्कृत माध्यम एवं श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय वेरावल से शास्त्री (BA) तक छात्र निःशुल्क आवास व्यवस्था के साथ प्राप्त कर रहे हैं। महाविद्यालय के संरक्षक त्रिभुवन प्रसाद काबरा ने सभी छात्रों को एवं अध्यापकों को शुभकामनाएं प्रदान की। इस प्रतियोगिता में हिंदी संभाषण में नीलेश जोशी (प्रथम) तथा अलख योगी (तृतीय), संस्कृत संभाषण में अलख योगी (प्रथम) तथा संस्कृत निबंध लेखन में प्रियांशु शर्मा द्वितीय रहे।

'कोयंबटूर विझा' परेड में किया प्रदर्शन

कोयंबटूर। माहेश्वरी युवा परिषद एंव सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में समाज के विभिन्न सदस्यो ने कोयंबटूर दिवस के अवसर पर आयोजित किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम 'कोयंबटूर विझा' परेड में गत 24 नवम्बर को भाग लिया। कार्यक्रम में कोयंबटूर के विभिन्न समाज एवं समुदाय के नागरिकों ने भाग लेते हुए अपने-अपने समुदाय की सांस्कृतिक पहचान की झलक दिखलाते हुए परेड में प्रस्तुतिया दीं। इसी क्रम में सांस्कृतिक समिति, माहेश्वरी सभा कोयंबटूर की टीम ने राजस्थानी वेश-भूषा के पहनावे के साथ गणगौर की सवारी निकाली एंव राजस्थानी गीत-नृत्य जैसे घुमर, गंवई, फाग, गरबा आदि की प्रस्तुति दी। माहेश्वरी समाज की ओर से भाग लेने वाले में सुरभि महिला मंडल सचिव अनु कांकाणी, सदस्या उर्मिला कांकाणी, सांस्कृतिक समिति एंव सभा सदस्य नीतु मण्डोवरा, गोविंद मण्डोवरा, अनुराग माहेश्वरी, यश मण्डोवरा, अनुपमा मण्डोवरा, अमित मण्डोवरा, सुरेश मालाणी, यश मालाणी, कार्तिक-हर्षित मण्डोवरा, ज्योति मालाणी, किरण मालाणी, विष्णु लोया आदि शामिल थी।

श्री सेवल्या-माताजी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बागोर। माहेश्वरी-समाज की सोनी-कोठारी खाप की कुल देवीजी श्री सेवल्या-माताजी का 19वां रात्रि-जागरण एवं वार्षिकोत्सव भजन सन्ध्या के साथ शुरु हुआ। अगले दिन कार्य समिति की बैठक अध्यक्ष कैलाश कोठारी की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिसमें कोषाध्यक्ष रामजस सोनी ने आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। बैठक में श्री सेवल्यामाताजी की कृपा पात्री श्रीमती सुनीता, जीतू कोठारी बडोदा, दिलीप अनिल औरंगाबाद, बालमुकुंद सोनी बागोर, मनोज कोठारी सूरत, मनोज सोनी भोपाल, ओम सोनी जोरहट आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर उमेश गिरधारीलाल सोनी जयपुर एवं किशोर श्रीनिवास सोनी खेल अमरावती, अशोक सोनी मणीरत्न रिसोर्ट अमरावती वाले सेवल्या-कुन्ज के 1-1 लाख रुपये के ट्रस्टी बने।

अक्सर सुना जाता है कि दुनिया बदल गई है। क्या बदला है? जमाने में मिर्ची ने अपनी तिखास नहीं बदली, आम में अपनी मिठास नहीं बदली, फलों ने अपना हरा रंग नहीं बदला, बदला है तो इंसानों ने अपनी इंसानियत और दोष देता है पूरी दुनिया को।

करवा होस्टल में छात्रवृत्ति पुरस्कार कार्यक्रम

नईदिल्ली। गत 17 नवम्बर को ए बी माहेश्वरी एजुकेशनल ट्रस्ट, द्वारा संचालित जयचन्दलाल करवा माहेश्वरी (JCKM) हॉस्टल, पटेल नगर, नईदिल्ली में छात्रवृत्ति पुरस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंच पर मुख्य अतिथि के रूप में सुरेशचन्द लाहौटी (हैदराबाद) एवं दीपक करवा (IAS) उपस्थित थे। इनके साथ ए बी माहेश्वरी एजुकेशनल ट्रस्ट के चेयरमैन नंदकिशोर करवा, प्रबंध न्यासी ब्रजमोहन राठी, कोषाध्यक्ष गौरीशंकर लड्ढा और सचिव राजीव मरदा आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में 30 से अधिक गणमान्य अतिथि, दानदाता, अधिकारीगण, नेक्स्ट आईएस (NEXT IAS) संस्था के अधिकारीगण एवं 50 से अधिक विद्यार्थी उपस्थित थे। निलेश करवा ने छात्रवृत्ति प्रबंध समिति व दानदाताओं का आभार व्यक्त किया एवं छात्रवृत्ति कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि वर्ष 2023 में आयोजित छात्रवृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत 13.2 लाख रुपये की राशि दी गयी एवं वर्ष 2024 में 25 लाख की राशि का प्रबंध किया गया। इसमें हैदराबाद के रायसाहब पन्नालाल हीरालाल लाहोटी ट्रस्ट द्वारा 11 लाख तथा 14 अन्य दानदाताओं द्वारा 1-1 लाख की राशि प्रदान की गई। समिति द्वारा छात्रवृत्ति के प्राप्त आवेदनों का नेक्स्ट आईएस (NEXT IAS) संस्था द्वारा स्कॉलरशिप टेस्ट लिया गया, जिसके पश्चात आवेदन पत्र के आंकलन और इंटरव्यू के आधार पर चयनित 27 छात्रों को 12.8 लाख रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त UPSC Mains परीक्षा तक पहुंचे 31 छात्रों को 8.6 लाख रुपए का वितरण किया गया। कुल में 58 उम्मीदवारों को 21.41 लाख का सहयोग दिया गया जिसमे से 25प्रतिशत राशि छात्राओं को प्रदान की गई।

CYBER SECURITY
Net Protector
NP AV
Total Security
Ransom ware Shield
PC, Laptop Tablet, Mobile
सुरक्षा
80.550.67.012
92.72.70.70.50
Z SECURITY

सही उम्र में विवाह पर मिलेंगे 1 लाख

जालना। लड़कियों के विवाह में होने वाली देरी समाज के लिए चिंता का विषय है। लड़की का विवाह सही उम्र में हो इस उद्देश्य से समाज में जागरूकता लाने का प्रयास माहेश्वरी विवाह समिति जालना द्वारा किया जा रहा है। इसके लिए इस समिति ने लाडली बेटी सम्मान योजना बनाई है। जो माँ-बाप अपनी लाडली बिटिया का विवाह सही उम्र में करेंगे, ऐसे आदर्श माँ-बाप तथा उस सौभाग्यशाली बेटी का यह समिति सम्मान करेगी व उनको एक लाख रुपये की सम्मान राशि भी देगी। इस योजना का शुभारंभ अ. भा. मा. महासभा के सभापति संदीप काबरा के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र प्रदेश मा. सभा के अध्यक्ष मधुसूदन गांधी, मंत्री सत्यनारायण सारडा, संगठन मंत्री एडवोकेट चिरंजीलाल दागड़िया, संयुक्त मंत्री नंदकिशोर तोतला, महासभा के कार्यसमिति सदस्य रामनिवास मानधनी, विवाह समिति के अध्यक्ष कांतिलाल राठी व सचिव सुनील बियानी उपस्थित थे। इस योजना के अंतर्गत अपनी बेटी का विवाह 21 वर्ष से कम आयु में करने वाले माता-पिता का सम्मान कर उनको एक लाख रुपये, 24 वर्ष से कम आयु में विवाह करने पर इकतीस हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी। पहले वर्ष यह योजना मराठवाड़ा के आठ जिलों के लिए लागू की गई है। अगले वर्ष यह योजना पूरे महाराष्ट्र में लागू की जायगी।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

कोयम्बटूर। माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी युवा परिषद एवं सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति विगत माह में सम्पन्न हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत सभा के विभिन्न सदस्यों ने रामलीला के प्रमुख प्रसंगो की अद्भुत एवं आकर्षक प्रस्तुति दी। इसमें सीता स्वयंवर, केकैयी मंथरा प्रसंग, राम वनवास, सीता हरण, लंका दहन, अयोध्या आगमन, राम का राजतिलक एवं राजदरबार प्रमुख थे। समाज के लगभग 200 से ज्यादा सदस्यों ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर रामलीला देखने का आनंद लिया एवं कलाकारो के प्रस्तुतिकरण की सराहना की। रंगारंग रास कार्यक्रम एवं भावपूर्ण रामलीला की सभी समाज के दर्शको ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में सभी ने स्वादिष्ट व्यंजनो का आनंद लिया।

रचित बने न्यायाधीश

भीलवाड़ा। समाज सदस्य पवन-विनती तापड़िया के सुपुत्र रचित का हरियाणा प्रदेश की न्यायिक सेवा में चयन हो गया है। वे अब हरियाणा प्रदेश में न्यायाधीश के पद पर नियुक्त हुए हैं। श्री रचित ने जयचंदलाल होस्टल से अपनी पूरी तैयारी की। श्री रचित को होस्टल प्रोग्राम से मुख्य स्कॉलरशिप भी प्राप्त हुई। उल्लेखनीय है कि रचित के बड़े भाई कार्तिक तापड़िया भी जज हैं व दिल्ली साकेत कोर्ट में सिविल जज के पद पर नियुक्त हैं।

आगीवाल बने नोटरी

जयपुर। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष रामअवतार बसंतीलाल गुप्ता (आगीवाल) को भारत सरकार ने अगले पांच वर्षों तक नोटरी अधिकृत किया है। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा द्वारा इस नियुक्ति पर हर्ष व्यक्त किया गया।

राठी बने पर्यावरण दूत

जलगांव। नगर निगम ने पर्यावरण क्षेत्र में काम करने वाले सदस्यों का पर्यावरण प्रतिनिधिमंडल के लिए का चयन किया है। इसमें गांधी रिसर्च फाउंडेशन के सहयोगी एवं जयपुर के जिला संगठन एवं सड़कों के प्रतिनिधि मदन रामनाथ लाठी को पर्यावरण दूत नियुक्त किया गया है।

सुंदरता हमेशा अच्छी नहीं होती, लेकिन अच्छाई हमेशा सुंदर होती है। महत्वपूर्ण होना हमेशा अच्छा नहीं होता, लेकिन अच्छा होना हमेशा महत्वपूर्ण होता है।

माहेश्वरी सभा की साधारण सभा

कोयम्बटूर। माहेश्वरी सभा की 31वी वार्षिक साधारण सभा माहेश्वरी भवन कोयम्बटूर में अध्यक्ष गोपाल माहेश्वरी, सचिव संतोष मूंदड़ा, कोषाध्यक्ष दामोदर प्रसाद सोमानी, सहसचिव प्रदीप करनाणी, समिति सदस्य विष्णु कांकाणी, ओमप्रकाश चंडक, गिरीराज चंडक के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। सभा की शुरुआत में दिवंगत वयोवृद्ध सदस्य स्व. श्री नेमीचंद कांकाणी को मरणोपरांत श्रद्धांजली दी गई। तत्पश्चात सभा में गत वर्ष का हिसाब एवं आडिट रिपोर्ट कोषाध्यक्ष दामोदर प्रसाद सोमानी ने रखी एवं पास की गई। सहसचिव प्रदीप करणाणी ने गत वर्ष की साधारण सभा की रिपोर्ट प्रस्तुत की। सचिव संतोष मूंदड़ा ने वार्षिक गतिविधियों की जानकारी दी। युवा मंडल की वार्षिक रिपोर्ट युवा मंडल सहसचिव श्री सोमाणी ने रखी। सुरभि महिला मंडल की वार्षिक रिपोर्ट सहसचिव निर्मला कांकाणी एवं सुनीता करणाणी ने रखी।

प्रदेशाध्यक्ष का सूरतगढ प्रवास

गंगानगर। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशाध्यक्ष जुगलकिशोर सोमाणी अपने निजी कार्य से गत 12 दिसम्बर 2024 को गंगानगर जिले के सूरतगढ शहर गए थे। शहर के समाजजनों को ज्ञात होते ही एक बैठक का आयोजन किया गया। उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशमंत्री पवन सोमाणी ने परिचय देते हुए जुगलकिशोर सोमाणी और छोटे भाई दिलीप सोमाणी का दुपट्टा ओढ़ाकर भावभीना स्वागत किया। इस आपसी मिलन पर स्थानीय बन्धुओं के साथ महासभा की गतिविधियों और प्रेरित ट्रस्टों के बारे में गहन विचार-विमर्श हुआ। विभिन्न ट्रस्टों की नई योजनाओं की जानकारियाँ साझा की गई। कुछ सदस्यों ने ट्रस्टों द्वारा स्वीकृति देने के विलम्ब की बातें कही गई। पवन सोमाणी, भंवरलाल चाण्डक, दीपू कोठारी, द्वारकाप्रसाद लखोटिया, हेमंत चाण्डक, मधुसूदन सारड़ा, ओमप्रकाश राठी, राजीव मून्दड़ा, सत्यनारायण झंवर, श्यामसुन्दर सोमाणी आदि इस अवसर पर उपस्थित थे।

तीखा गुस्सा नमकीन आंसू और मीठी मुस्कान इन तीनों के स्वाद से बनी है एक रेसिपी जिसका नाम है जिंदगी।

कोविद ने दिखाई अपनी प्रतिभा

नागपुर। कोविद सुपुत्र रचना-महेश बुब ने वर्ष 2024 में गणित और विज्ञान की कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इसके अंतर्गत अमेरिकन मैथेमेटिक्स परीक्षा में स्वर्ण पदक, सिंगापुर-एशियन मेथेमेटिक्स परीक्षा में रजत पदक तथा वांदा साईंस परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके साथ RMO (एक ऐसी परीक्षा जो असाधारण गणितीय प्रतिभा वाले छात्रों की पहचान और उनके विकास के लिए आयोजित की जाती है) में भी उत्कृष्टता प्राप्त की।

एकादशी पर श्री श्याम बाबा के भजन

कोयंबटूर। माहेश्वरी सभा के समिति सदस्य गिरीराज चांडक व मिनाक्षी चांडक एवं परिवार द्वारा श्री श्याम परिवार, कोयंबटूर के तत्वाधान में श्याम बाबा के कीर्तन एवं भजनों का आयोजन गत 11 दिसंबर मोक्ष एकादशी पर श्री श्याम दरबार (श्री शक्ति धाम मंदिर), साईबाबा कॉलोनी, कोयंबटूर में किया गया। कार्यक्रम में 50 से ज्यादा भक्तों ने मधुर भजनो का आनंद लिया। कार्यक्रम में ओमप्रकाश चांडक, लीला चांडक, आशीष चांडक, ममता चांडक, एकांश चांडक, मदन मोहन भुराडिया, आशा भुराडिया, प्रकाश माहेश्वरी, अमित मण्डोवरा, अनुपमा मण्डोवरा, मनोज गग्गड़, सरोज मंत्री, बाबूलाल मंत्री आदि उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर का किया आयोजन

पुणे। चेरिटेबल संस्था सांगवी परिसर महेश मंडल, पुणे द्वारा गत 15 दिसम्बर को कै. लीलाबाई चम्पालालगुगळे की स्मृति में नटसम्राट निळू फुले रंगमन्दिर, सांगवी (पुणे) में 30वें रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 137 रक्तदाताओं ने जीवन-मृत्यु के बीच संघर्षरत लोगों को रक्तदान द्वारा नवजीवन देने के लिये भागीदारी की। शिविर का शुभारंभ संदीप गुगळे, सतीश लोहिया, सत्यनारायण बांगड, निलेश अटल आदि की उपस्थिति में हुआ। जनसेवा रक्तपेढी और पूना हॉस्पिटल की मेडिकल टीमों द्वारा रक्तदान कराया गया। कार्यक्रम में कुलदीपक बजाज, गजानंद बिहाणी, मुकुन्द तापडिया, पंकज टावरी, गणेश चरखा आदि की सराहनीय सेवाएं रही।

रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

उदयपुर। श्रीमती हेमंतबाला मानसिंह कोठारी मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा राजस्थान महिला विद्यालय उदयपुर में आयोजित 11वें रक्तदान शिविर में 58 यूनिट रक्तदान हुआ। शिविर में पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया सहित भाजपा के अनेक पदाधिकारी और माहेश्वरी समाजजनों व युवा आदि ने भाग लिया। इस 11वें शिविर में मुख्य ट्रस्टी एवं पूर्व पार्षद आशीष कोठारी ने सभी रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने ट्रस्ट के इस आयोजन में उल्लेखनीय योगदान के लिए रक्तदाताओं का सम्मान किया। उक्त जानकारी उदयपुर प्रतिनिधि मुरलीधर गट्टानी ने दी।

स्वास्थ्य परीक्षण शिविर सम्पन्न

इंदौर। श्री दक्षिण क्षेत्र माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में क्षेत्र से लगभग 120 सदस्यों ने अपनी शुगर, कोलेस्ट्रॉल, थायराइड, किडनी, लीवर, हार्ट व अन्य प्रकार की जांच करवा कर अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता दिखाई। इस अवसर पर महिला संगठन अध्यक्ष साधना कचोलिया, मंत्री पिंकी काकानी, संयोजक रेखा भूतड़ा, समन्वय रेखा पसारी, उपाध्यक्ष सीमा बेड़िया, कार्यकारिणी सदस्य निशा कचोलिया, रचना माहेश्वरी, पायल भट्टर, प्रमिला भूतड़ा, दीपाली भूतड़ा आदि उपस्थित रहे।

कच्चे कान, शक भरी नजर और कमजोर मन इंसान को अच्छी समृद्धि के बीच भी नर्क का एहसास कराते हैं।

उपलब्धि

अनुष ईनाणी को गोल्ड मेडल

इंदौर। ईनाणी परिवार बागली (देवास) के अनुष पुत्र एडवोकेट अभिषेक-श्वेता ईनाणी ने दिल्ली पब्लिक स्कूल द्वारा आयोजित इन्टर स्कूल बैडमिंटन प्रतियोगिता में भोपाल में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि ये अनुष पश्चिमांचल मप्र माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र ईनाणी के पौत्र हैं।

भामिनी राठी बनी न्यायाधीश

इंदौर। अगर आप खुद पर विश्वास रखते हैं और मेहनत के साथ आगे बढ़ते हैं, तो सफलता आपके कदमों में होती है। इन पंक्तियों को सिद्ध करते हुए इंदौर ग्रामीण जिले के छोटे से स्थान कंपेल के युगल किशोर-सुधा राठी की छोटी बेटी व उज्जैन के समाजसेवी नरेंद्र राठी की भतीजी भामिनी राठी ने हाल ही में छत्तीसगढ़ सिविल जज का इंटरव्यू क्लियर किया। उनके बड़े पापा जस्टिस बी.डी. राठी ने उनके जीवन में गुरु की भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल भामिनी को कानून के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए प्रेरित किया, बल्कि हर कदम पर उनका मार्गदर्शन भी किया।

प्रादेशिक महिला संगठन की बैठक सम्पन्न

अलीराजपुर। पश्चिमी मध्यप्रदेश प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के नवम सत्र की तृतीय बैठक ''अक्षतम'' का आयोजन गत 17 दिसम्बर को अलीराजपुर में किया गया। अतिथियों का स्वागत तुलसी के पौधे दे कर किया गया। जिला अध्यक्ष अनिता कोठारी द्वारा अतिथियों का शाब्दिक स्वागत किया गया। प्रदेश अध्यक्ष ऊषा सोडानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सकारात्मक सोच रखते हुए समाज को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। प्रत्येक शुभ अवसर पर एक छायादार पौधा अवश्य लगाए। उज्जैन में मध्यांचल अधिवेशन अभिप्रेरणा के आय व्यय का ब्यौरा भी पेश किया गया। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला काबरा व मुख्य अतिथि राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला संगठन की सदस्य डिम्पल सोनी आदि ने भी सम्बोधित किया। समाज द्वारा संचालित विभिन्न ट्रस्टों की जानकारी राष्ट्रीय अष्ट सिद्धा समिति प्रभारी डॉ. नम्रता बियानी द्वारा दी गई। प्रदेश सचिव शोभा माहेश्वरी ने सचिवीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया व प्रदेश के 16 जिलों में आयोजित किए गए कार्यक्रम की जानकारी दी। चिंतन सत्र अन्तर्गत ''आओ जीवन की संध्या को खुशनुमा बनाएँ, सांध्य बेला के कुछ पल, नौ निहालो के संग बिताऐं'' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। इस अवसर पर अलीराजपुर सभा जिला अध्यक्ष आदित्य कोठारी, पश्चिमी मध्यप्रदेश युवा संगठन प्रचार मंत्री गोविंद गुप्ता, अलीराजपुर निवृतमान ज़िला महिला संगठन अध्यक्ष शकुंतला कोठारी सहित लगभग 150 गणमान्यजन व महिलाऐं उपस्थित थीं।

बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम संपन्न

भीलवाड़ा। मासिक बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम का माहेश्वरी समाज संपत्ति ट्रस्ट भवन, नागोरी गार्डन, भीलवाड़ा में रमेशचंद्र राठी (जिला मंत्री), घनश्याम मूंदड़ा नारायणगढ़, पवन जागेटिया चित्तौड़गढ़, ओमप्रकाश सोनी अहमदाबाद के आतिथ्य में श्रवण समदानी, ओम प्रकाश सोमानी, सुनील मूंदड़ा, सम्पत माहेश्वरी, ओमप्रकाश मालू, कैलाश सामरिया, राधेश्याम अजमेरा आदि ने दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया। श्रवण समदानी ने बताया कि भीलवाड़ा मुख्यालय के साथ चित्तौड़, उदयपुर, मनासा में शाखाएं सेवारत हैं। ओमप्रकाश सोमानी ने बताया कि अब तक 2106 संबंध हुए हैं, कार्यालय में युवको के 4427 व युवतियों के 7736 कुल 12163 बायोडाटा संजोकर रखे गए है। मुख्य संयोजक सुनील मूंदड़ा, ओम प्रकाश सोमानी, श्रवण समदानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

व्यवसाय पर कार्यशाला का आयोजन

नीमच। एक एंटरप्रिन्योर बनने के लिए आईडिया के साथ साथ रिस्क लेने की क्षमता, प्रॉब्लम सॉल्विंग् एबिलिटी और सिखने का जुनून होना जरूरी है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा द्वारा प्रवर्तित एक विशेष उद्यमिता कार्यक्रम ABMM-INNOVATE, माहेश्वरी स्टार्टअप्स-नवव्यापार सृजन और सहयोग मार्गदर्शन योजना, पर आयोजित कार्यशाला में बोलते हुए उद्यमी हितेश पोरवाल, मुंबई ने उक्त विचार व्यक्त किये। पश्चिमी म प्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अंतर्गत नीमच जिला माहेश्वरी सभा द्वारा देव रेजिडेंसी नीमच के सभागार में 15 दिसंबर को आयोजित कार्यशाला में अंचल के लगभग 150 माहेश्वरी प्रतिभागियों ने सहभागिता की। जिला अध्यक्ष सुनील गगरानी ने स्वागत उद्बोधन दिया। प्रदेश मानद मंत्री अजय झंवर, सेंधवा ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर प्रादेशिक संगठन मंत्री राम तोतला बेटमा, कोषाध्यक्ष प्रेमनारायण मालपानी, सुखेड़ा, आंचलिक उपाध्यक्ष बाबूलाल डागा, आंचलिक संयुक्त सचिव रमेश मूंदड़ा, जिला सचिव अनिल दरक, महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य श्याम समदानी, पूर्व जिलाध्यक्ष सत्यनाराय गगरानी, दिनेश लड़ा, राजकुमार मुछाल, नीमच जिला युवा संगठन अध्यक्ष मोहित सारडा, मंदसौर जिलाध्यक्ष पंकज डागा, सहित अनेक समाजजन एवं युवा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन दीपक मूंदड़ा ने किया, एवं आभार पूर्व जिला सचिव ओमप्रकाश काबरा ने व्यक्त किया।

महेश अन्न सेवा का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा सत्र 2022-25 में आरंभ की गई ''महेश अन्न सेवा'' का आयोजन वर्षपर्यन्त किया जा रहा है। इसी क्रम में गत 19 दिसम्बर को जे. के. लॉन हॉस्पिटल के बाहर लगाए गए सेवा केंद्र पर लगभग 500 जरूरतमंदों को भोजन प्रसादी एवं मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर द्वारका मूंदड़ा, सुनीता मूंदड़ा, वंदना मूंदड़ा, आरव मूंदड़ा, अमायरा मूंदड़ा, वैभव सोमानी, गगन साबू, गौरव जी मूंदड़ा परिवार सहित समाज के गणमान्य व प्रबुद्धजन एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महिला मंडल ने मनाया तुलसी दिवस

रतनगढ़। तुलसी पूजन दिवस साल में 25 दिसंबर को मनाया जाता है। तुलसी पूजन दिवस का धार्मिक महत्व बहुत गहरा है। मान्यता है कि तुलसी के पौधे में देवी लक्ष्मी का वास होता है और उनकी पूजा से भगवान श्री हरि का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस शुभ दिन पर रतनगढ़ माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा अध्यक्ष मंजू देवी लढ़ा की अध्यक्षता में तुलसी पूजन दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को मंत्री जयश्री जाजू ने तुलसी पूजन दिवस के बारे में बताया। कार्यकम में महिला मंडल कोषाध्यक्ष सुनीता झंवर ने तुलसी पूजन को लाभकारी बताकर उसके पूजन पर जोर देने का आव्हान किया। इस कार्यक्रम में पूर्व महिला मंडल अध्यक्ष सरिता चांडक, लादरिया महिला मंडल अध्यक्ष संजू तापड़िया, रितु तापड़िया सहित सर्व समाज के गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन माहेश्वरी युवा मंडल अध्यक्ष पूर्णिमा लढ़ा ने किया।

प्रीती भट्टड़ का सम्मान एवं सुयश

कोयम्बटूर। समाज सदस्या प्रीती-सुरेश भट्टड़, पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस में कानूनी सलाहकार एवं उगाही अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर दक्षिण श्रेत्र में उगाही में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए "Top Performer in South Zone" से सम्मानित किया गया। कानूनी सलाहकार के साथ-साथ वे एक गृहणी, उत्कृष्ट वक्ता एवं कुशल मंच संचालक भी हैं।

माहेश्वरी ग्लोबल स्टार अवॉर्ड 2024

पुणे। सेवा से शताब्दी के पथ पर अग्रसर संस्था माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल, पुणे, शिक्षा प्रसार एवं युवा पीढ़ी के विकास का संकल्प लेकर कार्यरत है। गत वर्ष, एमव्हीपीएम ने स्पोर्ट्स तथा आर्ट्स के गरिमामयी क्षेत्र में समाज के 8 से 22 उम्र के बच्चों को प्रेरणा और प्रोत्साहन देने हेतु एमव्हीपीएम माहेश्वरी ग्लोबल स्टार अवॉर्ड' प्रकल्प शुरू किया गया। इसके अंतर्गत क्रीड़ा एवं कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष उपलब्धि पाने वाले 11 बच्चों को 'एमव्हीपीएम माहेश्वरी ग्लोबल स्टार अवॉर्ड 2023' से सम्मानित किया गया और उन्हें एक लाख की राशि का गोल्ड मेडल और स्मृतिचिह्न प्रदान किया गया। इन होनहार युवाओं के उज्जवल भविष्य के लिए भविष्य में भी सहयोग देने का संस्था का मानस है। इसी श्रंखला में संस्था "माहेश्वरी ग्लोबल स्टार अवार्ड-2024" भी प्रदान करेगी। इच्छुक प्रत्याशी एमव्हीपीएम से गूगल फॉर्म के माध्यम से अपना नामांकन कर और इस अवसर का लाभ उठा सकते हैं।

GLOBAL STAR AWARD

कला एवं क्रीड़ा क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित करनेवाले बालक तथा युवाओं को गौरव पुरस्कार।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल

MVPM Maheshwari

Global Star Awards

आयु ८ - २२ वर्ष (दिसंबर २०२४) तक

छात्रों के पिछले ३ वर्षों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जायेगा।

प्रति विजेता **१ पुरस्कार** स्पोर्ट्स तथा आर्ट्स के कुल मिलाकर **११ विजेताओं** का चयन होगा और प्रति पुरस्कार प्राप्त उम्मीदवार को **१ लाख** की धनराशी एवं **स्मृतिचिन्ह** से सम्मानित किया जाएगा।

नामांकन की अंतिम तारिख - १५ फरवरी २०२५

पुरस्कार वितरण समारोह - मार्च २०२५, पुणे, महाराष्ट्र

For more info watch video on YouTube
https://youtu.be/n9Wj1q2-suk

For registration visit following link
http://surl.li/mkdjtr

maheshwariglobalstars@gmail.com | Rashmi Bhandari - +91 7820951145 | www.mvpm.org

चिकित्सा परामर्श एवं जाँच शिविर सम्पन्न

जयपुर। श्री बांगड माहेश्वरी मेडिकल वेलफेयर सोसायटी की प्रेरणा से जयपुर जिला माहेश्वरी सभा समिति ने जयपुर जिला माहेश्वरी महिला संगठन के सहयोग से राजस्थान हॉस्पिटल मिलाप नगर, टोंक रोड़ जयपुर में 1 दिसम्बर, 2024 को निःशुल्क चिकित्सा परामर्श एवं जाँच शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में हॉस्पिटल में विभिन्न निःशुल्क जाँच से करीब 150 व्यक्तियों लाभान्वित हुए। अस्थमा रोग विशेषज्ञ राजस्थान हॉस्पिटल की निदेशक डॉ. शितु सिंह ने 'अस्थमा एवम् एलर्जी' पर जानकारी दी व इस बीमारी से बचने के उपायों को भी उन्होंने अच्छे से समझाया। जयपुर जिला माहेश्वरी सभा समिति के अध्यक्ष सुरेन्द्र बजाज ने डॉ. शितु सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ. एस.एस. सोनी हड्डी रोग विशेषज्ञ को संयोजक सत्यनारायण मोदानी, डॉ. कैलाश गढ़वाल को गोविन्द परवाल जिला मंत्री, डॉ. मुनीश माहेश्वरी को गोपाल राठी ने स्मृति चिन्ह भेंट किए। इस सफल आयोजन के लिए संयोजक सत्यनारायण मोदानी व टीम के सभी सदस्यों ने योगदान दिया। जयपुर माहेश्वरी समाज अध्यक्ष केदारमल भाला, महामंत्री मनोज मूंदडा, पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष व कार्य समिति सदस्य कैलाश सोनी, जयपुर जिला भूतपूर्व अध्यक्ष नवल किशोर झंवर, महिला मण्डल अध्यक्ष उमा सोमानी, जिला कोषाध्यक्ष राधेश्याम काबरा आदि उपस्थित रहे।

माहेश्वरी को प्रेसिडेंशियल मेडल

कोटा। लायंस क्लब कोटा सेंट्रल PDG MJF विशाल माहेश्वरी को अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष फेबरियो ओलिविया द्वारा लायंस जगत में दिये गये योगदान हेतु प्रेसिडेंशियल मेडल से उदयपुर में आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

विशेष बैठक एवं परिचर्चा का आयोजन

सूरत। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारियों के स्वागत एवं संवाद हेतु एक विशेष बैठक एवं परिचर्चा का आयोजन श्री माहेश्वरी सेवा सदन, पर्वत पाटिया में किया गया। संगठन की अध्यक्षा वीणा तोषनीवाल ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्षा मंजू बांगड़ ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में संगठन में समर्पण और टीम भावना के साथ कार्य करने के महत्व पर जोर दिया। राष्ट्रीय निवर्तमान अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने संगठन को मजबूत बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं, राष्ट्रीय भूतपूर्व अध्यक्ष सुशीला काबरा ने महिलाओं को सशक्त और समाज में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष किरण लड्ढा, संगठन मंत्री ममता मोदानी, मध्यांचल उपाध्यक्ष उर्मिला कलंत्री एवं अनीता जावंदिया सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहीं। विमला साबू ने स्वस्थ जीवन जीने के महत्वपूर्ण तरीकों पर प्रकाश डाला। संगठन के कार्यों का प्रतिवेदन सचिव प्रतिभा मोलासरिया द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री स्वेता आनंद जाजू ने किया और सांस्कृतिक मंत्री रेखा पोरवाल ने आभार व्यक्त किया।

महिला संगठन की राष्ट्रीय बैठक की तैयारी

नागपुर। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की द्वितीय कार्यकारिणी व षष्टम कार्य समिति बैठक आगामी 10 से 12 जनवरी 2025 को गोयंनका फार्म हाउस नागपुर में आयोजित होगी। इसका आयोजन विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन नागपुर जिला माहेश्वरी महिला संगठन तथा नगर माहेश्वरी महिला समिति नागपुर के आतिथ्य में करेगा। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत गृह उद्योग करने वाली बहनों के लिए औद्योगिक मेला उद्यम वाटिका का आयोजन किया गया है। तत्पश्चात राष्ट्रीय कार्य समिति व कार्यकारीणी बैठक का आयोजन होगा। इसमें कंचन ताई नितिन गडकरी व उद्योगपति सत्यनारायण नुवाल, पुरुषोत्तम मालू, श्याम सोनी (निवर्तमान सभापति महासभा), समाजसेवी रमेश रांदड तथा शरद सोनी (अध्यक्ष राष्ट्रीय युवा संगठन) अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इसमें नारी शक्ति वंदना में पुरस्कारों से भी विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त महिलाओं का सम्मान होगा।

धन को सकत्रित करना सहज है
लेकिन संस्कार सकत्रित करना कठिन है। धन को तो लूटा जा सकता है,
लेकिन संस्कार समर्पण से ही आते हैं।

परिवार–धणी अलंकरण समारोह सम्पन्न

महाराजगंज। माहेश्वरी समाज महाराजगंज द्वारा होटल राजधानी सिद्दीअंबर बाजार में दीपावली स्नेह मिलन के उपलक्ष्य में परिवार–धणी अलंकरण से पारिवारिक सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी परिवार के 65 वर्ष से ऊपर आयु के अभिभावकों का सम्मान किया गया। अध्यक्ष नरेश भूतड़ा ने बताया कि श्रेणिक सोनी और निखिल पंसारी के संयोजन में कार्यक्रम का प्रारंभ महेश वंदना से हुआ। संस्था द्वारा पिछले 5 वर्षों में आयोजित सेवा एवं धार्मिक कार्यों का निवर्तमान अध्यक्ष रामदेव सारडा ने ब्यौरा प्रस्तुत किया। मंत्री श्रीराम नावंदर ने बताया कि महाराजगंज क्षेत्र के वयोवरिष्ठजनों व परिवार का मोतियों की माला एवं स्मृति चिन्ह से स्वागत किया गया। आमंत्रित परिवारों में राजाराम मालपानी, श्रीराम काबरा, गंगानारायण मणियार, रुक्मादेवी भूतड़ा, जवाहरलाल डोडिया, पार्वतीबाई डोडिया, विमला भाई बाहेती, कवि वेणुगोपाल भट्टड़, आदि का सम्मान किया गया। कोषाध्यक्ष महेश साबू ने बताया कि उक्त कार्यक्रम में अतिथि के रूप में प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष कैलाश डालिया, हैदराबाद सिकंदराबाद जिला माहेश्वरी सभा के मंत्री राजेश मालपानी, समाज सेवी विष्णु पंसारी आदि उपस्थित थे। संस्था के परामर्शदाता नंदगोपाल भट्टड़ एवं भगवानभाई पंसारी, उपाध्यक्ष आकाश काकाणी, सह मंत्री रुपेश डोडिया, संगठन मंत्री दीपक भट्टड़, प्रचार मंत्री अंकित मालानी, कार्यकारिणी सदस्य अभिषेक इन्नानी, अभिषेक सारड़ा, आशीष राठी आदि परिवार सहित उपस्थित रहे।

श्रद्धांजलि

श्रीमती नारायणीदेवी डागा

दारव्हा। वरिष्ठ समाज सदस्या नारायणीदेवी अमरचंद डागा (दारव्हा निवासी) का 92 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पुत्र सतीशकुमार डागा (प्रतिष्ठित लेआऊट व्यवसायी) एवं पुत्री बसंती-सुरेशचंद्र केला नासिक सहित पोते, पोती, दोहित्र, दोहित्रि, प्रपोत्र, प्रपोत्री, प्रदोहित्री एवं प्रदोहित्र आदि का भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री गिरधारीसिंह मोहता

बीकानेर। सामाजिक कार्यकर्ता गोपालदास मोहता के पिता श्री गिरधर सिंह मोहता का गत 6 दिसम्बर 2024 को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

मोतियाबिंद जांच शिविर सम्पन्न

रतनगढ़। रतनगढ़ माहेश्वरी सभा ट्रस्ट द्वारा 21वे निःशुल्क मोतियाबिंद जांच व नेत्र लेंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन माहेश्वरी भवन में हुआ। ट्रस्टी व शिविर प्रभारी नरेंद्र झंवर ने बताया कि शिविर में 165 मरीजों की मोतियाबिंद जांच कर 67 मरीजों का चयन नेत्र लैंस प्रत्यारोपण के लिए किया गया। चयनित रोगियों को ऑपरेशन के लिए जयपुर ले जाया गया। वहां उनका ऑपरेशन आधुनिक तकनीक द्वारा बिना टांके के किया गया। माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू लड्ढ़ा, सरिता चांडक, मंजू पेड़ीवाल, चन्दा सोनी, एडवोकेट पूर्णिमा लढ़ा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन किया। इस मौके पर शिविर में शंकरा आई हॉस्पिटल की टीम, माहेश्वरी समाज के महेश जाजू, रामोतार चांडक, एडवोकेट रजनीकांत सोनी, नरेश पेड़ीवाल, दिनेश लाहोटी, रामकिशन चांडक, रमेशचंद्र तापड़िया सहित नगर के कई गणमान्य जन व सैकड़ों मरीज उपस्थित थे।

स्नेह मिलन कार्यक्रम हुआ आयोजित

भीलवाड़ा। मांडल माहेश्वरी सेवा समिति भीलवाड़ा का स्नेह मिलन अध्यक्ष सुरेश चन्द्र बिडला व सचिव राजकुमार मून्दडा के नेतृत्व मे काशीपुरी वकील कॉलोनी माहेश्वरी भवन में आयोजित किया गया। इससे पूर्व समिति द्वारा सेवा कार्य के प्रकल्पों के तहत आज ही कायन हाउस भीलवाड़ा में एक पिकअप गाड़ी हरे चारे का वितरण किया गया है। साथ ही स्नेहमिलन के दौरान समिति द्वारा सेवा कार्य के तहत 4 से 6 बजे तक निःशुल्क बीपी, शुगर जांच शिविर भी आयोजित किया गया। अध्यक्ष सुरेश चन्द्र बिडला ने बताया कि बी पी शुगर की क़रीब 85 सदस्यों की जाँच की गई थी। सायंकाल पर परिवार सहित सभी का स्नेहमिलन व स्नेह भोज का कार्यक्रम आनंद पूर्वक सम्पन्न हुआ। सेवा समिति के संरक्षक नारायण लढ़ा व सत्यनारायण चौधरी व अध्यक्ष सुरेश बिडला के सान्निध्य में भीलवाड़ा ज़िला माहेश्वरी सभा के पदाधिकारियों व नगर क्षेत्रीय सभा के अध्यक्ष व सचिव भी अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

आईसीएआई के चुनाव में जीते अजमेरा

भीलवाड़ा। इंस्टिट्यूट ऑफ़ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ़ इंडिया के वेस्टर्न रीजन के चुनाव में स्व. श्री रामनिवास अजमेरा के सुपोत्र और स्व. श्री महावीर अजमेरा के सुपुत्र भीलवाड़ा ज़िले के ग्राम भोजरास निवासी सीए सौरभ अजमेरा लगातार दूसरी बार विजय हुए। ICAI-WIRC चुनाव में गोवा, गुजरात और महाराष्ट्र राज्य के लगभग 1.5 लाख सीए आते है। श्री अजमेरा पूर्व में इसी झोन से सचिव पद पर चुने गये थे।

ऊनी वस्त्र वितरण अभियान

बूंदी। सामर्थ्य सोसायटी द्वारा झरबालापुरा में बस्तियों में रहने वाले लोगों को ऊनी वस्त्र वितरित कर अभियान की शुरुआत की। सोसायटी अध्यक्ष राशि माहेश्वरी ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से तापमान में गिरावट हुई है, जिससे सर्द मौसम का एहसास होने लगा है। सर्द मौसम को देखते हुए ऊनी वस्त्र वितरण अभियान की शुरुआत की है। कार्यक्रम के दौरान सोसायटी सदस्य अनीशा जैन, नम्रता शुक्ला, आशी अख्तर, शालिनी सोनी आदि उपस्थित रहे हैं।

डॉ. बरखा व आयुष का सम्मान

नागपुर। बडी मारवाड नागपुर द्वारा डॉ. बरखा राठी एवं उनके सुपुत्र आयुष को ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉ. बरखा राठी को डेंटल इम्प्लोंटोलॉजी में फेलोशिप तथा पुत्र आयुष को सीएसई 10वीं की परीक्षा में 97.2% अंक प्राप्त हुए हैं।

कामयाब होने के बाद ही इंसान के असली स्वभाव का पता चलता है। नीच व्यक्ति वह होता है जो पद और प्रतिष्ठा पाने के बाद सबसे पहले उसी को नष्ट करता है जिसकी मदद से वह बड़ा बनता है।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

रतनगढ़। माहेश्वरी सभा ट्रस्ट द्वारा बलदेवप्रसाद व कौशल्या देवी तापड़िया की स्मृति में उनके पुत्र दिनेश तथा मनोज तापड़िया के संयुक्त तत्वावधान में 22वें नि:शुल्क मोतियाबिंद जांच व नेत्र लेंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन माहेश्वरी भवन में हुआ। ट्रस्टी व शिविर प्रभारी नरेंद्र झंवर ने बताया कि शिविर में 126 मरीजों की मोतियाबिंद जांच कर 62 मरीजों का चयन नेत्र लैंस प्रत्यारोपण के लिए किया गया। चयनित रोगियों को ऑपरेशन के लिए जयपुर ले जाया गया। दिनेश तापड़िया, ऋतु तापड़िया, डा. मातीयू रतनगढ़ ब्लाक की प्रधान मोहनी देवी खीचड़ व सरपंच विक्रमपाल, कमलादेवी ने शिविर का शुभारंभ किया। आर्यमन व संजू तापड़िया ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत व अभिनंदन किया। शिविर में शकरा आई हॉस्पिटल की टीम, माहेश्वरी समाज के महेश जाजू, राकेश जाजू, रामोतार चांडक, नरेश पेड़ीवाल, एडवोकेट रजनीकांत सोनी, माहेश्वरी महिला मंडल से मंजू लढ़ा, सरिता चांडक, जयश्री जाजू सहित नगर के कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

आशुतोष बने सीए

हैदराबाद। महाराजगंज माहेश्वरी समाज अध्यक्ष नरेश भूतड़ा एवं मंत्री श्रीराम नावंदर ने बताया कि समाज के वरिष्ठ नंदकिशोर लाहोटी के पौत्र एवं एडवोकेट श्यामसुंदर के सुपुत्र आशुतोष लाहोटी ने सीए फायनल की परीक्षा उत्तीर्ण की। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

खरी-खरी...

तिजोरी लुट रही है शील की
लंपट ख़यालों से

धवल परिधान में लिपटे हुए
अंतस के कालों से

बनी है शुभ्रता शुचिता की जब
पर्याय दुनिया में

अँधेरों से नहीं शिक़वा
शिकायत है उजालों से

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

उद्योग व समाज सेवा आमतौर पर अगल-अलग क्षेत्र माने जाते हैं। लेकिन वास्तव में देखा जाऐ तो ये दोनों क्षेत्र एक जैसे ही हैं। उद्योग में रोजगार प्रदान कर लोगों की अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की जाती है, तो समाजसेवा में जरूरतमंदों को सीधे रूप से । बस जरूरत है तो उद्यमी के अंदर सेवा भावना की। अपनी ऐसी ही सेवा भावना से उद्योग व सेवा का संगम बनकर दोनों ही क्षेत्रों में अपनी अमूल्य सेवा दे रहे हैं, इंदौर निवासी 75 वर्षीय रामअवतार जाजू। स्थिति यह है कि उद्योग जगत उन्हें उद्यमी समझता है तो समाजसेवा का क्षेत्र उन्हें समाजसेवी, जबकि वे तो दोनों ही क्षेत्र में पूर्ण रूप से समर्पित भाव से सेवा दे रहे हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स श्री जाजू की इन्हीं सेवाओं के लिये उन्हें अवार्ड ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2024'' प्रदान करते हुए गौरवान्वित महसूस करती है।

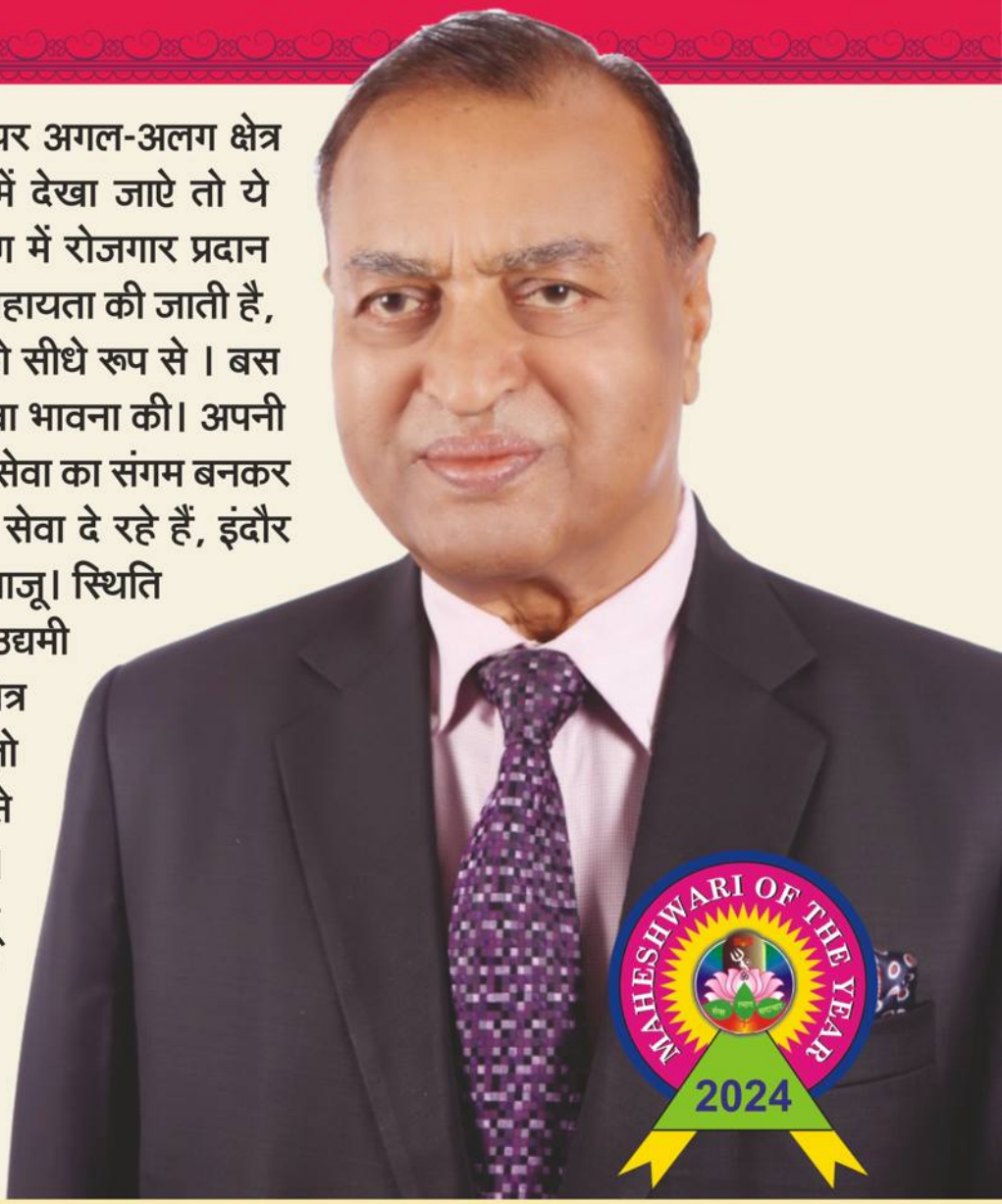

उद्योग और सेवा के 'आदर्श'
रामअवतार जाजू

इंदौर निवासी 75 वर्षीय रामअवतार जाजू सम्पूर्ण देश के माहेश्वरी समाज व उद्योग जगत के दाल उत्पादकों में एक अत्यंत सम्मानजनक नाम हैं। श्री जाजू का जन्म 25 जुलाई 1949 को स्व. श्री जयनारायण जाजू के यहाँ ब्यावर हुआ था। बचपन से प्रतिभावान रहे श्री जाजू ने कॉमर्स स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण की। वह भी ऐसे दौर में जब वे किसी भी अच्छी नौकरी में लग सकते थे, लेकिन अपने पारिवारिक व्यावसायिक आदर्श को शिरोधार्य करते हुए अंततः उन्होंने उद्योग व्यवसाय को ही अपना जीवन बना लिया। लघु स्तर पर प्रारम्भ दाल उत्पादन का उद्योग वर्तमान में अपनी कई शाखाओं के साथ वटवृक्ष का रूप ले चुका है। इसके द्वारा निर्यात को लेकर भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। अपनी इस व्यावसायिक सफलता के बावजूद श्री जाजू समाजसेवा के क्षेत्र में भी प्रारम्भ से ही समर्पित रहे। यही कारण है कि समाजसेवा के क्षेत्र में उनकी ख्याति उद्योग जगत से कम नहीं है।

उद्योग के क्षेत्र में इसी वर्ष एक्सपोर्ट एक्सीलेंस गोल्ड ट्रॉफी

इंदौर की मशहूर कंपनी आदर्श ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड के चैयरमेन रामअवतार जाजू को गत 22 जून 2024 को मुंबई में आयोजित एक भव्य समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल द्वारा फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन की ओर से अवार्ड से नवाजा गया। यह संस्था भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के अन्तर्गत निर्यात संबंधी सुविधाएं और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले निर्यातको को इस पुरुस्कार से पुरस्कृत कर सम्मानित करती है। इसके अंतर्गत श्री जाजू को वर्ष 2020-21 तथा

एक्सपोर्ट एक्सीलेंस गोल्ड ट्रॉफी से जाजू सम्मानित

2021-22 में वेस्ट जोन में सर्वाधिक फोरेक्स अर्निंग अर्थात निर्यात हेतु एक्सपोर्ट एक्सीलेंस अवार्ड गोल्ड ट्राफी से सम्मानित किया जा चुका है।

समाज सेवा में ''भारत गौरव'' सम्मान से अलंकृत

श्री माहेश्वरी समाज जयपुर द्वारा शताब्दी वर्ष अमृत महोत्सव के तहत 58वीं सामूहिक गोठ एवं महेश मेले में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला एवं उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी की उपस्थिति में विद्याधर नगर स्टेडियम में गत 15 सितम्बर 2024 को श्री रामअवतार जाजू को ''माहेश्वरी भारत गौरव'' सम्मान से अलंकृत किया।

''माहेश्वरी भारत गौरव'' सम्मान प्राप्त होने पर श्री रामअवतार जाजू का श्री माहेश्वरी विद्यालय ट्रस्ट इंदौर के बैनर तले सार्वजनिक सम्मान किया गया। इस गरिमामय समारोह की मुख्य अतिथि पूर्व लोकसभा अध्यक्ष, पदम् भूषण सुमित्रा महाजन थी। समारोह में बड़ी संख्या में विशिष्ठजन उपस्थित रहें। समारोह की शुरुआत कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती महाजन, ट्रस्ट अध्यक्ष पुरुषोत्तमदास पसारी, सचिव सी.ए. भरत सारडा समेत ट्रस्ट के उपाध्यक्ष हरीश माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष पवन लड्ढा, सहसचिव अनिल झंवर व श्री पसारी ने स्वागत उद्बोधन में समाजसेवी श्री जाजू की कार्यशैली की प्रशंसा की। निलेश सारडा द्वारा जीवन परिचय व सत्यनारायण मंत्री द्वारा श्री जाजू के सम्मान पत्र का वाचन किया गया। अतिथियों और ट्रस्ट पदाधिकारियों ने अभिनन्दन पत्र भेंट कर पगड़ी पहना कर श्री वेंकटेश देवस्थान के अंगवस्त्र व श्रीफल से श्री जाजू का अभिनंदन किया।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा सम्मानित

1999-2000 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथों विज्ञान भवन नईदिल्ली में राष्ट्रीय निर्यात पुरस्कार प्राप्त करते हुऐ।

'माहेश्वरी भारत गौरव' सम्मान ग्रहण करते हुए

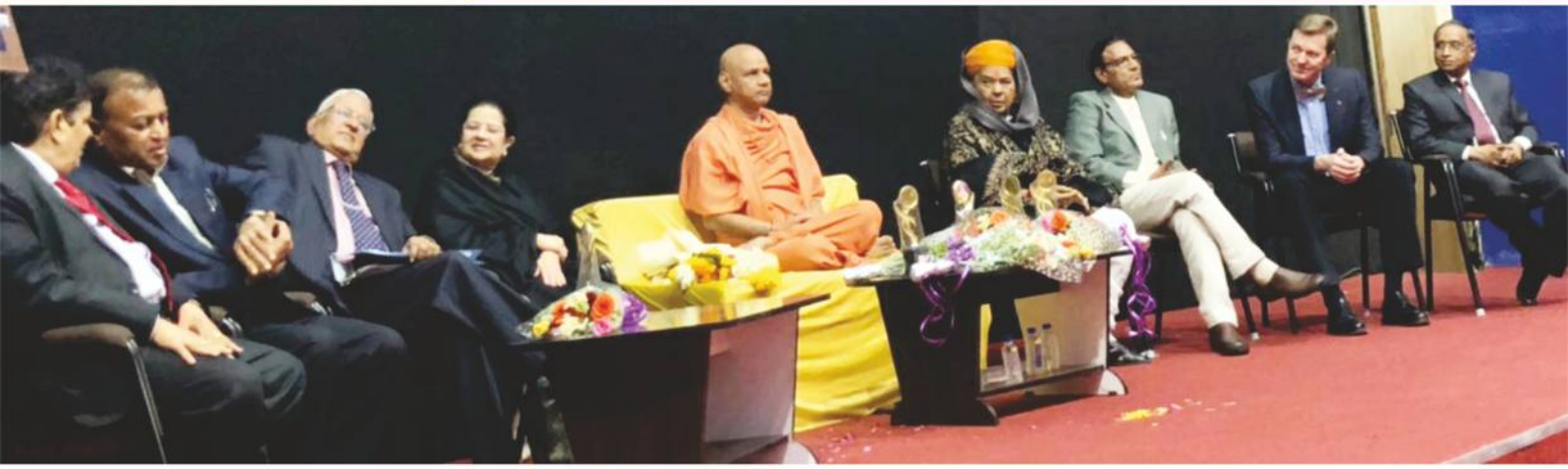

उद्योग जगत में शिखर की सफलता

श्री जाजू ने अपना व्यावसायिक जीवन सन् 1965 में मध्यप्रदेश के इंदौर शहर से प्रारम्भ किया था। इसके 12वें वर्ष सन् 1977 में महाराष्ट्र राज्य के जलगाँव में प्रथम दाल मिल इकाई की स्थापना की। इस व्यवसाय का सफलता पूर्वक नेतृत्व और संचालन करते हुए न केवल दाल मिलों की संख्या में वृद्धि की बल्कि निर्यात के क्षेत्र में भी अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार विश्व के लगभग 40 देशों तक किया। वर्तमान समय में इनकी दाल मिलों की संख्या 7 है। इंदौर, जलगाँव व मुंबई से संचालित इनके व्यवसाय आदर्श ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज को सामूहिक रूप से आदर्श ग्रुप के नाम से जाना जाता है और वे इस ग्रुप के चेयरमेन पद पर आसीन हैं। आदर्श ग्रुप की प्रमुख कंपनी 'आदर्श ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड' भी है, जिसे भारत सरकार द्वारा एक 'निर्यात सदन' के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। इस कंपनी के माध्यम से उच्च गुणवत्ता के खाद्य पदार्थ तथा मसालों आदि का निर्यात भी विश्व के लगभग 40 देशों को किया जाता है। श्री जाजू अनेक विश्व व्यापार सम्मेलनों में भी भाग ले चुके हैं। अपनी इस व्यावसायिक सेवा के लिये श्री जाजू "राष्ट्रीय निर्यात पुरस्कार", "भारतीय उद्योग रत्न", "निर्यात श्री गोल्ड ट्रॉफी", "रजत ट्रॉफी" आदि कई सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं।

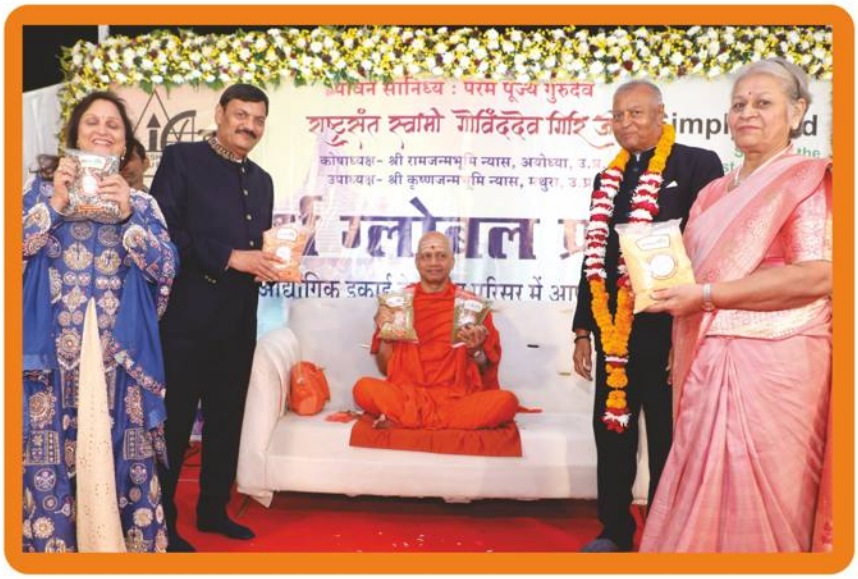

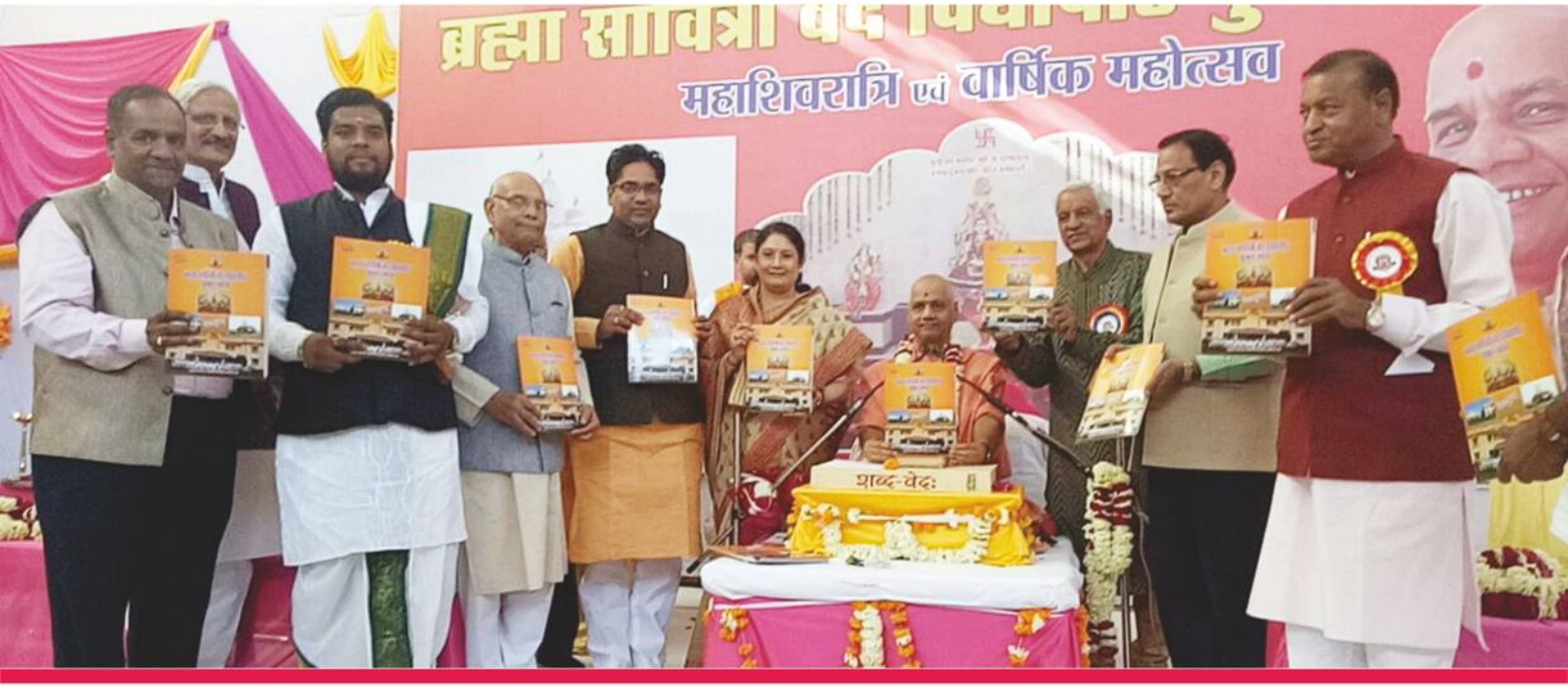

श्री देवी अहिल्या वेद विद्यालय, इन्दौर, का लोकार्पण करते हुए
बिड़ला समूह की प्रमुख राजश्री बिड़ला, गुरूवर स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज एवं सरसंघचालक श्री मोहन भागवत एवं श्री जाजू

सेवा ने दिलाया सम्मान

श्री जाजू अब तक करीब 40 देशों की यात्राएं अनेक बार कर चुके है। इसके साथ कई वर्ल्ड ट्रेड कॉन्फ्रेन्स में भाग लिया एवं कई सरकारी, अर्द्धसरकारी व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डलों का भी विदेशों में प्रतिनिधित्व किया है। अमेरिका सरकार के कृषि मंत्रालय के आमंत्रण पर कृषि आधारित उद्योगो की स्थापना, आयात निर्यात की संभावनाओं एवं अमेरिका के साथ दलहन व्यापार बढ़ाने हेतु अमेरिका की यात्रा भी की है। उनकी इन सेवाओं के फलस्वरूप वर्ष 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 'राष्ट्रीय निर्यात पुरस्कार' सें सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् 'इडियन इकॉनॉमिक डेवलेपमेंट एण्ड रिसर्च एसोसिएशन' नई दिल्ली द्वारा 'भारतीय उद्योग रत्न' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2001 में तत्कालीन वाणिज्य राज्य मंत्री श्री उमर अब्दुला द्वारा 'निर्यात श्री' गोल्ड ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

श्री जाजू धर्मपत्नी पुष्पा जाजू के साथ...

पैतृक रूप से मिली सेवा भावना

आपके पिताश्री ने आज से 56 वर्ष पूर्व ब्यावर में श्री बालमंदिर बालिका विद्यालय की स्थापना की थी, तब से निरंतर संचालित इस विद्यालय की वर्तमान कार्यकारिणी में श्री जाजू मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत सभी समाजों की बालिकाओं की संख्या वर्तमान में 2500 तक पहुंच गई है। इसके साथ ही आपने अपने जीवनकाल में अनेक धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में सक्रियता से योगदान दिया तथा अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष व अन्य पदों पर रहे। आपने कई सार्वजनिक धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजनों में विशेष भूमिका निभाई। अपने पिता स्व. श्री जयनारायण जाजू के पद चिह्नों पर चलते हुए अपने कर्मपथ पर विभिन्न सामाजिक पदों और दायित्वों का समर्पित भाव से निर्वाहन कर रहे हैं। देवी अहिल्या वेद विद्यालय, इन्दौर,

परिवार के मध्य श्री जाजू

आरपीएल माहेश्वरी कॉलेज इंदौर तथा फेण्डस् ऑफ ट्रायबल सोसायटी, इन्दौर चैप्टर के अध्यक्ष हैं। रोटरी क्लब, श्री अहिल्या माता गौशाला इंदौर, समन्वय परिवार इंदौर, ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ पुष्कर, श्री महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान पुणे, श्री भारतीय संस्कृति शिक्षण संस्थान इंदौर आदि कई संस्थाओं से सम्बद्ध होकर अपनी सतत सेवा देते रहे हैं। श्री जाजू ने अपने माता पिता की स्मृति में समाज के छात्रों के उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में ''श्रीमती सीतादेवी जयनारायण जाजू माहेश्वरी छात्रावास'' का निर्माण कर 7 अगस्त 2016 को देश के शीर्ष उद्योगपतियों, राजनेता, पत्रकार एवं समाजसेवियों की उपस्थिति में लोकार्पण करवा कर ए बी माहेश्वरी एज्युकेशनल ट्रस्ट इंदौर को समार्पित किया।

समाज को भी दी सतत सेवा

महासभा के 23 वें सत्र के अर्थमंत्री के रूप में अपनी पहचान रखने वाले श्री जाजू अ.भा. माहेश्वरी महासभा से 20 वें सत्र में कार्यकारी मंडल सदस्य के रूप में सम्बद्ध हुए और 22 वें तथा 24 वें सत्र में भी अपनी सेवा दी। 21 वें, 25 वें, 26वें, 27 वें तथा 28 वें सत्र में कार्य समिति सदस्य रहे। श्री जाजू श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र के संस्थापक सदस्य व ट्रस्टी हैं व वर्ष 1999-2007 तक कोषाध्यक्ष रहे। महासभा के 27 वें सत्र में माहेश्वरी बोर्ड नागपुर के चेयरमेन रहे। ए.बी. माहेश्वरी एजुकेशन एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट व श्री महेश जनसेवा ट्रस्ट इंदौर के चेयरमेन के रूप में भी सेवा दे रहे हैं। बद्रीलाल सोनी माहेश्वरी शिक्षा सहयोग केंद्र भीलवाड़ा व श्री जयनारायण जाजू चेरिटेबल ट्रस्ट जयपुर के प्रबंध न्यासी, श्री माहेश्वरी जनकल्याण ट्रस्ट इंदौर के संस्थापक ट्रस्टी तथा ए.बी. माहेश्वरी एजुकेशन एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट कोटा के सचिव व ट्रस्टी हैं। अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर, श्रीमती केसर बाई सोनी माहेश्वरी छात्रावास मुंबई, श्रीमती लक्ष्मीदेवी बालचंद मोदी बालिका छात्रावास कोटा, श्री रत्नीदेवी काबरा माहेश्वरी महिला सशक्तिकरण ट्रस्ट, म.प्र. पश्चिमांचल माहेश्वरी पारमार्थिक न्यास इंदौर, अ.भा. माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट द्वारिका आदि कई संस्थाओं से भी सम्बद्ध हैं।

सभी को साथ लेकर चलने की सोच

श्री जाजू लंबे समय से अपने व्यवसाय के साथ ही विभिन्न सेवा संस्थाओं को भी नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उनके कुशल प्रबंधन व सबको साथ लेकर चलने के स्वभाव की समाज में मिसाल दी जाती है। हर व्यक्ति को उसके योग्य जिम्मेदारी सौंपते हुए महत्व देना उनके नेतृत्व की विशेषता है। स्वभाव से वे अनुशासन पसंद अवश्य हैं, लेकिन उनका सेवा संस्थाओं में प्रबंधन का तरीका कार्पोरेट ढंग से अत्यधिक कठोर नहीं है। वे सभी के विचार जानकर चलना पसंद करते हैं। समाज में श्री जाजू की विशिष्ट छवि पद्मश्री बंशीलाल राठी की तरह ''कलेक्शन मास्टर'' के रूप में भी है। जहाँ भी कोष संकलन की आवश्यकता महसूस हुई उन्होंने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। श्री जाजू ने महासभा में अर्थमंत्री तथा श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र में कोषाध्यक्ष रहते हुए कोष वृद्धि में जो योगदान दिया था वह अविस्मरणीय है।

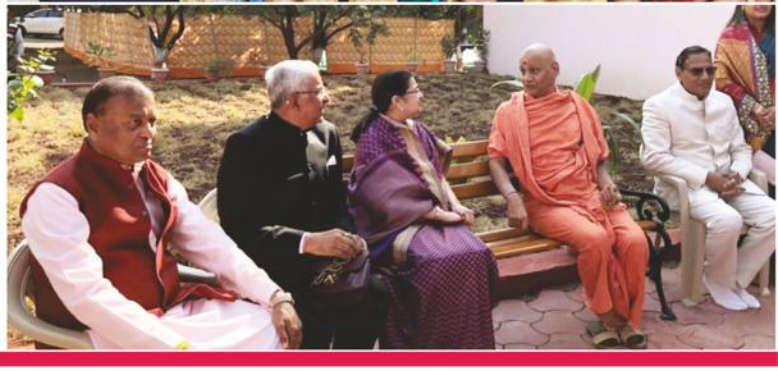

माहेश्वरी समाज की सबसे पुरानी
और सफल वैवाहिक सेवा

www.maheshwari.org

हमारी अन्य सेवाएं
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

निःशुल्क
पंजीकरण
9312946867

इंदौर निवासी आईएएस गोपाल डाड अपने पद से तो सेवानिवृत्त हो गये लेकिन फिर भी उनकी प्रशासनिक क्षमता के मुरीद म.प्र. शासन ने उनकी विशिष्ट क्षमताओं को देखते हुए उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद भी मुख्यमंत्री के विशेष कर्त्तव्य अधिकारी की जिम्मेदारी सौंप दी। श्री डाड इससे पूर्व वर्ष 2016 में उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ महाकुंभ में अतिरिक्त मेला अधिकारी का पदभार संभाल चुके हैं। वर्तमान में विशेष कर्त्तव्य अधिकारी के रूप में पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करते हुए आगामी सिंहस्थ महाकुंभ 2028 की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। श्री डाड की शून्य से शिखर की यात्रा भी अपने आप में एक मिसाल है। श्री माहेश्वरी टाईम्स श्री डाड को प्रशासनिक क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदानों को नमन करते हुए अवार्ड ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2024'' प्रदान करते हुए गौरवान्वित महसूस करती है।

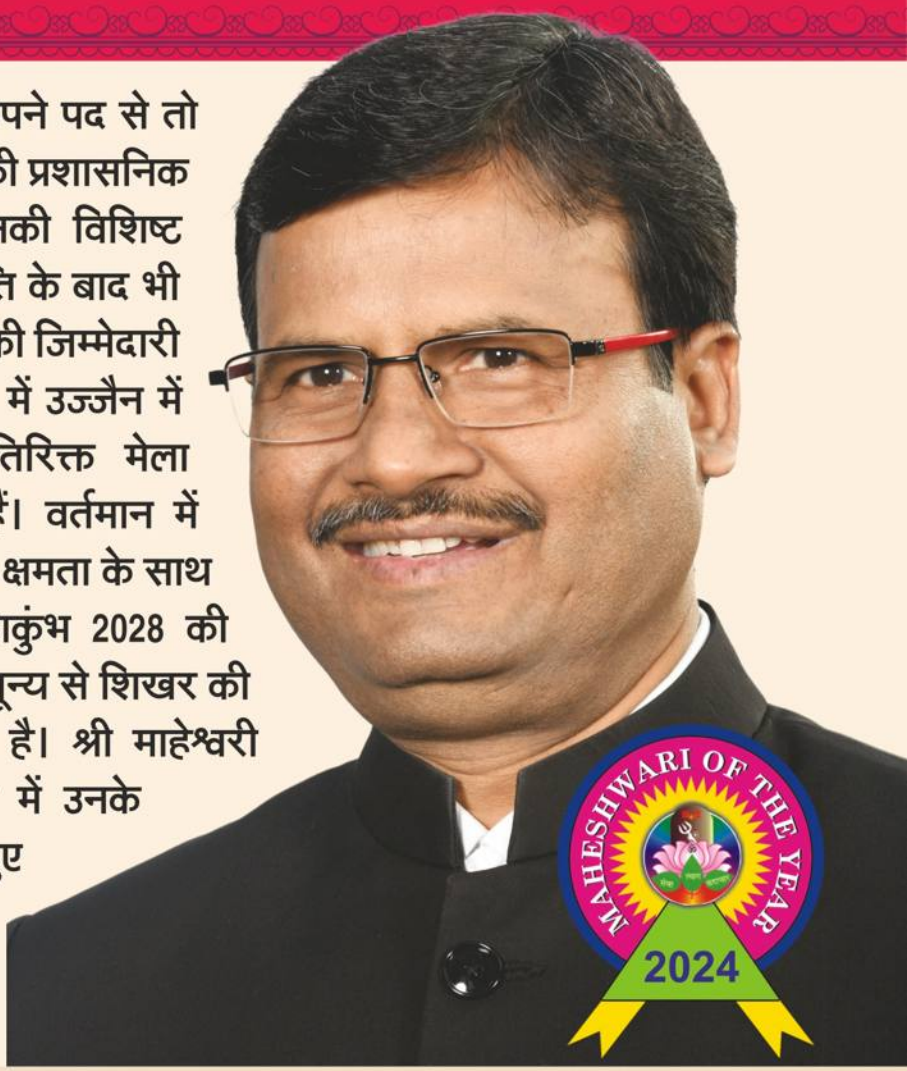

प्रशासनिक क्षमता के महारथी

IAS गोपाल डाड

वर्तमान में विशेष कर्त्तव्य अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्ति के बाद भी अपनी सेवा दे रहे आईएएस गोपाल डाड की प्रशासनिक क्षमताओं के सामने प्रदेश का पूरा ही प्रशासनिक महकमा कायल है। लेकिन जो उनकी जीवन यात्रा को जानता है, वह हर आम व्यक्ति भी उनके जुझारू व दृढ़निश्चयी व्यक्तित्व के सामने नतमस्तक हुए बिना नहीं रहता। श्री डाड का जन्म 23 नवम्बर 1964 में भीलवाड़ा (राज.) के मंगरोप नामक ग्राम में स्व. श्री कन्हैयालाल व श्रीमती जानबाई डाड के यहाँ हुआ था। बचपन से ही श्री डाड प्रतिभावान रहे और कक्षा 8वीं की परीक्षा अपने पैतृक ग्राम से ही प्राप्त की। इस परीक्षा के दौरान ग्रामीण प्रतिभावान छात्र के रूप में चयनित हुए और 9वीं कक्षा से आगे सम्पूर्ण शिक्षा भीलवाड़ा से ही ग्रहण की। भीलवाड़ा आने के बाद उनका रिजल्ट थोड़ा गिर गया लेकिन हायर सेकेण्डरी के बाद पुनः अपनी कमियों को दूर करते हुए विज्ञान विषय के साथ कॉलेज की शिक्षा ग्रहण करने लगे और वह भी अंग्रेजी माध्यम से।

विषम परिस्थितियों में शिक्षा

जीवन की विडम्बना यह थी कि उन्होंने कॉलेज में शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ ही किया था तभी पिताजी को लकवा हो गया। इससे उनके सामने आर्थिक संकट भी उत्पन्न हो गया। फिर भी वे किसी तरह अपने खर्चे की व्यवस्था करते हुए आगे बढ़ते रहे। फिर वर्ष 1985 में जब वे अपनी इस संघर्ष यात्रा में भौतिक विषय से एम.एससी. द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत थे, तभी मामूली से बुखार के बाद माँ का साया सिर से उठ गया। नियति का क्रूर आघात यहीं नहीं थमा, माँ के देहांत के 11वें दिन पिताजी का भी असामयिक देहावसान हो गया। उस समय आपकी आयु लगभग 20 वर्ष थी और परिवार में छोटे भाई श्री रमेशचंद्र डाड 18 वर्ष के थे। इस विकट स्थिति में दोनों भाई ही एक दूसरे का सहारा बने। इन स्थितियों के बावजूद एम.एससी. की परीक्षा उन्होंने मैरिट के साथ उत्तीर्ण की। श्री डाड को ही खुद जॉब, खाना, पढ़ाई सबकी व्यवस्था करनी थी। वर्तमान में छोटे भाई रमेशचन्द्र डाड मंदसौर के शासकीय महाविद्यालय में भौतिक शास्त्र के

ख्यात प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। आपकी दोनों बेटियां अदिति एवं आस्था भी डॉक्टर हैं।

इस तरह प्रारम्भ हुई यात्रा

घर खर्च चलाने के लिए श्री डाड ने नाथद्वारा में शासकीय विद्यालय में व्याख्याता के रूप में नौकरी कर ली लेकिन उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी जारी रखी। लोग उनकी सिविल सर्विस की पढ़ाई का मजाक उड़ाया करते थे, लेकिन वे दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य पर डटे रहे। आखिरकार वे म.प्र. लोकसेवा आयोग से सिविल सर्विस परीक्षा उत्तीर्ण करके ही माने और इसके द्वारा उनकी सर्वप्रथम नियुक्ति डिप्टी कलेक्टर के पद पर हुई। इसके साथ ही उनके जीवन में खुशी का मौका आया और वे श्री राधेश्याम एवं श्रीमती बदामदेवी दरगड़ की सुपुत्री नीलिमा के साथ वर्ष 1991 में परिणय सूत्र में बंध गये। वर्ष 1992 में प्रथम पुत्र अनिरुद्ध का जन्म हुआ जो वर्तमान में एचडीएफसी बैंक में चीफ मैनेजर हैं। अनिरूद्ध का विवाह कोरोना काल में श्री राजकुमार कोठारी, अलीराजपुर, की सुपुत्री पूनम (सीए, सीएस) के साथ हुआ। द्वितीय पुत्र अभिमन्यू का जन्म 1995 में हुआ और वे सीए, सीएफए तथा आईएसबी हैदराबाद से एमबीए कर एक प्रतिष्ठित कंपनी में सेवारत हैं। अभिमन्यु का विवाह डिकेन (नीमच) निवासी श्री सत्यनारायण गगराणी की पौत्री अदिति के साथ हुआ है।

डिप्टी कलेक्टर से जिला पंचायत सीईओ की यात्रा

श्री डाड वर्ष 1991 में डिप्टी कलेक्टर मंदसौर के रूप में एमपीपीएससी के माध्यम से प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए। परिवीक्षा अवधि पूरी होने के बाद, मंदसौर, भीकनगांव, कसरावद (खरगोन) और रतलाम जैसे शहरों में एसडीएम के रूप में काम करते हुए जमीनी स्तर पर अनुभव प्राप्त किया। पर्याप्त अनुभव प्राप्त करने के बाद उन्हें एडीएम के रूप में मंदसौर पदस्थ किया गया। फिर म.प्र. के प्रमुख शहरों रतलाम-सतना-खंडवा में नगर निगम आयुक्त के रूप में शहरी विकास का दायित्व सम्भाला। म.प्र. विशाल ग्रामीण विकास संभावनाओं वाला राज्य है। सौभाग्य से उन्हें एक ऐसे शहर नीमच में सीईओ जिला पंचायत के रूप में ग्रामीण विकास में नेतृत्व का अवसर मिला, जो पुरानी यादों को ताजा करता है, जो कि उनके मूल स्थान का सीमावर्ती जिला है। इस दायित्व के दौरान उन्होंने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का प्रयास किया।

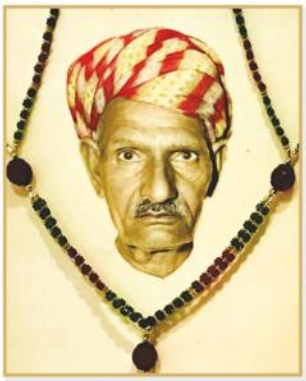

स्व. श्री कन्हैयालाल डाड

स्व. श्रीमती जानबाई डाड

श्वसुर श्री राधेश्याम दरगड़ एवं सास श्रीमती बदामदेवी दरगड़ के साथ डाड दम्पत्ति

कई बड़ी चुनौतियों को सम्भाला

जैसे-जैसे श्री डाड अनुभवी होते गये वैसे-वैसे प्रशासनिक तंत्र भी डाड की कार्यशैली का मुरीद होता गया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बड़ी जिम्मेदारियाँ प्राप्त होने लगी। उन्हें म.प्र. की ''मिनी मुंबई'' माने जाने वाले इंदौर शहर का एडीएम बना दिया गया। एडीएम के रूप में उन्हें अस्थिर और गंभीर कानून व्यवस्था की स्थितियों को संभालने का अनुभव मिला। क्षेत्रीय सचिव माध्यमिक शिक्षा मंडल, उपायुक्त और सचिव एमपीपीएससी सहित विभिन्न विभागों में भी स्थानांतरित हुए। सीईओ जिला पंचायत, इंदौर के रूप में ग्रामीण और शहरी विकास कौशल का लाभ उठाने का अवसर मिला। वे 6 वर्षों से अधिक समय तक इन प्रमुख पदों पर रहे। फिर 2013 में अतिरिक्त मेला अधिकारी, उज्जैन के रूप में देश के सबसे बड़े आयोजनों में से एक, सिंहस्थ 2016 का प्रभार सौंपा गया। उन्होंने इसे प्रारम्भ से पूरा होने तक सम्भाला व इस कर्तव्य में 3 साल से अधिक समय तक लगे रहे। इस आयोजन ने कई विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिये थे।

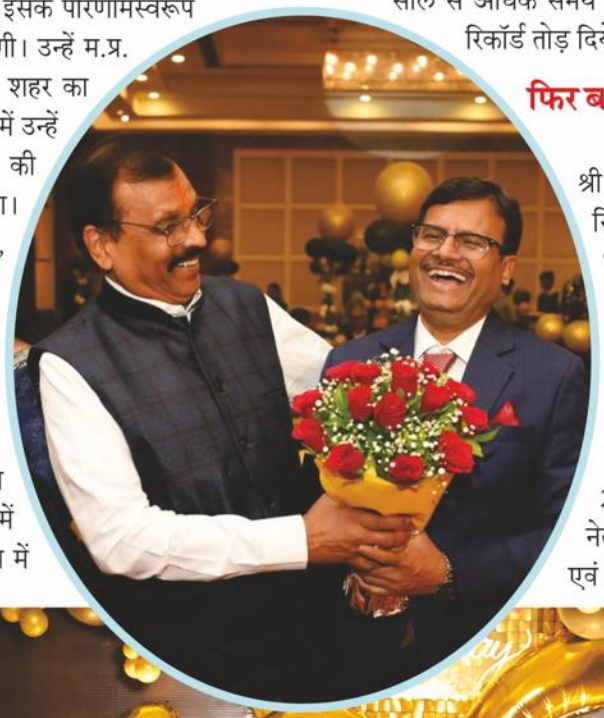

फिर बने आईएएस अधिकारी

एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले श्री डाड के लिये आईएएस बनने का सपना सिर्फ उनका नहीं बल्कि सभी प्रियजनों का भी था। बाबा महाकाल की कृपा से, उन्हें 2008 बैच का आईएएस पुरस्कार मिला। फिर आईएएस अधिकारी के रूप में कई प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया। उप सचिव शहरी विकास के रूप में शुरुआत की। फिर कलेक्टर और डीएम बने। 2017 से 2018 तक सिवनी जिले का नेतृत्व किया। 2018 से 2020 में खरगोन एवं 2020-21 में रतलाम सेवारत रहे।

खरगोन और रतलाम जिले का नेतृत्व करते हुए सदी की सबसे भीषण महामारी कोरोना देखी। यह जीवनकाल का सबसे कठिन अनुभव था। इसमें कई लोगों की जान बचाने का उन्होंने प्रयास किया। रतलाम मेडिकल कॉलेज में नजदीकी 6-7 जिलों के सैकड़ों मरीजों की सेवा एवं जान बचाने का सर्वोत्तम प्रयास किया। रतलाम के बाद भोपाल में अपर सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास और अपर सचिव लोक निर्माण विभाग जैसे विभिन्न पदों पर रहे। वर्ष 2021 के अंत में आयुक्त के रूप में पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग का नेतृत्व करने का मौका मिला, साथ ही आयुक्त चिकित्सा शिक्षा के रूप में भी काम किया। जनवरी 2024 में सेवानिवृत्ति के नजदीक रीवा संभाग एवं शहडोल संभाग के संभाग आयुक्त बनाये गये जहाँ 9 जिलों के जिला कलेक्टर का पर्यवेक्षण किया। अंत में रीवा संभागायुक्त पद से अपना कार्यकाल समाप्त किया।

सेवाओं ने बनाया कीर्तिमान

जिला पंचायत सीईओ इंदौर के पद पर रहते हुए श्री डाड के प्रयासों ने भारत सरकार से वर्ष 2013 में जिला पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसमें जिला पंचायत को 40 लाख रुपये की राशि पुरस्कार में प्राप्त हुई। इसके साथ ही वर्ष 2014 में मुख्यमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। यह उनकी सेवाओं का पुरस्कार ही है कि अब उन्हें उज्जैन में आयोजित होने वाले आगामी सिंहस्थ महाकुंभ - 2028 की जिम्मेदारी भी प्राप्त हुई है। इसके अंतर्गत श्री डाड मुख्यमंत्री के ओएसडी अर्थात् विशेष कर्त्तव्य अधिकारी के रूप में विश्व के इस सबसे बड़े आयोजन का नेतृत्व करेंगे। इस पद पर रहते हुए श्री डाड म.प्र. के मुख्यमंत्री को सिंहस्थ 2028 की तैयारी व व्यवस्थाओं को लेकर सीधे रिपोर्ट करेंगे।

कलाकार तो कई होते हैं, लेकिन जब तक उन्हें उनकी पहचान न दिलाई जाऐं तब तक न तो उन्हें सम्मान मिलता है, न ही ऐसी आय जिससे वे ठीक से गुजर बसर कर सकें। राजस्थान के सीमावर्ती तथा गुजरात के भुज आदि क्षेत्र के ऐसे ही गुमनाम व गरीब कलाकारों की कला को सतत रूप से अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिला रहे हैं, जयपुर निवासी लेखराज माहेश्वरी। गत 57 वर्षों की अपनी इस सेवा यात्रा में लाखों कलाकारों का जीवन अपने प्रयासों से संवार देने वाले इन अद्भूत समाजसेवी लेखराज माहेश्वरी को ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर 2024'' अवार्ड प्रदान करते हुए ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' गौरवान्वित महसूस करती है।

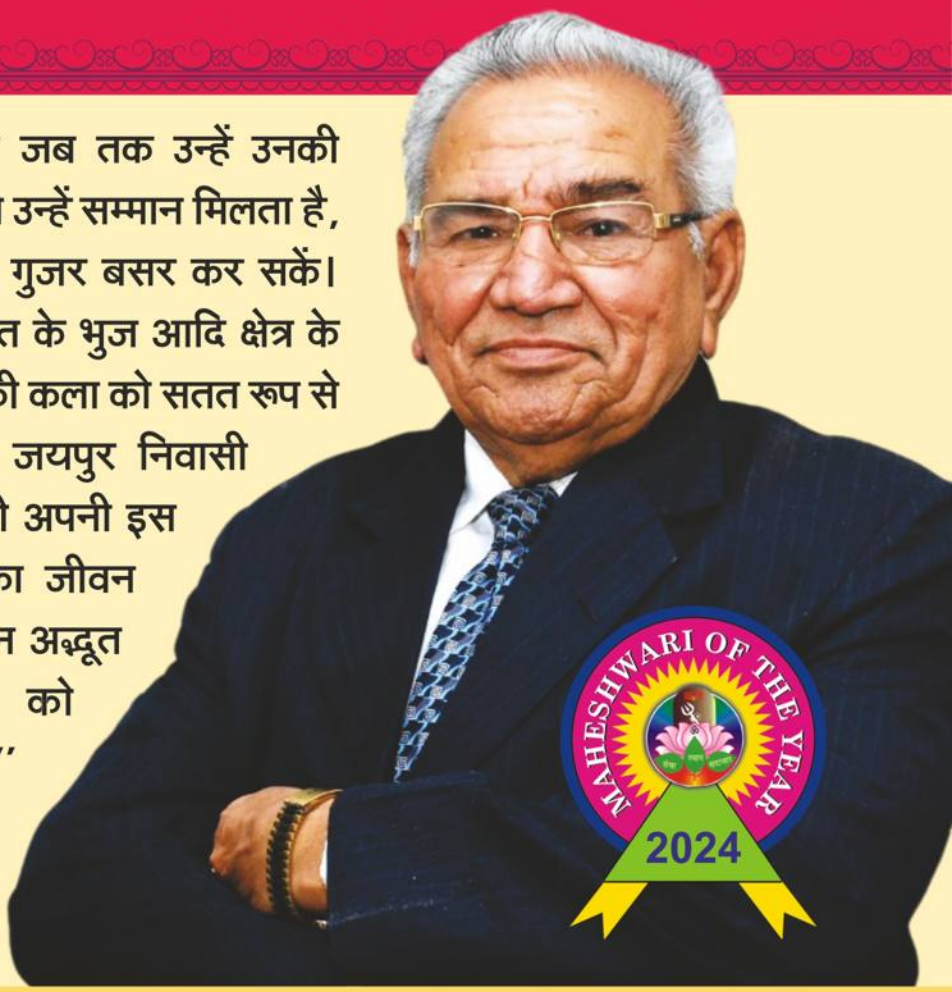

हस्तशिल्प के अंतर्राष्ट्रीय आईकॉन

लेखराज माहेश्वरी

जयपुर निवासी 76 वर्षीय समाजसेवी लेखराज माहेश्वरी की न सिर्फ राजस्थान व गुजरात बल्कि वर्तमान में पूरे देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में एक ऐसे समाजसेवी के रूप में पहचान है, जिन्होंने अनुसूचित जाति व अन्य पिछड़े कलाकारों की कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाकर उसे सम्मानित करवाया। इतना ही नहीं लाखों कलाकारों को जोड़कर उन्होंने उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बनाया। इसी का नतीजा है कि राजस्थान व गुजरात के सीमावर्ती पिछड़े क्षेत्रों का हस्तशिल्प वर्तमान में विश्वभर में अपनी पहचान बिखेर रहा है। इसे श्री माहेश्वरी का जुनून ही कहा जा सकता है कि जिसके लिये उन्होंने सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया और तो और प्रारम्भिक दिनों में इस हस्तशिल्प को पहचान दिलाने के लिये फेरीवाले के रूप में महानगरों की खाक छानने में भी वे पीछे नहीं रहे। वर्तमान में 76 वर्ष की अवस्था में भी उनकी यह सेवा यात्रा जारी है।

विरासत में मिली समाजसेवा

श्री माहेश्वरी का जन्म 11 मई 1948 को स्व. श्री मथुरादास माहेश्वरी के यहाँ राजस्थान के पाकिस्तान सीमा से लगे रेगिस्तानी इलाके बाड़मेर में हुआ था। पिताजी मथुरादासजी ने अपना पूरा जीवन समाजसेवा व नारी उत्थान में लगाया। आपके पदचिन्हों पर चलते हुए लेखराजजी ने भी समाज सेवा का बीड़ा उठाया। श्री माहेश्वरी की शादी श्रीमती प्रकाशी देवी से 1967 से हुई। सन् 1971 की भारत-पाक लडाई में करीब 1000 माहेश्वरी परिवार अपना घर-बार, सामान छोडकर बाडमेर आए। बाडमेर कलेक्टर द्वारा लेखराजजी को जिम्मेदारी सौंपी गई कि वे प्रतिदिन की जानकारी, उनके ठहरने की व्यवस्था व गाड़ियों द्वारा पाकिस्तान से उनका सामान मंगवाने की परमिट जारी करना, जैसे महत्वपूर्ण कार्य करवाएं। श्री माहेश्वरी ने दिन-रात मेहनत करके करीब आठ महीने तक पूरी जिम्मेदारी से यह कार्य पूर्ण करवाया।

हाथ ठेला से भी लगाई फेरी

श्री माहेश्वरी राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विकासात्मक संगठनों के माध्यम से कलाकारो की आजीविका के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करके रेगिस्तानी क्षेत्र की गरीब आबादी के उत्थान के लिए कम उम्र से ही सामाजिक सेवाओं में लग गये। श्री माहेश्वरी ने 16 वर्ष की आयु से ही बाड़मेर के रेगिस्तानी इलाके में रहने वाले समाज के कल्याण में गहरी रुचि ली, ताकि उन्हें आजीविका और रोजगार सृजन के लिए काम मिल सके। अपने पूर्वजों के पारंपरिक हथकरघा व्यवसाय

वाले परिवार से जुड़े होने के बावजूद भी बाड़मेर क्षेत्र के वंचितों के कल्याण और उत्थान के लिए वे हमेशा चिंतित रहते थे। कारण यह था कि ऐसे लोगों की आजीविका के लिए कोई नियमित रोजगार नहीं था। राजस्थान में बाड़मेर और जैसलमेर के अनुसूचित जाति और अन्य गरीब वर्ग के निवासियों के हथकरघा और हस्तशिल्प को विकसित करने और बढ़ावा देने व कच्छ भुज जिला. गुजरात और 1971 के भारत-पाक युद्ध के शरणार्थियों के लिए श्री माहेश्वरी ने विभिन्न व्यापार मंचों पर उनकी पारंपरिक कला और शिल्प को बढ़ावा देकर उन्हें रोजगार प्रदान करने और अन्य व्यक्तियों के लिए जीवन रेखा विकसित करने के उद्देश्य से एक रास्ता बनाने की पहल की। इसके लिए उन्होंने भारत के मेट्रो शहरों में 8 साल बिताए, मुख्य रूप से दिल्ली में एक फेरीवाले के रूप में और बाड़मेरी हाथ की कढ़ाई और एप्लिक वर्क की वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए हर कोने में पहुंचे। जयपुर में, उन्होंने हवा महल - 'पैलेस ऑफ विंड्स', जयपुर में पुशकार्ट पर बाड़मेरी हाथ की कढ़ाई और पिपली के काम की वस्तुओं का विपणन किया और पर्यटकों और आमजन के लिये राजस्थान के पारंपरिक शिल्प का प्रदर्शन किया।

कई जगह लगाई प्रदर्शनी

श्री माहेश्वरी के प्रयासों से शुरू की गई पहल में वर्तमान में मोची जाति के लगभग 150000 बुनकर और 20000 महिलाएँ काम कर रही हैं। पहले ये महिलाएं केवल जूतियों पर कढ़ाई का काम कर रही थीं, जिन्हें आगे घरेलू सजावटी सामान के साथ तैयार किया गया था। वर्ष 1978 में राजस्थानी शिल्प के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए उन्होंने पहली प्रदर्शनी की शुरुआत की। जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई में 'राजस्थानी शिल्प', बाद में वर्ष 1980 के बाद से राजस्थान सरकार के उपक्रम राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड (आरएसआईसी) के प्रमुख प्रकल्प के तहत RAJSICO के समर्थन से, उन्होंने अमृतसर, चंडीगढ़, दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु के क्षेत्रों में दलित वर्गों के सामान को बढ़ावा देने के लिए प्रदर्शनी लगाकर प्रयास किये। चेन्नई और भारत के अन्य प्रमुख शहरों और RAJSICO के अखिल भारतीय एम्पोरियम में भी पारंपरिक शिल्प सामग्री की प्रदर्शनी लगाई। श्री माहेश्वरी ने सीमावर्ती क्षेत्र की शिल्प कौशल की संभावनाओं को देखा। हमेशा सोचते थे कि उन्हें कैसे बढ़ावा दिया जाए, रेगिस्तानी क्षेत्र में रोजगार कैसे पैदा किया जाए?

आर्थिक सहायता व विकास के तलाशे मार्ग

उन्होंने कड़ी मेहनत की और कारीगरों/बुनकरों के समूह बनाने के विभिन्न तरीके ढूंढे और उन्हें बाड़मेर, जैसलमेर (राजस्थान), कच्छ भुज जिले (राज.) में हथकरघा और हस्तशिल्प के विकास के लिए सरकारी योजनाओं के माध्यम से सहायता प्रदान की। इससे स्थानीय निवासियों में जागरूकता पैदा हुई और क्षेत्र की महिलाओं और दबे-कुचले वर्गों को हथकरघा और हस्तशिल्प का नियमित काम मिलने लगा। उत्तर-भारत के रेगिस्तानी इलाकों में हथकरघा और हस्तशिल्प को विकसित करने और बढ़ावा देने की दृष्टि से खुद सक्रिय रूप से शामिल हो गये। शिल्पकारों और बुनकरों के समूह बनाकर उन्हें प्रशिक्षण, डिजाइन और विपणन प्रदान करके भारतीय हस्तशिल्प और हथकरघा का विकास किया। लगभग 1.7 लाख कारीगरों/बुनकरों के लिए रोजगार सृजित किया और विशेष रूप से राजस्थान के अनुसूचित जाति समुदाय और गरीब वर्ग में महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया। शिल्प को लोकप्रिय बनाने और विपणन प्रदान करने के लिए विदेशियों विशेषकर जापानी खरीदारों को बाड़मेर और राजस्थान के अन्य शिल्प क्षेत्रों का दौरा करने के लिए प्रेरित किया।

सतत रूप से चलते रहे प्रयास

बाड़मेर और जैसलमेर (राजस्थान), कच्छ भुज जिले (गुजरात) के शिल्प के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए नियमित शो, प्रदर्शनियाँ और खरीदार शिल्पकारों के लिए विक्रेता बैठकें आयोजित की गईं और अपने व्यक्तिगत संपर्कों और अनुनय के माध्यम से विदेशी खरीदारों को बाड़मेर के शिल्प को बढ़ावा देने और राजस्थान व गुजरात के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के शिल्पकारों/बुनकरों के जीवन स्तर को बढ़ावा देने के लिए ऐसी प्रदर्शनियों में जाने के लिए प्रेरित किया। आखिरकार वे ऐसे हजारों कारीगरों/बुनकरों (एससी और एसटी की महिलाओं सहित) के लिए रोजगार पैदा करने के अपने प्रयास में सफल रहे, जो अपनी दैनिक रोटी

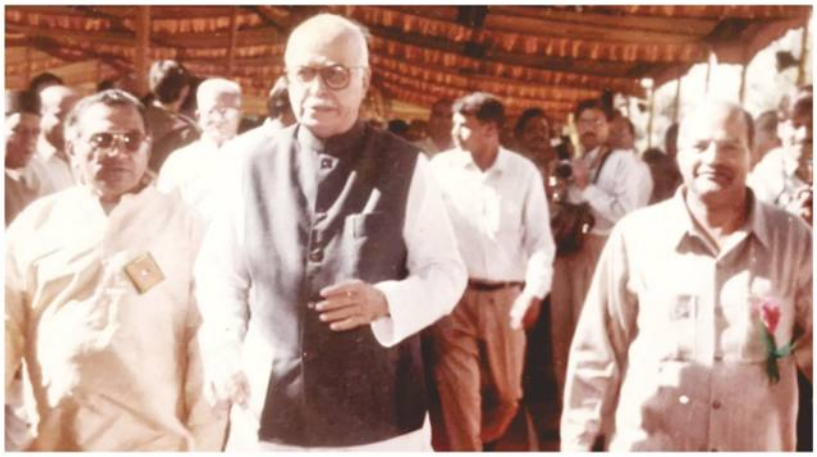

कमाने के अवसरों की कमी के कारण बुरी तरह प्रभावित थे। बाड़मेर (राज.), गुजरात और कच्छ भुज जिले (गुज.) की शिल्पकला को बढ़ावा देने के लिए श्री माहेश्वरी के सशक्त प्रयास और दूरदराज के क्षेत्रों से शिल्प उत्पादों का निर्यात, उनके जीवन स्तर में सुधार और नियमित रोजगार प्रदान करने के लिए उनके समाज के प्रति समर्पण सामाजिक कार्यों में उनका विशिष्ट योगदान है, जो शायद रेगिस्तानी क्षेत्र में इतना आसान नहीं था, जिसके कारण हस्तशिल्प क्षेत्र में लाभ हुआ है। राष्ट्रीय हित के लिए ज़ोरदार स्वैच्छिक प्रयास के रूप में उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के गरीब वर्गों के लिए समर्पित कर दिया है और आज भी वे कमजोर वर्गों से जुड़े हुए हैं और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए उचित स्तर तक ले जा रहे हैं। उसी का परिणाम है कि, श्री माहेश्वरी बाड़मेर और कच्छ, भुज क्षेत्रों के शिल्पकारों के प्रति बहुत स्नेही हैं। इन क्षेत्रों के कारीगर/बुनकर उनके सभी सामाजिक कार्यों और शिल्प के विकास के लिए उन्हें विशिष्ट सम्मान देते हैं।

क्षेत्र को बनवाया शिल्प क्लस्टर

निरंतर अनुनय और प्रयासों के फलस्वरूप तत्कालीन कपड़ा मंत्री काशीराम राणा ने वर्ष 2001 में बाड़मेर को शिल्प क्लस्टर घोषित किया। इसके साथ श्री माहेश्वरी ने सरकार की EXIM नीति में बाड़मेर को "निर्यात उत्कृष्टता शहर" घोषित करवाया। भारत सरकार ने बाड़मेर के व्यापारियों और शिल्पकारों को विनिर्माण के साथ-साथ विपणन में विभिन्न रियायतें प्रदान की हैं। विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय के साथ उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप गरीब शिल्पकारों के उत्थान के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों के शिल्प के विपणन की सुविधा के लिए शहरी हाट बनाने और स्थापित करने में मदद मिली है। वर्तमान में कारीगरों/बुनकरों को मजबूत करने के लिए श्री माहेश्वरी राजस्थान सरकार के क्लस्टर विकास कार्यक्रमों की गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से शामिल हैं। समग्र रूप से हस्तशिल्प क्षेत्र और राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में शिल्प और शिल्पकार समुदाय के विकास और प्रचार-प्रसार में उनका योगदान मूल्यवान और यादगार है।

शिल्प की पहुँच अब विदेश तक

हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) जो हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख संगठन है, को इसकी स्थापना के समय से ही श्री माहेश्वरी का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्री माहेश्वरी ईपीसीएच के संस्थापक सदस्य हैं। उन्होंने प्रशासन समिति के सदस्य, व्यापार मेलों के अध्यक्ष, फर्नीचर और सहायक उपकरण शो जैसे विशिष्ट शो के अध्यक्ष, ईपीसीएच के उपाध्यक्ष, निदेशक - इंडिया एक्सपोज़िशन मार्ट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा के रूप में विभिन्न पदों पर कार्य किया है। वर्ष 2001 में उन्हें ईपीसीएच का उपाध्यक्ष चुना गया। उनके कार्यकाल के दौरान भारतीय हस्तशिल्प निर्यातकों ने कराकास, (वेनेज़ुएला) में प्रथम भारतीय महोत्सव में भाग लिया, जिसका उद्घाटन तात्कालीन कपड़ा मंत्री - काशीराम राणा ने किया था। यह मेला 15 दिनों के लिए होता है और भारतीय संस्कृति, भारतीय हस्तशिल्प के साथ-साथ भारतीय भोजन का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक बड़ी सफलता थी, कि प्रत्येक प्रदर्शक ने इसमें अपनी पूरी सामग्री दी थी। सभी लोग लेखराज जी और परिषद के प्रयासों की सराहना करते हैं। वे 2013 से 2015 तक ईपीसीएच के अध्यक्ष थे और वर्तमान में क्षेत्रीय संयोजक और प्रशासन समिति - ईपीसीएच के सदस्य के रूप में कार्यरत हैं।

प्रचार-प्रसार के लिए कई देशों का भ्रमण

बाड़मेरी हाथ की कढ़ाई और एप्लिक कार्य और विविध हस्तशिल्प वस्तुओं को विश्व बाजार में लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने व्यापार प्रतिनिधिमंडल के साथ कई देशों का दौरा किया। वर्ष 1991 में लंदन, पेरिस, इटली, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, वर्ष 2005 में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड, वर्ष 2006 में यूनाइटेड किंगडम, वर्ष 2007 में ब्राज़ील, वर्ष 2008 में ग्रीस तथा वर्ष 2009 में अर्जेंटीना और चिली तथा फिर वर्ष 2011 और 2013 में यहाँ पुनः भ्रमण किया। ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना में 15 दिनों तक चलने वाला बी2सी मेला एक बड़ी उपलब्धि थी, जिसे 5 वर्षों में तीन बार आयोजित किया गया। यह लैटिन अमेरिकी देशों में भारतीय हस्तशिल्प बाजार बनाने के श्री माहेश्वरी के दृष्टिकोण के कारण था, जो भारतीय हस्तशिल्प की भावना से अछूते थे। इसके साथ ही वर्ष 2009 में तुर्की, वर्ष 2013 में हांगकांग, जापान और चीन तथा वर्ष 2014 में एनवाई, यूएसए का भ्रमण कर हस्तशिल्प का व्यापक प्रचार प्रसार किया।

कई संगठनों के माध्यम से सेवा

समाज के उत्थान और विकास में गहरी रुचि के कारण, आप विभिन्न संगठनों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसके अंतर्गत आप व्यापार मंडल, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ की प्रबंध समिति के पूर्व सदस्य, अखिल भारतीय हस्तशिल्प सलाहकार बोर्ड, कपड़ा मंत्रालय, (भारत सरकार), हस्तशिल्प और कालीन सेक्टर कौशल परिषद (वाणिज्य मंत्रालय), कपड़ा कार्य बल, पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, नई दिल्ली को सदस्य के रूप में सेवा दे चुके हैं। पूर्व सदस्य और संरक्षक के रूप में हस्तशिल्प क्षेत्र परिषद, श्रम और

रोजगार मंत्रालय, विशेष आमंत्रित सदस्य एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया, (नई दिल्ली), निदेशक इंडिया एक्सपोज़िशन मार्ट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा प्रबंध समिति सदस्य, लघु उद्योग भारती राजस्थान अध्यक्ष (एमर्टियस), फेडरेशन ऑफ राजस्थान होम टेक्सटाइल्स एंड हैंडीक्राफ्ट्स एक्सपोर्टर्स राजस्थान संयोजक, अखिल भारतीय ढाट माहेश्वरी समाज राजस्थान महासंघ के अध्यक्ष रूप में भी सेवा देते रहे हैं। समाज सेवा संगठन अंतर्गत पूर्व सदस्य, अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर, (राजस्थान), पूर्व सदस्य, राष्ट्रीय वृद्धजन परिषद, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, (भारत सरकार) तथा पूर्व सदस्य, पश्चिम रेलवे, अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी मंच नई दिल्ली में संगठन मंत्री, प्रबंध समिति सदस्य (उद्योग) अखिल भारतीय माहेश्वरी समाज, प्रबंध समिति सदस्य माहेश्वरी समाज (जयपुर) आदि उपाध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासंघ (नई दिल्ली) अध्यक्ष, श्री महेश गौ सेवा ट्रस्ट (अहमदाबाद) आदि के रूप में भी अपनी सेवा दे रहे हैं।

समाज की भी सतत सेवा

श्री माहेश्वरी सर्वप्रथम श्री चाबुलाल तोतला की अध्यक्षता में समाज कार्यकारिणी में अधिकृत प्रतिनिधि नियुक्त किए गये और समस्त सरकारी कार्यों को निर्विघ्न पूर्ण करवाया। शिक्षा सचिव घनश्याम मूंदड़ा के साथ 5 स्कूल की प्रबंधन कार्यकारिणी में सदस्य रहे। MGV वालिका विद्यालय, विद्याधरनगर की भूमि के लिए बजरंग जाखोटिया के साथ लगातार दो साल मेहनत करके JDA में अधिकारियों से मिलकर 9000 गज जमीन 90,000,00 रुपये में अलाट करवाई। श्री माहेश्वरीजी ने श्री मूंदडा व श्री जाखोटिया के साथ मिलकर, राज्य सरकार से 50% पर 45,000,00 रुपये पर भूमि आवरण स्वीकृत करवाया। वरिष्ठ समाज सेवी राधाकिशन अजमेरा, वायुलाल तोत्तला, बालकृष्ण सोमानी, जाखोटिया जी, मूंदड़ाजी के साथ जाकर भंवरलाल शर्मा, मंत्री (राज्य सरकार) से निवेदन कर समाज की बाजिव मांग को देखते हुए, सिर्फ 1 रु टोकन मनी पर 9000 गज जमीन आवंटित करवाने में विशेष सहयोग दिया। माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर के लोकार्पण के लिए दिल्ली जाकर रामदास अग्रवाल के साथ भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी से मिलकर उनसे निवेवन कर लोकार्पण की स्वीकृति ली गई।

भाजपा की बैठक की भी व्यवस्था

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की दो बार मीटिंग, जयपुर में आयोजित हुई। अध्यक्ष रामदास अग्रवाल द्वारा, उनके ठहरने की व्यवस्था श्री माहेश्वरी को सुपुर्द की गई। लेखराजजी ने अपना अहम् योगदान देकर माहेश्वरी समाज द्वारा, भोजन की व्यवस्था की, जिसमें 100 गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। नई दिल्ली में लेखराज बचाणी, (सांसद) की प्रेरणा से अंतरराष्ट्रीय माहेश्वरी परिषद का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य राष्ट्र के निर्माण में तन-मन-धन से सहयोग की भावना उत्पन्न करना था। दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय स्तर का भवन बनवाया एवं संपूर्ण विश्व में रह रहे माहेश्वरी बंधुओ की जनगणना करवाकर पुस्तक प्रकाशित करवाना एवं सामाजिक कार्य करना, भी उनके उद्देश्य रहे। इस कार्य के लिये श्री माहेश्वरी को संगठन मंत्री बनाया गया। वे आज दिन तक संगठन का कार्य देख रहे है। जनवरी 2019 में अखिल भारतीय माहेश्वरी महाधिवेशन जोधपुर में संपन्न हुआ, उसमें लगभग 30000 माहेश्वरी पूरे देश के कोने कोने से पधारे। उसमें माहेश्वरी ग्लोबल एक्सपो का आयोजन भी किया गया। श्री माहेश्वरी सलाहकार समिति के मेम्बर रहे व समय-समय पर ग्लोबल एक्सपो की सफलता के लिये मार्गदर्शन किया। 2008 से 2012 तक माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर की कार्यकारिणी सदस्य रहे व कुम्भ मेले में हरिद्वार भवन में आपने 15 दिन रुककर अपनी सेवाए दीं व सभी माहेश्वरी बंधुओं की आवास एवं भोजन व्यवस्था में सहयोग किया। 2001 में गुजरात में भयंकर भूकम्प के समय श्री माहेश्वरी ने अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी परिषद दिल्ली के तत्वावधान में, माहेश्वरी बंधु (सुरेन्द्रनगर) के साथ भधाउ, अंजार, गांधीधाम भुज एवं भुजोडी जाकर माहेश्वरी बंधुओ की समस्याओं के निराकरण में सहायता की एवं आर्थिक मदद की।

समाज सेवा में भी विशिष्ट सम्मान

माहेश्वरी समाज, जोधपुर के महेश नवमी कार्यक्रम के अवसर पर आपको विशेष अतिथि बनाकर 15,000 लोगो ने आपका हार्दिक स्वागत किया। ज्ञाती बंधुओ ने समाचार-पत्र में पूरे पृष्ठ पर विज्ञापन देकर व 50 से ज्यादा हार्डिंग्स लगाकर बधाई दी। इसी प्रकार विल्ही, जयपुर, बाडमेर, गडरा रोड, अहमदाबाद, बडोदा, सुरेन्द्रनगर आदि स्थानों के सैंकडो माहेश्वरी बंधुओ ने भी ढोल नगाडे के साथ व पुश्तैनी गांव के लोगों ने भी पूरे शहर में घुमाकर स्वागत किया। स्वर्गीय श्री रामदासजी अग्रवाल की अध्यक्षता में अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन, 1997 से जुडे हुए है। वर्तमान में राजस्थान प्रदेश वैश्य सम्मेलन के सीनीयर उपाध्यक्ष है। इंटरनेशनल वैश्य फेडरेशन दिल्ली के उपाध्यक्ष के पद पर सुशोभित हैं। इसी फेडरेशन ने आपकी सेवाओं और कार्य कुशलता और कर्मठता को देखते हुए लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया। फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया धाट माहेश्वरी समाज से गुजरात व राजस्थान के करीव 5000 परिवार जुड़े है। ये संस्था 12 वर्षों से समाज के उत्थान, शिक्षा, चिकित्सा, इंश्योरेन्स, आदि के लिए प्रयासरत है। आप इसके सक्रिय सदस्य है। 2015 में हरिद्वार में श्री भागवत कथा के आयोजन में समस्त व्यवस्थाओं को 6 बार हरिद्वार जाकर जिम्मेदारीपूर्वक सम्भाला।

सेवा ने दिलाया सम्मान

- आर्थिक अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा उद्योग रतन पुरस्कार कलेक्टर बाड़मेर द्वारा (1989)
- पद्मश्री मेघराज जैन द्वारा 1995 में लेकटा लोक मेला, बाडमेर के दौरान सम्मान
- 1996 में आर्थिक संस्थान, नई दिल्ली द्वारा सम्मान
- 1996 में भंवर लाल मिश्रा, (शहरी मामलों के मंत्री और मोहन लाल गुप्ता, (जयपुर महापौर) द्वारा शिल्प क्षेत्र के विकास में कड़े प्रयासों के लिए जयपुर नगर निगम समारोह में सम्मान
- 1997 में भारतीय लघु निर्यातक परिषद द्वारा उद्योग रतन पुरस्कार
- 1997 में नेशनल इंडस्ट्रियल फोरम, नई दिल्ली द्वारा इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी पुरस्कार
- स्वदेशी जागरण मंच, जोधपुर द्वारा स्वदेशी मेले के दौरान सम्मान
- 2001 में क्राफ्ट क्लस्टर के उद्घाटन के दौरान कपड़ा मंत्री काशीराम राणा और विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) द्वारा बाड़मेर में सम्मान
- राजस्थान अकादमी द्वारा वर्ष 2002 में निर्यात में उत्कृष्ट कार्य के लिए नई दिल्ली में सम्मान
- 2003 में महेश नवमी के अवसर पर माहेश्वरी समाज, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित
- 2004 में राजस्थान के राज्यपाल - मदन लाल खुराना के हाथों सामाजिक संस्था केशव नवनीत द्वारा गुणीजन पुरस्कार
- मिजोरम सरकार द्वारा 2005 में वंचित क्षेत्र के उत्थान की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए मिज़ोरम का पुरस्कार
- वर्ष 1995, 1997, 2001, 2011-12, 2013-14, 2019, 2020 और 2021 में सामाजिक सेवाओं के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए माहेश्वरी समाज द्वारा सम्मान
- 2011 में वैश्य गौरव पुरस्कार
- माहेश्वरी समाज, नई दिल्ली द्वारा 2012 में सम्मान
- राजस्थान राज्य उत्पादकता परिषद, जयपुर द्वारा 2013 में सम्मान
- 2013 में राजस्थान जन मंच द्वारा समाज रतन पुरस्कार
- बाड़मेर, गडरा रोड, जोधपुर, जयपुर, अहमदाबाद, बड़ौदा और सुरेंद्र नगर के धाट माहेश्वरी समाज द्वारा 2013 में ईपीसीएच की चेयरमैनशिप का जश्न मनाया जाएगा।
- 2014 में राजस्थान युवा संस्था समाज द्वारा विवेकानन्द गौरव पुरस्कार
- 2015 में लोकसभा अध्यक्ष द्वारा इंटरनेशनल वैश्य फेडरेशन की ओर से लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड
- 2016 में रामदास जी अग्रवाल और मुख्यमंत्री दिल्ली द्वारा दिल्ली प्रदेश वैश्य महासंघ द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड
- 2016 में हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास के लिए समर्पण, प्रतिबद्धता और अमूल्य योगदान के लिए ईपीसीएच द्वारा सम्मान।
- माहेश्वरी सेवा समिति बाड़मेर द्वारा 2019 में सम्मान।
- होटल मैरियट, जयपुर में राजस्थान के राज्यपाल के हाथों रामदास अग्रवाल मार्ग के उद्घाटन के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासंघ, नई दिल्ली द्वारा प्रशंसा पत्र।
- अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर द्वारा 2019 में सम्मान
- कपड़ा मंत्री - स्मृति जुबिन ईरानी के हाथों 2019 में हस्तशिल्प क्षेत्र में सामाजिक और कल्याण के प्रति उनके योगदान के लिए ईपीसीएच सम्मान
- माहेश्वरी समाज द्वारा प्रतिभा सम्मान (2019)
- लघु उद्योग भारती राजस्थान द्वारा 2020 में जोधपुर में सम्मान
- लघु उद्योग भारती जोधपुर द्वारा जनवरी 2020 में सम्मानित
- श्री माहेश्वरी समाज जयपुर द्वारा दिसम्बर 2023 में सम्मानित
- रामदास अग्रवाल जन-सेवा अवार्ड से अप्रैल 2024 में कटरा में सम्मानित
- पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प मेला, जोधपुर, 2020 के दौरान मुख्यमंत्री एवं राजस्थान के उद्योग मंत्री द्वारा प्रशंसा की गई।

देश के सबसे स्वच्छ शहर 'इन्दौर' में पधारो सा.

॥ श्री महेश्वराय नमः ॥

महेश्वरम

अतिथि निवास

- 3 स्टार होटल जैसी सुविधाएँ
- मांगलिक एवं कॉर्पोरेट आयोजन हेतु उपयुक्त
- उज्जैन-ओंकारेश्वर धार्मिक यात्रा हेतु पधारे आगंतुकों हेतु सर्वश्रेष्ठ गेस्ट हॉउस

- बेस्ट लोकेशन
- प्रमुख हॉस्पिटलों के समीप
- एयरपोर्ट व रेल्वे स्टेशन के नजदीक
- मेट्रो रेल व आवागमन के साधन सहज उपलब्ध
- सात्विक भोजन व्यवस्था

बुकिंग सभी के लिए उपलब्ध

इंटरकाम | लिफ्ट-2 | सीसीटीवी | वॉटर कूलर | इन्टरनेट | जनरेटर बेकअप | प्रोफेशनल मैनेजमेंट | रूम में लाकर, फ्रिज, टीवी | फायर फाइटिंग इक्युपमेंट

रियायती दरों पर मरीज/अटेंडेन्ट हेतु आरक्षित 11 एयरकंडीशंड रूम्स एवं1 डॉरमेट्री

महेश्वरम

श्री महेश जनसेवा ट्रस्ट का प्रकल्प

ओमनी रेसीडेंसी के पास, रेडीसन ब्लू के पीछे, रिंग रोड, इन्दौर 452010

बुकिंग सम्पर्क: मोबाईल-78800 88911/12

deepak

म.प्र. के हृदय स्थल में स्थित देवी अहित्याबाई की नगरी इंदौर, वर्तमान में प्रदेश की तो व्यवसाय, शिक्षा व चिकित्सा सुविधाओं की अघोषित राजधानी ही है, साथ ही देशभर में भी अपनी विशिष्ट छवि रखती है। इसी को देखते हुए बाहर से आने वाले समाजजनों के लिए उत्कृष्ट व सुरक्षित आवास की आवश्यकता महसूस हो रही थी। लगभग 5 वर्षों के सतत प्रयासों से यह कल्पना उत्कृष्ट समाज भवन ''महेश्वरम'' के रूप में साकार हो चुकी है, जहाँ किसी अच्छे होटल से भी बढ़कर सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

देवी अहिल्या की नगरी इंदौर में उत्कृष्ट आवास सुविधा

समाज के वरिष्ठजनों की प्रेरणा से सन् 2014 में महेश जनसेवा ट्रस्ट, इन्दौर की स्थापना की गई। 'महेश्वरम' (पूर्व में महेश अतिथि निवास) के लिए भूखण्ड की खरीदी के साथ ही संस्था ने इस पारमार्थिक संकल्प को ध्यान में रखा कि मिनी मुंबई कहलाए जाने वाला शहर इन्दौर चिकित्सा सुविधा आदि के क्षेत्र में अपनी एक दमदार दस्तक दे सके। एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के रूप में अधिमान्य होने के पश्चात् 'महेश्वरम' के लिए समस्त शासकीय एवं विभागीय औपचारिकताओं को 2019 तक पूर्ण कर लिया गया। श्री महेश जनसेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष ओमप्रकाश पसारी ने बताया कि 2019 में इसका भूमिपूजन किया गया था और 5 साल में यह भवन निर्माण पूर्ण हुआ। इस भवन का निर्माण इंदौर में इलाज के लिए बाहर आने वाले मरीजों, उनके परिजनों, बाहर से आने वाले छात्रों के परिजनों और मांगलिक अवसरों पर बाहर से आने वाले अतिथियों के लिए किया गया है। जल्दी ही यहां पूर्व चीफ जस्टिस आफ इंडिया श्री आरके लाहोटी मेमोरियल हेल्थ केयर सेंटर भी आकार लेगा।

सुविधाजन स्थान पर स्थित

इन्दौर भौगोलिक रूप से राजस्थान, गुजरात, विदर्भ और महाराष्ट्र से निकटता से जुड़ा हुआ है। लगभग 200 से 250 किलोमीटर रेडियस में कारोबार, सामाजिक कार्यक्रमों, शिक्षा और चिकित्सा क्षेत्र में इन्दौर की ख्याति पूरे देश में जानी जाती है। प्रतिदिन 500 से 1000 मरीज़ और उनके परिजन चिकित्सकीय ज़रूरतों के लिए इन्दौर आते हैं। बॉम्बे हॉस्पिटल, मेदांता, अपोलो, कोकिलाबेन हॉस्पिटल (रिलायंस समूह) एवं चैन्नई के शंकरा आई सेंटर अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के साथ सफलतापूर्वक सेवारत हैं। इसके अलावा स्थानीय स्तर पर सीएचएल केयर, डी.एन.एस, मेडीकेयर, सुयश, वी.वन, ग्रेटर कैलाश जैसे चिकित्सा केन्द्र भी सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं। भवन महेश्वरम इन सभी के लिये सुविधाजनक हैं। इसका निर्माण ए.बी.रोड पर स्थित होटल रेडिसन ब्लू के पीछे पूर्व के महेश अतिथि निवास की भूमि पर किया गया है। यह ऐसा स्थान है, जहाँ तक किसी भी शहर से पहुँचना तथा यहाँ से

इंदौर के विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँच अत्यंत सुलभ है। लगभग अधिकांश बड़े अस्पताल भी इससे निकट ही स्थित है। बीआरटीएस एवं यातायात के साधन चहलकदमी की सीमा में हमेशा उपलब्ध रहते हैं। इस भवन के निर्माण की परिकल्पना एवं प्रेरणा मुंबई के माहेश्वरी प्रगति मंडल के चीरा बाजार स्थित भवन एवं दम्मानी ग्रुप द्वारा निर्मित गोपाल मेंशन से मिली है।

कैसा है महेश्वरी भवन

30,000 वर्ग फ़ीट में निर्मित 'महेश्वरम' अत्यंत रियायती शुल्क पर उपलब्ध है। प्रोफेशनल मैनेजमेंट के दौर में सभी व्यवस्थाएँ चाक-चौबंद है। भोजन अत्यंत सात्विक एवं शुद्ध वातावरण में निर्मित किया जाता है। पूरे भवन की साफ़-सफ़ाई एवं देखरेख किसी भी सितारा होटल के समकक्ष की जाती है। सुरक्षा एवं अनुशासन के लिए सुनिश्चित नियमों का पालन किया जाता है तथा सभी सुविधाओं के कार्यान्वयन हेतु प्रोफ़ेशनल एजेन्सियों के साथ समन्वय किया गया है। इस भवन में 32 वातानुकूलित कक्ष (अत्याधुनिक वॉशरूम सहित), 2 डॉर्मेट्रीज़, 1 वी.आई.पी.स्यूट, 1 मिनी हॉल (800 वर्गफीट), सुसज्जित 1 हॉल (3500 वर्गफीट), कॉन्फ्रेन्स हॉल (40 सीट), किचन-डायनिंग हॉल, स्टोर, 2 लिफ्ट, मंदिर व रूफ टॉप पर डायनिंग सुविधा उपलब्ध है। इसके साथ ही संपूर्ण भवन वातानुकूलित है व सभी कमरों में टीवी लगे हैं। नक़द एवं बहुमूल्य सामग्री हेतु लॉकर, वॉटर रिचार्जिंग सिस्टम, आर.ओ. सिस्टम से जल वितरण व जनरेटर सुविधा उपलब्ध है। संपूर्ण परिसर सीसीटीवी से सुरक्षित है व टेलिफोन- इंटरकॉम, इंटरनेट, हेल्थ-सेंटर, प्रोफेशनल मैनेजमेंट तथा फिजियोथेरेपी सेन्टर की सुविधा भी उपलब्ध है।

ये भी रखे गये लक्ष्य

▶▶ 'महेश्वरम' इन्दौर में आने वाले रोगियों एवं उनके परिजनों को अत्यंत रियायती दर पर उत्कृष्ट सेवा देने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा। जो परिवार शुल्क का भार उठाने में असमर्थ होंगे उन्हें ट्रस्ट द्वारा मान्य नियमों के मुताबिक 'महेश्वरम' निःशुल्क भी उपलब्ध करवाया जाएगा।

▶▶ 'महेश्वरम' चिकित्सा के लिए इन्दौर आने पर अस्पताल में भर्ती होने के पूर्व एवं पश्चात् उपलब्ध रहेगा। यह सुविधा मरीज़ों के परिजनों के लिए भी उपलब्ध रहेगी।

▶▶ 'महेश्वरम' में सुयोग्य चिकित्सक परामर्श के लिए उपलब्ध रहेगा एवं उनके द्वारा डे-केयर मरीज़ को ठहराने की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी।

▶▶ यदि रोगी स्थानीय चिकित्सालय में भर्ती है तो उनके परिजनों के लिए 'महेश्वरम' उपलब्ध रहेगा।

▶▶ रोगियों एवं परिजनों के लिए नाममात्र के शुल्क पर भोजन प्रबंध किया जाएगा।

▶▶ जरूरतमंदों के लिए निःशुल्क या रियायती दर पर दवाई तथा स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाएगी।

▶▶ फ़िज़ियोथैरेपी सुविधा नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध रहेगी।

▶▶ नारी स्वावलंबन की दिशा में भी 'महेश्वरम' विभिन्न गतिविधियों का संचालन करेगा। समय-समय पर युवतियों/महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु रोजगारोन्मुख कार्यशालाओं / सेमिनारों / व्याख्यानों तथा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

▶▶ निर्धन एवं असहाय वृद्धजनों को सामाजिक सरोकार का लाभ दिलवाया जाएगा जिससे वे सम्मानपूर्वक अपना शेष जीवन यापन कर सकें।

ये हैं भवन निर्माण के सूत्रधार

वर्तमान में महेश्वरम भवन समाजसेवा की जीती जागती मिसाल है। इस भवन के लोकार्पण के बाद इंदौर, दूसरे स्थानों से यहां आने वाले लोग माहेश्वरी समाज की सेवा भाव की प्रशंसा किए बिना नहीं रहेंगे। इस भवन में जो सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, वे तो कई होटलों में भी नहीं मिलेंगी। इसका निर्माण एक कठिन कार्य था लेकिन कुशल नेतृत्व के प्रयासों ने इसे आसान बना दिया। इसके निर्माण में महेश जनसेवा ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश पसारी, उपाध्यक्ष उमाशंकर बिहानी, मंत्री गौरीशंकर लखोटिया, संयुक्त मंत्री संजय मानधन्या, सहमंत्री रामकिशोर राठी, कोषाध्यक्ष राजेश भट्टड तथा निर्माण कार्य संयोजक के रूप में किशन मूंदडा व सुरेश नुवाल का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यसमिति में निर्मल बागड़ी, सत्यनारायण माहेश्वरी (नागोरी), बी. के. झंवर, राजीव मुछाल प्रेमप्रकाश जाजू, राजेश होलानी, प्रदीप करनानी, श्यामसुंदर बिहानी, विमल करवा राधेश्याम सोमानी, राजेन्द्र भैया, मुकेश कचोलिया व गोपाल कासट आदि शामिल थे।

आयुर्वेद में सम्पूर्ण स्वाथ्य की पर्याय रसायन चिकित्सा को कायाकल्प की औषधि की तरह महत्व दिया गया है। इनमें ही शामिल है, च्यवनप्राश, बस जरूरत है आयुर्वेद के समस्त सिद्धांतों के साथ परिपूर्ण तत्वों से परिपूर्ण इसका निर्माण हो। श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड द्वारा निर्मित स्वामला अपने आपमें एक ऐसा ही सम्पूर्ण स्वास्थ्यवर्धक च्यवनप्राश है, जो हर मौसम में हमारे स्वास्थ्य की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति में समर्थ है।

हर मौसम में संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक स्वामला

हमारे देश में क्रमशः तीन मुख्य ऋतुएँ होती हैंः ग्रीष्म अर्थात् गर्मी का मौसम, वर्षा अर्थात् बारीश और ठंडी का मौसम। आयुर्वेद में छह ऋतुओं का वर्णन किया गया है। इन छह ऋतुओं को दो भागों में बांटा गया है, उत्तरायण और दक्षिणायन। उत्तरायण और दक्षिणायन के बीच वायुमंडल में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव इन छह ऋतुओं में देखा जा सकता है। एक अयन छह महीने की अवधि माना जाता है। इसमें दक्षिणायन की ऋतुओं के दौरान वातावरण शरीर की शक्ति को बढ़ाने का काम करता है, जबकि उत्तरायण की ऋतुओं के दौरान शरीर की शक्ति कम हो जाती है। आमतौर पर शरीर की ताकत नवम्बर और जनवरी के महीनों के बीच सबसे अधिक होती है, इसलिए आयुर्वेद हमें इस अवधि के दौरान अपने शरीर की ताकत बढ़ाने और भविष्य में इसे बनाए रखने के लिए प्रयास करने की सलाह देता है।

शरीर की ताकत शरीर में उपस्थित सात तत्वों रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य - के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। शरीर में इन सात तत्वों को स्वस्थ रहने के लिए अच्छे पोषण की आवश्यकता होती है, जिसके लिए शरीर की जाठराग्नि इस स्थूल अग्नि के साथ साथ सूक्ष्म अग्नि महत्वपूर्ण योगदान देती है। साथ ही वात, पित्त और कफ इस शरीर के महत्वपूर्ण घटकों का संतुलन भी महत्वपूर्ण होता है।

व्यस्त दिनचर्या और उचित पोषण मूल्यों की कमी के कारण, शरीर को आवश्यक पोषण नहीं मिल पाता है और इसका प्रभाव शरीर पर दिखने लगता है। यह प्रभाव शरीर के बाह्य और आंतरिक दोनों अंगों पर होता है। बाह्य प्रभाव तो पहले दिखाई देते हैं, लेकिन आंतरिक अंगों पर होने वाले प्रभाव पहले दिखाई नहीं देते। कभी-कभी, प्रारंभिक लक्षणों को नज़रअंदाज़ करने से अचानक बड़ी बीमारी हो सकती है।

शरीर में महत्वपूर्ण तत्वों का समुचित पोषण बनाए रखने के लिए आयुर्वेद द्वारा सुझाया गया उपाय है, रसायन चिकित्सा है। इनमें से, प्रतिदिन सेवन किया जा सकने वाला रसायन योग है, च्यवनप्राश। च्यवनप्राश में मौजूद घटक द्रव्य शरीर के तत्वों को उचित पोषण प्रदान करते हैं, स्थूल और सूक्ष्म अग्नि को संतुलित करने में मदद करते हैं, और इस प्रकार अच्छी रोगप्रतिरोध शक्ति बनाए रखने में मदद करते हैं। इस च्यवनप्राश को शरीर के लिए और भी असरदार बनाने के लिए शास्त्रशुद्ध पद्धती से निर्मित स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म और मकरध्वज जैसे महत्वपूर्ण तत्वों से समृद्ध किया गया है। स्वामला कंपाऊंड का निर्माण चुनिंदा आमलों के फलों से किया जाता है। प्रक्रिया के लिए केवल शुद्ध घी का इस्तमाल किया जाता है। इसमें चुनिंदा एवं मानकीकृत वनस्पति घटकों के साथ शुद्ध शहद का प्रयोग किया जाता है। स्वामला एवं उसके सभी घटक द्रव्यों का निर्माण आयुर्वेद के औषधि निर्माण शाखा के तज्ञ वैद्यवरों की निगरानी में ही होता है। श्री धूतपापेश्वर मानक के अंतर्गत स्थापित किए गये उच्च श्रेणी के आयुर्वेद एवं आधुनिक निकषों पर इन्हें मानकीकृत भी किया जाता। इस योग का लगभग 60 वर्ष पूर्व श्री धूतपापेश्वर कंपनी द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जो आज कंपनी के प्रीमियम ब्रांड्स में से एक है। शरीर का स्वास्थ्य बनाए रखने के साथ शरीर को ऊर्जावान रखने, बार-बार उत्पन्न होने वाली आरोग्य समस्याओं को कम करने में सहायता करने, शरीर घटकों को आवश्यक बल प्रदान करने, रोगप्रतिरोध क्षमता को सक्षम बनाने के साथ श्वसन संस्थान को बल देने के लिए स्वामला कम्पाऊंड उत्तम लाभकर होता है। रोज उत्पन्न होने वाली शरीर घटकों की क्षति की आपूर्ति पूरी तरह करने के लिए स्वामला कम्पाऊंड लाभकर होता है।

श्री धूतपापेश्वर कंपनी ने आयुर्वेद औषधि उत्पादन क्षेत्र के अपने 150 से अधिक वर्षों के अनुभव से तथा आयुर्वेद के सिद्धान्तों को बरकरार रखते हुए, स्वामला के कुल चार प्रकारों को प्रस्तुत किया है। इनमें से स्वामला कम्पाऊंड के साथ स्वामला क्लासिक तथा इन दोनों के अतिरिक्त शर्करा विरहित ऐसे स्वामला कंपाऊंड एसएफ एवं स्वामला क्लासिक एसएफ को कंपनी ने प्रस्तुत किया है। स्वामला क्लासिक का प्रयोग 3 वर्ष की आयु के बालकों से लेकर सभी के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। स्वामसा कंपाऊंड एवं स्वामसा क्लासिक के निर्माण में कोई भी अप्राकृतिक रंग, स्टेबिलायजर या स्वाद का प्रयोग नहीं किया जाता।

आजकल की बैठी जीवनशैली तथा अनुचित आहार सेवन से जीवनशैलीजन्य विकारों से पीडित व्यक्तियों की संख्या बढती दिखाई देती है। इन व्याधियों में सबसे अधिक पाए जाने वाले व्याधि है मेह तथा मेद धातु चयापचयजन्य विकार। इन रूग्णों में शर्करा सेवन पर निर्बंध रहते है। आज कई व्यक्ति किसी ना किसी कारणवश शर्करा के सेवन कम करते हैं, या नहीं करना चाहते। हालाँकी शर्करा में शरीर के लिए आवश्यक उर्जा का निर्माण करना तथा अन्य लाभ भी होते हैं, इन कारणों की वजह कईं लोग उसका सेवन त्याग देते हैं। अतः चाहकर भी च्यवनप्राश जैसे रसायन कल्पों का सेवन करने पर मन में आशंका रहती है। अतः शर्करा विरहित रसायन कल्प का निर्माण इस काल की आवश्यकता बन गयी। ऐसे व्यक्तियों के लिए स्वामला कंपाऊंड एसएफ एवं स्वामला क्लासिक एसएफ एक उत्तम योग साबित होता है। इसमें खजुर इस प्राकृतिक घटक से प्राप्त नैसर्गिक शर्करा उपलब्ध है, जिससे च्यवनप्राश का स्वाद तो बेहतर होता ही है लेकिन खजुर में स्थित कई मायक्रोन्युट्रियण्ट्स से शरीर लाभान्वित भी होता है। यह हृदय के लिए हितकर है तथा शरीर के लिए बलदायी है। स्निग्ध, रूचिकारक तथा तर्पण है, इसमें नैसर्गिक मिठास है, जो रासायनिक मिठास उत्पन्न करने वाले द्रव्यों से शरीर के लिए बेहतर है, क्योंकि कृत्रिम मिठास उत्पन्न करनेवाले घटकों के नियमित सेवन से शरीर पर अनचाहे परिणाम उत्पन्न होते है। साथही खर्जुर मधुर होने के साथ ही उनके अन्य पोषणात्मक लाभ भी है। इसमें मॅग्नेशियम तथा लोह की उपस्थिति है। साथ ही विटामिन बी 6 भी उपस्थित है। अतः कृत्रिम स्वीटनर्स की अपेक्षा खजुर का उपयोग रसायन कल्प की गुणों की वृद्धि करने में योग्य ही है। इन दोनो नो एडेड शुगर अर्थात् अतिरिक्त शर्करा विरहित योगों में स्टीव्हीया .... जैसे अप्राकृतिक घटकों का इस्तमाल नहीं किया गया है, यह विशेषता है, जो अन्य उपलब्ध शुगर फ्री उत्पादों में नहीं है। इस तरह स्वामला के यह दो एसएफ प्रकार संपूर्णतः प्राकृतिक घटकों से परीपूर्ण है।

हर मौसम में सपूर्ण परिवार का स्वास्थ्य एवं रोगप्रतिरोध शक्तिवर्धक ऐसे स्वामला के यह चार प्रकार बाजार में उपलब्ध हैं।

स्वामला रोजाना .. सेहत का खजाना

स्वास्थ्य सेवा विभाग
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

धूतपापेश्वर
आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष
१५० वर्षों से अधिक

प्रयागराज में आस्था का मेला
कुम्भ महापर्व-2025

डॉ. महेश शर्मा
जयपुर
9928370947

विश्व के सबसे बड़े आयोजन कुम्भ महापर्व का आयोजन अधिकारिक रूप से आगामी 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक होगा। इस महाकुम्भ में सनातन संस्कृति के समस्त अखाड़ों के साधु-सन्यासी तो एकत्र होंगे ही साथ ही विश्व भर से श्रद्धालुओं का आगमन भी होगा। आईये देखें इसमें कब क्या होगा और क्या है इसका महत्व?

बारह वर्ष के अन्तराल से आने वाला कुम्भ पर्व धार्मिक आस्था का केंद्र बनता है। कुम्भ की यह विशेषता है कि इसमें बिना बुलाए, बिना किसी आमंत्रण और प्रचार-प्रसार के करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होकर आस्था की डुबकी लगाते हैं। यहाँ पर उन संत महात्माओं के दर्शन होते हैं जिनके अन्यत्र दर्शन दुर्लभ हैं। शाही सवारी के दौरान उड़ने वाली संतों की चरण रज के स्पर्श से भक्तों का जीवन धन्य हो जाता है। कुम्भ के दौरान दशनामी अखाड़ों की छटा और नागा साधुओं का सम्मिलन देखते ही बनता है। शिवभक्त नागा साधुओं के 17 श्रृंगार होते हैं, जिनमें भभूत मलना सत्रहवां श्रृंगार है। केश, रुद्राक्ष की माला और शस्त्र धारण करना इनके लिए आवश्यक है। वर्षों की कठिन तपस्या में खरे उतरने पर कुम्भ के दौरान अखाड़े नागा साधु को दीक्षा देते हैं और उन्हें राजेश्वर की उपाधि दी जाती है। दीक्षा से पूर्व अपना पिंडदान नागा स्वयं करते हैं। नागा साधु आजीवन धर्म रक्षा की दीक्षा लेता है। ऐसा माना जाता है कि नागा के तौर पर उनको राजयोग मिलता है। इनका अंतिम लक्ष्य सांसारिक मोह-माया को छोड़कर मोक्ष प्राप्ति होता है। कुम्भ में ऐसे धर्म रक्षक नागाओं के दर्शन मात्र से श्रद्धालु अपने जीवन को धन्य मानते हैं।

आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित अखाड़े

अखाड़ों की परम्परा आदिगुरू शंकराचार्य ने विभिन्न सम्प्रदायों में बंटे साधु समाज को संगठित करने के लिए की थी। शंकराचार्य ने पश्चिम में द्वारिका पीठ, पूर्व में गोवर्धन पीठ, उत्तर में ज्योतिर्मठ और दक्षिण में शारदा पीठ की स्थापना की और देशभर के संन्यासियों को दस पद नाम देकर संगठित किया। यही दशनामी सन्यासी कहलाये। ये दस नाम हैं- तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी। शंकराचार्य ने इन सन्यासियों को देशभर में चारों पीठों से जोड़ा। इन्ही संन्यासियों का एक हिस्सा नागा हो गया। उसने आकाश को अपना वस्त्र मानकर शरीर पर भभूत मला और दिगम्बर स्वरूप में रहने लगे। कालांतर में संन्यासियों के अलग-अलग समूह बने जिन्हें अखाड़ा कहा गया। वर्तमान में 6 नागा अखाड़े हैं। आवाहन, अटल, महानिर्वाणी, आनंद, जूना और ब्रह्मचारियों का अग्नि अखाड़ा। ये सभी शैव मत के हैं। बाद में वैष्णव मत के तीन- दिगम्बर, श्रीनिर्मोही, और श्रीनिर्वाणी अखाड़े बने। इसी प्रकार गुरु नानकदेव के पुत्र श्रीचन्द्र द्वारा स्थापित उदासीन सम्प्रदाय के भी दो अखाड़े- श्रीपंचायती बड़ा उदासीन अखाड़ा

एवं श्रीपंचायती नया उदासीन अखाड़ा नाम से सक्रिय हैं। पिछली शताब्दी में सिक्ख साधुओं के निर्मल सम्प्रदाय के अधीन श्रीपंचायती निर्मल अखाड़ा भी अस्तित्व में आया। दशनामियों में कुछ गृहस्थ भी होते हैं जिन्हे ''गोसाईं'' कहते हैं।

धर्मरक्षा सभी का प्रमुख उद्देश्य

कुम्भ स्नान के लिए श्रीपंचायती निरंजनी अखाड़ा, श्रीपंचायती आनंद अखाड़ा, श्रीपंचायती दशनाम जूना अखाड़ा, श्रीपंचायती आवाहन अखाड़ा, श्रीपंचायती अग्नि अखाड़ा, श्रीपंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा, श्रीपंचायती अटल अखाड़ा और अन्य सभी अखाड़े वर्षों से भाग ले रहे हैं, जो कुम्भ के दौरान आकर्षण का केंद्र बनते हैं। दशनामी सन्यासियों का उद्देश्य धर्म प्रचार के अतिरिक्त धर्म रक्षा का भी रहा है। ''जूना अखाड़ा'' (काशी) के इष्टदेव कालभैरव अथवा कभी-कभी दत्तात्रेय भी समझे जाते हैं और ''आवाहन'' जैसे एकाध अन्य अखाड़े भी उसी से संबंधित हैं। इसी प्रकार ''निरंजनी अखाड़ा'' (प्रयाग) के इष्टदेव कार्तिकेय प्रसिद्ध हैं और इनकी भी ''आनंद'' जैसी कई शाखाएं पाई जाती हैं। ''महानिर्वाणी अखाड़ा'' (झारखण्ड़) के इष्टदेव कपिल मुनि हैं, इनके साथ ''अटल'' जैसे एकाध अन्य अखाड़ों का भी संबंध है। कुम्भ के अवसर पर ये सभी अखाड़े आपस में मिलते हैं और लोकतांत्रिक पद्धति से अपने पदाधिकारियों का चुनाव करते हैं। इनके प्रमुख महंत को 'महामंडलेश्वर' और 'मंडलेश्वर' के नाम से जाना जाता है, जिनके नेतृत्व में ये विशिष्ट धार्मिक पर्वों के समय एक साथ स्नान करते हैं। अखाड़ों के बीच तमाम विवादों को समाप्त करने के लिए सन् 1954 में अखाड़ा परिषद् का गठन हुआ जिसकी व्यवस्थाओं को अब सभी अखाड़े मान्यता देते हैं।

त्रिवेणी संगम में स्नान, दान, जप, पाठादि की पुण्य तिथियां

दिनांक	महत्व
10 जनवरी	पौष शुक्ल पुत्रदा एकादशी
13 जनवरी	पौष पूर्णिमा
14 जनवरी	मकर संक्रांति (**प्रथम शाही स्नान**)
25 जनवरी	षट्तिला एकादशी
27 जनवरी	सोम प्रदोष
29 जनवरी	मौनी अमावस्या (**प्रमुख शाही स्नान**)
02 फरवरी	वसंत पंचमी (**तृतीय शाही स्नान**)
04 फरवरी	सूर्य सप्तमी
05 फरवरी	भीष्माष्टमी
08 फरवरी	जया एकादशी
10 फरवरी	सोम प्रदोष
12 फरवरी	माघी पूर्णिमा
24 फरवरी	विजया एकादशी
26 फरवरी	महाशिव रात्रि

पौराणिक व ज्योतिषिय आधार

कुम्भ महापर्व का आध्यात्मिक माहात्म्यः समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश को देवताओं की अनुमति से इन्द्रपुत्र जयंत राक्षसों से दूर लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृत प्राप्ति के लिए बारह वर्ष तक घमासान युद्ध हुआ। युद्ध के दौरान छीना झपटी में जयंत के हाथों से अमृत कुम्भ से छलकी बूंदें हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में गिरीं इसलिए इन स्थानों पर कुम्भ और सिंहस्थ महापर्व होता है।

ज्योतिषीय आधारः युद्ध के दौरान अमृत कलश की रक्षा करने में सूर्य, चन्द्रमा और गुरू ने विशेष योगदान किया था। इस अमृत कलश को देवासुर संग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया, गुरू (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल की और चन्द्रमा ने राक्षसों को इससे वंचित रखने का काम किया। यही कारण है कि इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय चार स्थलों पर कुम्भ पर्व मनाए जाते हैं।

ज्योतिषीय गणना से कुम्भ पर्वः सूर्य, चन्द्रमा और गुरू द्वारा विशेष योग के निर्मित होने पर कुम्भ पर्व निम्न चार स्थानों पर आयोजित होता हैः-

प्रयाग -माघ मास की मौनी अमावस्या को मकर राशि में सूर्य-चन्द्र तथा वृष राशि में बृहस्पति हो तो त्रिवेणी के तट पर प्रयागराज में।

हरिद्वार - कुम्भ राशि में बृहस्पति तथा मेष राशि में (उच्चगत) सूर्य हो, तो गंगा के तट पर।

नासिक - सिंह राशि के बृहस्पति तथा सिंह राशि में ही सूर्य हो, तो गोदावरी के तट पर।

उज्जैन - सिंह राषि के बृहस्पति तथा मेष राशि में (उच्चगत) सूर्य हो तो शिप्रा के तट पर सिंहस्थ पर्व।

ठंड का मौसम अपने साथ त्वचा के रूखेपन की समस्या भी लेकर आता है। यही कारण है कि पैरों की देखभाल इसमें विकट समस्या बन जाती है। इनमें भी यदि मधुमेह ग्रस्त लोग इनमें लापरवाही बरतें तो यह अत्यंत गंभीर समस्या बन जाती है। आईये जानें क्या करें मधुमेह से ग्रस्त लोग?

■ टीम SMT

मधुमेह रोगी
ठंड में रखें पैरों का खास ख्याल

मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जो जीवन का पूरा स्वरुप ही बदल कर रख देती है। हृदय रोग आदि के लिये तो यह समस्या की जड़ होती ही है, साथ ही कोई भी घाव होने पर शरीर की सामान्य प्रतिरोधक क्षमता को भी घटाकर उस समस्या को गंभीर कर देती है। वैसे तो अन्य बीमारियो की तरह इसमें भी उम्र का का कोई प्रतिबंध नहीं है। यह किसी भी आयु के व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में ले सकती है, लेकिन फिर भी 40 वर्ष से अधिक आयु वालों में इसका प्रभाव अधिक देखा गया हैं। इस बीमारी से ग्रस्त मरीजों के पैरों में यदि कोई छोटा सा घाव भी हो जाए और इसकी उपेक्षा की जाए तो यह धीरे धीरे इतनी गम्भीर समस्या बन जाता है कि पैर कटवाने की नौबत तक आ जाती है। इस समस्या से बचने के लिये सावधानी ही सबसे बडी समझदारी है।

इनका रखें ध्यान

▸▸ प्रतिदिन पैरों की अच्छी तरह जांच करें व देखें कि कही खरोंच, दरारें, छालें या चोट के निशान तो नही हैं। ध्यान दे कि कही पैर के रंग, तापमान या बनावट में कोई बदलाव तो नही आ रहा है।

▸▸ नहाने के बाद पैरों को अच्छी तरह सुखाऐं विशेष रुप से अंगुलियों के बीच की जगह को। पैरों को सुखा रखने से पैरों में फफूंदी नहीं लगेगी।

▸▸ पैरों की त्वचा को फटने से बचाने के लिये तेल, क्रीम और वेसलीन की पैरों के ऊपर और नीचे अच्छी तरह से मालिश करें। अंगुलियों के बीच इन पदार्थों को न लगाएं क्योंकि इनसे वहां नमी उत्पन्न होती है।

▸▸ यदि पैरों में अधिक पसीना आता हो तो टेल्कम पाउडर का उपयोग करें खासकर अंगुलियों के बीच।

▸▸ नाखून सीधे कांटे और फिर उन्हें फाईल से धीरे-धीरे चिकने करें। नाखून को अंगुली के आकार में ही कांटे। इन्हें बहुत भीतर न कांटे।

▸▸ पैर में मौजूद कार्न वाला भाग प्यूमिक स्टोन से हल्के से घिसकर साफ करें। नहाने के बाद जब त्वचा नरम होती है तब ऐसा करना चाहिए।

▸▸ कभी भी नंगे पैर न चलें। यहां तक कि घर के अंदर भी चप्पल, केनवास के जूते या आरामदायक सेंडल का प्रयोग करें। सैर के लिए सदैव सही जूते पहनें।

▸▸ आरामदायक एवं सही माप के जूते पहने। जूते का अगला हिस्सा चौड़ा होना चाहिए। जूते हमेशा शाम के समय खरीदें, क्योंकि इस समय पैर अपने सबसे बड़े आकार में होते हैं। सदैव जूते पहनते समय सूती मौजे पहने। मौजे में कील, कंकड व कई ऐसी चीज न हो जिससे पैरों को चोट पहुँचे।

ना करें लापरवाही

▸▸ ठण्डे या नम हो गए पैरों को सीधे गरम पानी में या आग के सामने नहीं रखना चाहिए क्योंकि गर्मी से संवेदनशील पैर की त्वचा पर आपकी जानकारी के बगैर गंभीर नुकसान हो सकता है। पानी में पैर डालने से पहले देख लें कि यह बहुत गर्म न हो।

▸▸ कभी भी कार्न या कैलस को ब्लेड, चाकू या कैंची से निकालने का प्रयास न करें, इससे खरोंच, कटाव या घाव हो सकते हैं।

▸▸ कार्न को निकालने के लिए एसिड, चूने आदि का प्रयोग न करें।

▸▸ धूम्रपान न करें।

▸▸ नंगे पैर न चलें, क्योंकि आपको पता चले बिना चोट लग सकती हैं।

जूतों का भी रखें ख्याल

▸▸ जूते हमेशा चौड़े लम्बे और गहरे होना चाहिए।

▸▸ जूते के अंदर पैर रखने के बाद जूते और पैर के बीच में आधा इंच का अंतर होना चाहिए।

▸▸ वे जूते ज्यादा अच्छे होते है जिनमें फीता या वेलक्रो हो।

▸▸ एड़ी की ऊंचाई 5 से.मी. से कम होना चाहिए।

▸▸ जूतों के ऊपर का हिस्सा नरम होना चाहिए।

▸▸ बिना मौजे जूते नहीं पहनने चाहिए।

▸▸ अगर मौजे में जोड़ उभरा हो तो उन्हें उलटकर पहनना चाहिए।

▸▸ जूते की भीतर से रोज जांच करें। जूते के अंदर चोट पहुंचाने वाली चीजें जैसे पत्थर, कील आदि मिल सकती हैं।

भवन निर्माण में होने वाले वास्तुदोष स्थायी रूप से हानि पहुँचाते हैं। अतः हम इनके प्रति तो सतर्क रहते हैं, लेकिन कई ऐसे छोटे-छोटे दोष भी हैं, जो हमारे घर की आंतरिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न होते हैं, लेकिन ये बड़ा नुकसान करते हैं। कारण यह है कि आमतौर पर हम इन्हें समझ भी नहीं पाते। तो आईये देखें ये छोटे-छोटे दोष।

थोड़ी सी सावधानी बड़ा फायदा

किसी भी घर या कार्यालय में, चाहे वह अपना हो अथवा किराये का, यहां तक कि होटल के कमरे में भी 'वास्तु' पूर्ण रूप से प्रासंगिक होता हैं। जिस प्रकार अगर आप किसी नाव में यात्रा कर रहें हों एवं उसमें सूराख हो, तो वह नाव चाहे आपकी अपनी हो या किराये की हो, डूबने का खतरा तो रहता ही है। जिस प्रकार एक लम्बे चुम्बक के दो टुकड़े कर दिये जायें तो प्रत्येक टुकड़ा एक सम्पूर्ण चुम्बक बन जाता है, उसी प्रकार किसी भी भूखण्ड या मकान में विभाजित प्रत्येक भूखण्ड या कमरे का भी अपना चुम्बकीय क्षेत्र बन जाता हैं एवं छोटे कक्ष में भी वास्तु के नियम समान रूप से लागू होते हैं।

क्या रखें सावधानी

▸▸ स्वास्तिक में अत्यधिक ऊर्जा होती हैं। सीधे स्वास्तिक में जितनी शुभ ऊर्जा होती हैं, उल्टे स्वास्तिक में उतनी ही अशुभ ऊर्जा होती हैं। अतः स्वास्तिक का प्रयोग अत्यन्त सोच समझ कर ही करना चाहिये।

▸▸ गणपति, लक्ष्मी एवं स्वास्तिक तो घर में स्थिर ही होने चाहिये। कमरों या अलमारियों के दरवाजों पर उनके स्टीकर या चित्र लगा कर, बार-बार दरवाजे खोलने या बन्द करने पर, जरा सोचिये क्या होता है?

▸▸ घर की छत का सारा भार बीम झेलते हैं एवं बीम के नीचे लगातार बैठना या सोना, बोझ के कारण मानसिक तनात का कारण बन सकता हैं। अगर बीम ढकने सम्भव न हों तो, उनकें नीचे तीन पिरामिड लगाने पर यह दोष समाप्तप्राय हो जाता है।

▸▸ अपने घर के पूजा के स्थान पर देवताओं की तस्वीरों को एक-दूसरे के सामने या ऊपर-नीचे नहीं रखना चाहिये, थोड़ी-थोड़ी दूर पर अगल-बगल ही रखना चाहिये।

▸▸ स्नानघर में लाल, नारंगी या हरे रंग की टाईल्स या पत्थर का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। अग्नि तत्व के ये रंग, वहां व्याप्त जल तत्व के साथ तालमेल नहीं रख पाते एवं उपयोंगकर्ता की मानसिक स्थिति पर भी विपरीत प्रभाव डाल सकते हैं।

▸▸ सोने-चांदी के व्यवसायियों को दुकान में लाल या नारंगी रंग नहीं करवाना चाहिये। ये रंग अग्नि के प्रतीक हैं एवं अग्नि धातु कों नष्ट करती है।

▸▸ टूटे दर्पण में शृंगार नहीं करें, उन्हें यथाशीघ्र हटा देना चाहिये।

▸▸ शयनकक्ष की दीवार पर अधिक दिनों तक दरारें नहीं पड़ी रहने देनी चाहिये। बहुधा ये दरारें दीर्घ व्याधियों का कारण बन जाती हैं।

▸▸ मुख्य द्वार की देहरी एवं द्वार के आस पास की दीवारें टूटी-फूटी न रखें। भाग्य वृद्धि में यह विचित्र रूप से रूकावट पैदा कर सकती हैं। मुख्य द्वार के बाहर की दीवारें स्वच्छ एवं सुन्दर रखें।

▸▸ नव विवाहित दम्पत्ति को ईशान के कक्ष में नहीं सोना चाहिये। अगर मजबूरी वश सोना ही पड़े, तो पलंग या गद्दा ईशान से सटाकर कदापि नहीं लगाना चाहिये। पुरूष संतान प्राप्ति में यह दोष विशेष रूप से बाधक पाया जाता है।

▸▸ घर में जहाँ-तहाँ रखी आलमारियों पर लगे शीशे वहाँ की ऊर्जा को असंतुलित कर देते हैं। फलस्वरूप वास्तु सम्मत घर होते हुए भी वांछित समृद्धि एवं सफलता प्राप्त नहीं होती है।

▸▸ दरार पड़ी दीवारों पर देवी देवताओं के या परिवार के सदस्यों के चित्र न लगायें, यह टूटे पलंग पर आसीन होने के समान है।

▸▸ पूजा स्थान का प्रबन्ध ईशान में स्थापित करना एक परिपाटी सी बन गई हैं। परन्तु ईशान में पूजा का भारी सिंहासन या अन्य सामान न रखें। यह दोष आपकों कभी महसूस नहीं होता, फिर भी अपने विपरीत परिणाम देता है। पूजा स्थान का मध्य पूर्व में ही सर्वोत्तम होता है।

▸▸ रसोईघर के ईशान कोण में चूल्हा सटाकर भोजन कदापि न बनायें, सम्पूर्ण प्रयास के बावजूद, यह छोटा सा वास्तु दोष धन की बरकत में बाधा बना रहता हैं।

▸▸ ईशान पुरुष सन्तान से सम्बन्धित दिशा है। घर या कमरे का ईशान जितना ही हल्का, खुला एवं स्वच्छ होगा, सन्तान उतनी ही आज्ञाकारी, मेधावी एवं उज्ज्वल होगी।

▸▸ कार्य की अधिकता के कारण कार्यालय की मेज के नीचे कागजात, फाईलें, किताबें, ब्रीफकेस आदि रखना आजकल सामान्य बात हो गई। जरा सोचिये, वहाँ झाड़ू एवं जूते चप्पल का स्पर्श भला व्यवसाय या अध्ययन में तरक्की दे सकता है?

महामारी कोरोना वायरस के साथ आरम्भ हुआ ऑनलाइन जॉब अथवा नौकरी का चलन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इसके बावजूद आम मानसिकता के कारण ऑनलाइन जॉब/नौकरी करने वाले नौकरीपेशा लोगों को समाज और परिवार द्वारा विशेष महत्व नहीं दिया जाता क्योंकि वो लोग सारा दिन घर पर ही बैठकर अपने ऑफिस का काम निपटाते हैं। जबकि वे इसके साथ दौहरी जिम्मेदारी निभाते हैं। इससे नौकरी के साथ घर परिवार की मदद भी हो जाती है। महिलाओं के लिये तो ऑनलाइन जॉब करना वरदान साबित हुआ है फिर भी वर्तमान में पुरुषों के लिए ऑनलाइन जॉब करना उनकी योग्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। ऐसे में यह विचारणीय हो गया है कि क्या ऑनलाइन कार्य के ऑफलाइन कार्य की तुलना के कमतर समझना उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

ऑनलाइन जॉब को ऑफलाइन जॉब की तुलना में कमतर समझना उचित अथवा अनुचित ?

ऑनलाइन जॉब यानी 24x7 ऑन ड्यूटी

ऑनलाइन जॉब करने वाले ऑफिस के साथ-साथ घर और बाहर के दूसरे कार्यों में भी अपना सहयोग दे सकते हैं लेकिन ऑनलाइन जॉब में उनके ऑफिस के कार्य की कोई समय सीमा नहीं होती है बल्कि वो 24x7 ऑन ड्यूटी रहते हैं। अधिकांशत उन्हें जो कार्य सौंपा जाता है उसकी समयावधि निर्धारित कर दी जाती है जो कि कार्य के लिए आवश्यक समय से कम ही होती है जिससे उन पर कार्यभार बढ़ जाता है। ऑनलाइन जॉब देकर कंपनी अपने ऑफिस के खर्चे तो बचाती ही है साथ ही अपने कर्मचारियों का समय भी अधिक लेती है। यह मुनाफाखोर कंपनी वाले कर्मचारियों को ऑनलाइन जॉब की सुविधा देकर दुगुना वसूलते हैं। जबकि ऑफलाइन जॉब में ऑफिस की समय सीमा और काम की सीमा निर्धारित होती है। कंपनी अपने कर्मचारियों का नाहक फायदा नहीं उठा सकती, कर्मचारियों से अधिक काम करवाने पर पार्ट टाइम और बोनस देना पड़ता है। ऑफलाइन जॉब करने वाले घर परिवार में अपना रुतबा दिखाते हैं क्योंकि वो ऑफिस जाते हैं जबकि ऑनलाइन जॉब करने वाले अपेक्षाकृत अधिक ही काम करते हैं। ऑनलाइन जॉब करने वाले ऑफिस के लिए ही नहीं घर और परिवार के लिए भी 24x7 ऑन ड्यूटी रहते हैं। जैसे एक गृहलक्ष्मी का कार्य 24x7 चलता ही रहता है वैसे ही ऑनलाइन जॉब करने वाले हमेशा व्यस्त रहते हैं और ऑफिस का काम करते हुए परिवार के साथ मस्त रहते हैं फिर भी उन्हें ऑनलाइन जॉब करने वालों से कमतर आंकना अनुचित है। हर सिक्के के दो पहलुओं की तरह ही ऑनलाइन और ऑफलाइन जॉब के नुकसान और फायदे हैं पर दोनों के कार्यों की तुलना करना अनुचित है।

❐ **सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव, नाशिक

दोनों पक्षों का ही फायदा

निःसंदेह अनुचित है, इसे कमतर समझना क्योंकि ऑनलाईन जॉब किसी भी हिसाब से किसी स्तर पर ऑफलाईन जॉब से कमतर नहीं है। ऑफलाईन में ऑफिस में जाकर बैठ जाना के अपेक्षा पूर्ण रूचि से उस काम को करना, काम की क्वालिटी में एक बड़ा अंतर पैदा कर देता है। वर्तमान समय के अनुसार तो आनलाईन जॉब ऑफलाईन से हर मामले में भारी पड़ता है।

कितना फर्क है दोनों स्थितियों में- ऑनलाईन जॉब में व्यक्ति जब उसका दिमाग पूरी तरह उर्जा से परिपूर्ण होता है, उसी समय वह काम करके अपनी सर्वाधिक उत्पादकता दे सकता है। 24 घंटे के समयचक्र में से सुबह के समय कुछ वक्त ऐसा होता है, जबकि ऊर्जा अपने चरम पर रहती है। ऐसे वक्त में कम से कम समय में किया गया अधिकतम कार्य पूरी क्वालिटी से किया जा सकता है। जबकि ऑफलाइन में उस व्यक्ति की इच्छा ज्यादा काम करने हो या नहीं हो, काम की क्वालिटी कैसी होगी, कार्य कितना पूर्ण होगा संदेहास्पद ही रहता है। यानि कार्य की पूर्णता की कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। हम चाहे आज कितनी भी इस बात को तुलनात्मक कम में देखें, पर यह शाश्वत सत्य लगेगा कि आने वाला युग बहुतायत में ऑनलाईन वाला ही होगा क्योंकि कम्पनी या संस्था को ऑफिस ब्लॉक का भारी-भरकम किराया, उसकी मेटीनेंस, बिजली के बड़े-बड़े बिल, सुरूचिपूर्ण फर्नीचर, साज सज्जा की आवश्यकता आदि बड़े खर्चों से बचाव हो जाता है। जबकि कर्मचारी की तरफ से भीड़ ट्रेफिक्र में जाने से बचने पर उसकी ऊर्जा का संचय होता है जो कार्यकुशलता के रूप में परिलक्षित होता है।

❐ **सुरेन्द्र बजाज,** जयपुर

स्वयं के लिए भी लाभदायक नहीं

वैसे तो यह विषय ऑनलाइन जॉब और आफलाईन जॉब में तुलना करना ही गलत है। ऐसा माना जाता है आनलाइन जॉब करने से व्यक्ति अपने परिवार के साथ समय बिता पाता है, लेकिन यह सही नहीं है। उसका समय उसका नहीं आफिस का होगा। जबकि ऑफलाईन जॉब में उसके जॉब का समय जब तक वह आफिस में काम कर रहा होगा तब तक ही रहेगा, न कि उस समय जब वह अपने परिवार के साथ समय बांट रहा हो। आनलाइन जॉब का चलन तब-तक सही प्रतीत होता था जब तक इस महामारी करोना वायरस का असर व्याप्त था। आज के समय में आफिस के कार्यों का दवाब कितना होता है, यह किसी से छुपा नहीं है। यही दवाब जब ऑनलाइन जॉब के माध्यम से घर आ जायें तो उस व्यक्ति का अपने परिवार और समाज के लिए समय का बचाना असम्भव सा लगता है।

❐ **मुकेश कुमार लखोटिया,** सरदार शहर (राज.)

कमतर नहीं है ऑनलाइन जॉब

कोरोना के समय से ऑनलाइन जॉब का प्रचलन बहुत ज्यादा बढ़ गया है। आमतौर पर लोगों को यह लगता है कि ऑनलाइन जॉब ऑफलाइन जॉब के मुकाबले निम्न स्तर का होता है, पर यह बात पूरी तरह से गलत है। ऑनलाइन जॉब में उल्टा जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ जाती है। ऑफलाइन जॉब में इंसान ऑफिस का समय खत्म होते ही घर आ जाता है और फिर उसे कोई काम नहीं करना पड़ता। ऑनलाइन जॉब में आपके सुपीरियर आपको कभी भी कॉल कर सकते हैं या जॉब असाइन कर सकते हैं । इस तरह यह 24 इन टू 7 जॉब हो गया है। ऑनलाइन जॉब में इंसान काम के साथ-साथ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी निभाता है। ऑनलाइन जॉब में भी उतनी ही मेहनत और एकाग्रता लगती है जितनी ऑफलाइन जॉब में इसलिए इसका मजाक जो लोग उड़ाते हैं वह बिल्कुल ही सराहनीय नहीं है। ऑनलाइन जॉब में और एक फायदा होता है, इसमें कंपनी का कॉस्ट कंट्रोल भी होता है। लाइट बिल, एयर कंडीशनर और लंच डिनर का खर्चा भी बच जाता है। इससे कंपनी का प्रॉफिट ऑफ मार्जिन बढ़ जाता है और कंपनी की ग्रोथ के साथ-साथ उसके कर्मचारी और देश का भी ग्रोथ रेट बढ़ जाता है। यह हमारे देश की जीडीपी के लिए बहुत अच्छा है। इसलिए ऑनलाइन जॉब किसी भी तरह ऑफलाइन जॉब से कम नहीं है बल्कि उससे बेहतर है।

❐ **मुकुंद लाहोटी,** नासिक

काम तो काम ही है

व्यक्ति चाहे कार्यस्थल पर जाकर कार्य करे या घर से, उसकी मेहनत और योग्यता मे कोई अंतर नही पड़ता। घर से काम करने वाले व्यक्ति के लिए यह भ्रांति है कि उसे इतने सख्त अनुशासन की जरूरत नही है, जबकि प्रतिस्पर्धा के युग में हर जगह कार्य प्राप्त करना और उसे बनाए रखना चुनौती पूर्ण कार्य है। महिलाओं के लिए तो ये भी बड़ी समस्या है कि घर से काम करें तो घर वालों को उसके अनुशासन की बात मुश्किल से समझ आती है। ऑनलाइन काम मे भी समय पर मीटिंग मे उपस्थित होना और समय पर काम पूरा करके भेजना जरूरी होता है पर ससुराल वालों को ये समझाना कई बार कठिन हो जाता है। लड़कों के लिए तो और भी बड़ी समस्या है, लड़की घर से काम करे तो फिर भी लोग इसको ठीक समझते हैं किंतु अगर लड़का घर से काम करे तो उसका घर रहना सबको अखरता है। क्योंकि वर्षों से समाज पुरुषों को दिन भर घर से बाहर जाकर कमाते हुए देखने का अभ्यस्त हो चुका है। हमें इस दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है। सबसे पहले जो घर से काम कर रहे हैं वो खुद अपने काम को अनुशासित ढंग से करें। काम का समय और स्थान निर्धारित करें और नियत समय पर नियत स्थान पर काम करें। उस समय अति आवश्यक होने पर ही मोबाइल पर व्यक्तिगत फोन और मेसेज करें। जब हम खुद अपने काम को महत्व देंगे तब दूसरे भी इसे महत्व देंगे। परिवार को भी शांति से समझाने का प्रयास करें कि काम समय पर करना जरूरी है। लोगों को भी ये समझने की जरूरत है कि किसी व्यक्ति की जीविका उसके लिए महत्वपूर्ण है, हम उसे धन नही दे सकते तो उसे उसका कार्य करने दें। ना तो कोई काम छोटा बड़ा होता है ना काम करने के स्थान से उसका महत्व कम होता है।

❐ **नम्रता माहेश्वरी,** पाली

कमतर नहीं ऑनलाईन जॉब

जॉब, सर्विस और नौकरी एक ऐसा कार्य है जो कि न केवल परिवार को आर्थिक रूप से अपितु मानसिक रूप से भी संबल प्रदान करता है। जॉब तो जॉब ही है फिर चाहे वह ऑनलाइन हो या ऑफलाइन, जॉब से पैसा आता है और जो जॉब करता है, उसकी संतुष्टि पर निर्भर करता है, कि वह किस प्रकार से जॉब करने में संतुष्ट महसूस करता है। यदि उसे शारीरिक व मानसिक रूप से ऑनलाइन जॉब करने में कोई तकलीफ नहीं है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है और यदि उसे ऑफलाइन जॉब करने में सहज महसूस होता है तो उसे ऑफलाइन को प्राथमिकता देनी चाहिए। अपने घर, परिवार व स्वयं को सहज रूप से जो तरीका स्वीकार है, उसे सफलता दिलाने में सार्थक सिद्ध होता है, फिर चाहे वह ऑनलाइन हो या ऑफलाइन। सत्यता यही है कि ऑनलाइन जॉब किसी भी मायने में ऑफलाइन जॉब से कमतर नहीं है, अपितु यह तो जॉब करने वाले पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार की जॉब स्वीकार करें, जिसे करने में सहज महसूस करें।

❐ **ममता लखानी,** नापासर

अनुचित है कमतर आँकना

ऑनलाइन जॉब को ऑफलाइन जॉब से कमतर आंकना अनुचित है, क्योंकि इसमें भी व्यक्ति को समान तन्मयता और कौशल के साथ काम करना पड़ता है। ऑनलाइन कार्य में व्यक्ति को न केवल अपने पेशेवर दायित्व पूरे करने होते हैं, बल्कि घर और परिवार की जिम्मेदारियों में भी सहयोग देना पड़ता है। इससे पुरुषों को भी महिलाओं की तरह दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। घर और ऑफिस, दोनों की अपेक्षाओं के बढ़ने से कर्मचारियों पर अधिक काम का दबाव रहता है। ऑफिस यह मानकर चलता है कि घर से काम करने पर समय की बचत हो रही है, जिससे वर्कलोड और बढ़ा दिया जाता है। इन परिस्थितियों में ऑनलाइन काम करने वालों को कमतर आंकना न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी अनुचित है।

❐ **डॉ. सविता कालिया,** जयपुर

बहुमुखी विकास भी जरूरी

परिस्थितियों के आधार पर जॉब का चुनाव निर्भर करता है, कार्य का रूप चाहे जो हो उसे कमतर आंकना उचित नहीं है। ऑफलाइन जॉब में हमारे परिचय का दायरा विस्तृत होता है, अलग अलग व्यक्तियों से मेल मिलाप होने से हमें हर क्षेत्र की जानकारी पता चलती है, जिससे हमें वर्तमान दौर की हर गतिविधियों के बारे पता रहता है। ऑफलाइन जॉब में हमारे कई मित्र बनते हैं उनके साथ छुट्टियों में कुछ प्रोग्राम बनाए जाते हैं। यह मित्रता मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी संजीवनी का काम करती है। बाहर जाते समय हम व्यवस्थित तैयार होकर जाते हैं, अपने आप को सुव्यवस्थित रखने से आत्मविश्वास भी बढ़ता है। ऑनलाइन जॉब में व्यक्ति चार दिवारो के भीतर सिमट कर रह जाता है। वह चाहे जितना ही होशियार रहे किंतु हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर उसे आसानी से नहीं मिलते। उसका जीवन यंत्रवत हो जाता है, इसमें आर्थिक रूप से बचत भले ही हो किंतु मानसिक रूप से एक से माहौल में उबाऊ महसूस होता है। फिर भी परिवार के वातावरण और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर जॉब का चुनाव करना श्रेष्ठ होगा, कार्य के रूप के बीच तुलना करना अनुचित है।

❐ **राजश्री राठी अकोला,** महाराष्ट्र

ऑफलाईन जॉब का अपना मजा

आधुनिक युग में नौकरी पेशा का चलन बढ़ता जा रहा है। हर व्यक्ति की अलग-अलग सोच है, कोई व्यापार को उत्तम मानता है तो कोई नौकरी को, कि हमें तो सिर्फ काम करना है हमारी सैलरी फिक्स है कंपनी को चाहे फायदा है अथवा नहीं सिर्फ अपने काम से हमें मतलब है। पहले नौकरी में सभी को एक ऑफिस और पद निश्चित होता था और समय अनुसार निश्चित समय पर जाना पड़ता था परंतु कोरोना के पश्चात ऑनलाइन अर्थात वर्क फ्रॉम होम का चलन हुआ और अभी भी कई ऑफिस का वर्क फ्रॉम होम चल ही रहा है। पहले नौकरी करने वाले को ऑफिस हमेशा जाना पड़ता था, घर पर छुट्टी के दिन कोई कार्य नहीं होता था। परंतु ऑनलाइन कार्य करने में सभी कार्य घर से ही किया जा रहा था और इसमें सुविधा है कि आदमी अपना कार्य घर बैठे ही कर ले। काम की सुविधा है तो जाने आने का वक्त खराब नहीं होता और समय की बचत होती है। सिर्फ यही सोचा जाए तब तक तो ऑनलाइन काम सही है, चाहे महिला हो चाहे पुरुष यह तो सभी पर लागू होता है। परंतु ऑफिस जाकर जो कार्य करने का क्रेज होता है वह अलग ही होता है। घर बैठकर कार्य करने में उतना उत्साह नहीं होता। हां काम अवश्य पूरा कर लेंगे क्योंकि वह तो ड्यूटी है और एक कूपमण्डूक की भांति ही व्यक्ति रह जाएगा। ऑफिस की जो शनिवार रविवार की छुट्टी होती है उसका उत्साह बीवी बच्चों को रहता है कि कब शनिवार या रविवार आए और हम घूमने जाएं। जब आप घर पर ही कार्य करेंगे तो इन सब का उत्साह खत्म हो जाएगा। घर से ही कार्य करने पर ऑफिस के तौर तरीकों से भी इंसान वंचित रह जाता है। तैयार होकर जाने का जो क्रेज होता है, वह समाप्त हो जाता है। ऑफिस जाकर कार्य करने का आनंद ही अलग होता है। चार जनों से मिलना बातें करना व चार जनों के बीच में चाय नाश्ता करना, वह आनंद अलग ही होता है। अपने घर के बंद कमरे में कार्य करने से बाहरी दुनिया का कुछ पता नहीं लगता। हां महिलाओं के लिए ऑनलाइन के कार्य में सुविधा हो सकती है कि वह इस बीच कुछ घरेलू कार्य कर सकती हैं। पति-पत्नी की नौकरी अलग-अलग जगह है और ऑनलाइन काम करना है तो वह एक साथ रहकर कर सकते हैं। मगर ऑफिस जाकर कार्य करना अपने आप में एक अलग ही दैनिक जीवन में सुकून देने वाला होता है। मेरे विचार से ऑफलाइन को या ऑनलाइन को प्राथमिकता हम नहीं दे सकते। समय के अनुकूल अगर कभी ऐसा करना पड़े तो वह उपयुक्त है। अन्यथा ऑनलाइन जॉब को भी कम तो नहीं आंका जा सकता क्योंकि काम तो उसमें भी पूरा करना ही पड़ता है।

❐ **उर्मिला तापड़िया,** नोखा, बीकानेर (राजस्थान)

ऑनलाइन जॉब समय की मांग

कोरोना काल के बाद जो ऑनलाइन जॉब का ट्रेंड आया हैं सचमें यह बहुत अच्छा ट्रेंड है। यह तरीका तो इससे पहले ही आना चाहिए था मगर कहते है ना हर बात का उगम किसी खास कारण के बाद ही होता है। उसी तरह कोरोना काल में जब लॉक डाउन का समय था और सभी छोटी मोटी कम्पनियाँ आर्थिक नुकसान सह रही थी, तब यह एक नायाब तरीका लोगों के ध्यान में आया कि जो काम घर बैठकर भी हो सकता है तो क्यों ना हम इस तरह की कोशिश करें। उन लोगों नें ऑनलाइन काम शुरू कर अपनी कंपनी का कामकाज भी शुरू रखा और अपने कर्मचारियों को आर्थिक नुकसान होने से भी उनको बचाया। आज देश और दुनिया में ऐसी कई कम्पनियाँ हैं, जिन्हें अपना कामकाज घर बैठे ऑनलाइन कराने से भी उनको कोई फर्क नहीं पड़ता है। उल्टा ऑनलाइन काम कराने से जो कंपनी के कर्मचारी हैं, उनके समय और देश के ईंधन की तो बचत हो ही रही है साथ में गाड़ियों का आवागमन कम होने से प्रदुषण और रास्ते के ट्रैफिक जाम या एक्सीडेंट के प्रमाण में भी कमी आयी है। ऑनलाइन काम को कम या छोटा समझना सरासर गलत धारणा है क्योंकि अगर ऑनलाइन काम कराने से किसी कंपनी को नुकसान होता तो क्यों वह अपने कर्मचारियों को हफ्ते के कुछ दिन ऑनलाइन काम कराकर पूर्ण वेतन देती। जहाँ शारीरिक कार्य करना हो या जहां ऑफिस में जाकर ही कार्य करने की जरुरत हो वहां तो ऑनलाइन कार्य संभव ही नहीं है। मगर बहुत सारे ऐसे कामकाज हैं जो आप बाहर रहकर या कहीं भी बैठकर पूरा कर सकते हैं। इससे आपके काम की कार्यक्षमता भी बढ़ती है और आपका कार्य भी तेजी से होता है। साथ में आप अपने परिवार के साथ भी समय व्यतीत करते हैं जिससे आपके व्यावसायिक सम्बंधो के साथ-साथ आपके पारिवारिक सम्बन्ध भी अच्छे रहते है इसलिए ऑनलाइन कामकाज को कमतर आंकना या अलग नजर से देखना सरासर गलत है। आज के समय की यह माँग है कि जो काम ऑनलाइन हो सकते है उसको ऑफलाइन क्यों करायें?

❐ **सपना श्यामसुंदर सारडा,** सुरेंद्रनगर (गुजरात)

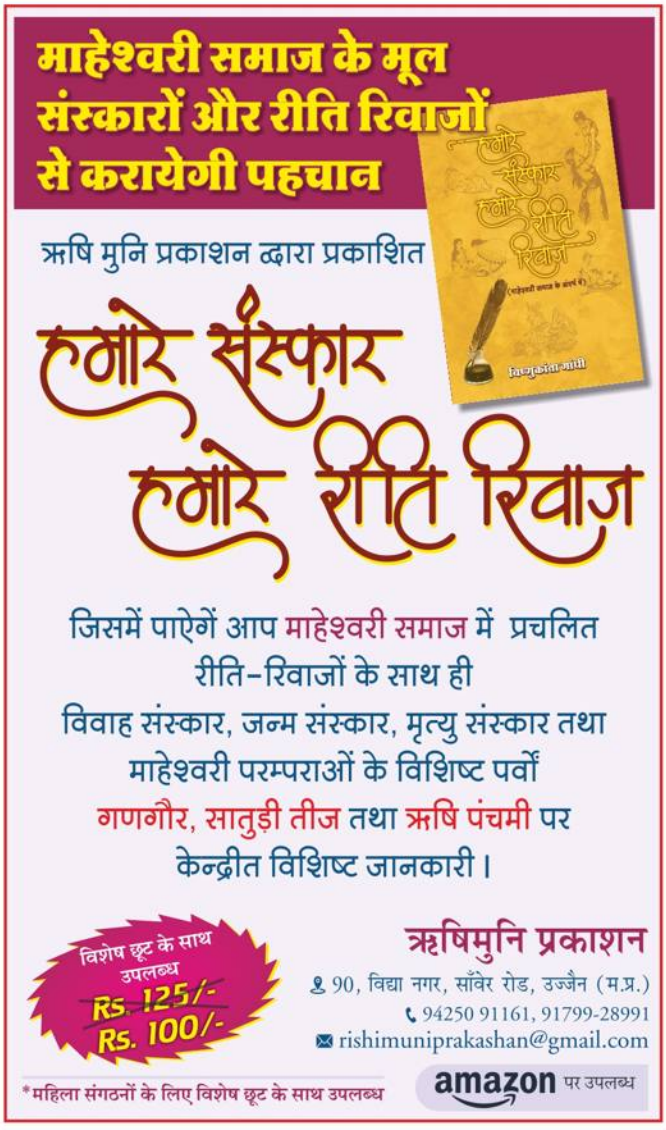

राह जिंदगी की...

प्रो. कल्पना गगडानी मुंबई

नया साल, नई सोच के साथ

2024 गया, 2025 आया। साल दर साल, दशक दर दशक, सदी दर सदी तीव्र गति से सभ्यता बदलती रही और धीमी गति से संस्कृति अर्थात रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, तौर-तरीके नौकरी-व्यवसाय, लालन पालन, परिवार- समाज, सोच-तकनीक।

जब बदलाव की रफ्तार धीमी थी, तब अहसास ही नहीं हुआ कि कुछ बदल रहा है। बदलाव भी धीरे-धीरे हमने स्वीकार कर लिया। आज के दौर की तकनीकी क्रांति, इन्फरमेशन टेक्नोलॉजी, वैश्विक दुनिया की व्यापार भावना, बाजार की संस्कृति, सोशल मीडिया की सहज उपलब्धता ने गांव शहर ही नहीं, समस्त देशों की दूरियां समाप्त कर दीं। सर्व संस्कृतियां अपने रीति रिवाज, खान-पान, पहनावा, सोच-विचार से एक हो गई।

जीवनार्जन के तरीके, सलीके पूरी तरह बदल गये। दिनचर्या बदली तो जरुरतें भी बदलने लगीं, कहीं मजबूरी है तो कहीं देखा देखी। नई पीढ़ी नये जोश, नई जरूरतों; नये अवसरों के साथ आगे बढ़ रही हैं। उनकी अपनी समस्याएं हैं, जरूरतें हैं, मजबूरियां हैं। आवश्यक बदलाव उसकी नियति है। पुरानी पीढ़ी को उन्हें अवसर तो देना ही होगा साथ ही ढलती उम्र में अपनी शारीरिक और मानसिक जरूरतों का भी ध्यान रखना होगा।

बालक, युवा और वृद्ध तीनों ही समाज के महत्वपूर्ण घटक हैं। इनमें से एक भी **नकुरूपन** का शिकार होगा तो सामाजिक व्यवस्था डगमगा जायगी। सामाजिक व्यवस्था को बिगड़ने या डगमगाने के पहले संभालना सामाजिक संस्थाओं का प्रथम दायित्व है।

हमारा माहेश्वरी (मारवाडी) समाज इस बदलते दौर में भी अपनी सुदृढ़ पारिवारिक परंपरा, धार्मिक, सांस्कृतिक परम्परा और व्यावसायिक साख को सहेज कर रखने का सफल प्रयत्न कर रहा है। बदलती जीवन शैली को सहज समझाने की तैयारी प्रायः सभी परिवारों में नजर भी आ रही है और उसके सकारात्मक परिणाम भी नजर आ रहे हैं। दूरदृष्टिता यह दिखा रही है कि व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर मात्र से हम इन बदलती व्यवस्था का संपूर्ण तेल नहीं निकाल पायेंगे। इसका सुंदर समाधान सामाजिक स्तर पर सामाजिक संस्थाओं को भी सोचना होगा।

गहन समस्या

यह जो हम सब देख ही रहे हैं कि शत प्रतिशत व्यापारी समाज से हमारी पीढ़ियाँ तेजी से नौकरीपेशा समाज में कई दशकों से परिवर्तित हो रही हैं। नजदीकी शहरों, अपने प्रदेशों तक पहले ये सीमित थीं। तीज त्योहारों, छुट्टियों में एक-दूसरे स्थान आते जाते व्यवस्था सहनीय सी थी।

ग्लोबलाइजेशन और लिबरलाईजेशन के कारण और आईटी की नई दुनिया में नौकरी के उच्चतम स्तरों ने अगली पीढ़ी से ये सुविधा छीन ली है। अब अधिकांश परिवारों में पति पत्नी दोनों का कामकाजी होना, दूर दूसरे शहरों में रहना, बच्चों की बदलती हुई शिक्षा पद्धति और इन सबसे भी अधिक विदेशों में नौकरी और व्यवसाय के सुनहरे अवसरों ने ताश के पत्तों की तरह पारिवारिक व्यवस्था को गिरा दिया है।

हमारे समाज में भी सहस्त्रों वृद्ध दम्पत्ति अकेले जीवनयापन कर रहे हैं। शारीरिक परेशानियां जो उम्र से शुरु से थीं, और मानसिक रुप से हम जिसके लिये तैयार भी रहते थे, अब उससे अधिक मानसिक परेशानियां हैं। अकेलेपन का अहसास शारीरिक पीड़ा से कई गुना अधिक है।

युवा पीढ़ी बेटे-बहू दूर हैं। माता-पिता के लिये उस दूरी पर वे चिंतित भी हैं। चाहते हैं माता-पिता अच्छा जीवन जियें। उसके लिये वे पैसा भी खर्च करने के किये तैयार हैं। पर क्या करें, कैसे करें, कौन करें? समस्या ये गंभीर है। वृद्धों ने भी अपने बुढ़ापे की आर्थिक सुरक्षा अच्छे से बना रखी है। पर अकेले इस अवस्था में उनके लिये ये संभव नहीं'। कौन बनायेगा इसे संभव?

परिवार लाचार हैं, तो सहारा क्या होगा? सहारा बनना होगा, सामाजिक संस्थाओं को। हमारे समाज ने प्रगतिशीलता की राह सदा पकड़ी है। धर्मशालाओं, सामाजिक भवनों के साथ समय रहते छात्रावासों का निर्माण किया है। आज वक्त की मांग है कि हम इन वृद्ध दंपत्तियों के लिये मुफ्त और सशुल्क निवास व्यवस्था पर विचार करें। सामाजिक भवन जो इतने सारे हमार पास हैं, जहां अब अधिक मांगलिक कार्य नहीं होते उन्हें भी परिवर्तित किया जा सकता है। सर्वसुविधायुक्त अच्छे आवास बनाये जा सकते हैं, जहां सामाजिक बंधु मिलजुलकर एक सामाजिक परिवार संग आनंदमयी जीवन जी सकें।

इसका सहज सुंदर विस्तार कैसे हो सकता है, साल की शुरुआत संग अगले अंक में हम भी सोचेंगे और आप भी सोचिये। अभी तो नववर्ष की नवीन सोच की शुभकामना !

माहेश्वरी समाज में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली
अन्तर्राष्टीय स्तर की मासिक पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

को सम्पूर्ण राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं गुजरात में जिला तथा तहसील स्तर पर

ऊर्जावान एवं कर्मठ प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

आत्मविश्वास से भरपूर व पर्याप्त
शैक्षणिक योग्यता वाले उम्मीदवारों को प्रथमिकता
आकर्षक कमीशन/ वेतन एवं प्रेस कार्ड देय होगा।
इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा पूर्ण जानकारी के साथ ई-मेल करें।

smt4news@gmail.com
मो. - 094250-91161

योग मुद्रा वह है, जो जीव की किसी भी अवस्था में की जा सकती है और चमत्कारिक लाभ देती है। इस श्रृंखला में प्रस्तुत है, उषा मुद्रा जो जीवन से आलस्य को दूर कर ऊर्जा का संचार करती है।

आलस्य को दूर भगाती उषा मुद्रा

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

उषा मुद्रा एक योग मुद्रा है। उषा का अर्थ है 'भोर' यानी सुबह। यह मुद्रा सूर्य के गुणों को दर्शाती है और मन और दिल को रोशन करती है। यह मुद्रा ध्यान के दौरान एक नया संकल्प, एक नई शुरुआत करने में मदद करती है। यह अंधकार के बाद होने वाली रोशनी का भी प्रतीक है। अगर सुबह उठने में परेशानी होती है या आलस बहुत ज्यादा आता है, निष्क्रियता अथवा सुस्ती जैसी परेशानी से जूझ रहे हैं, तो यह मुद्रा बेहद फायदेमंद है। उषा मुद्रा, मानव शरीर में मौजूद स्वाधिष्ठान चक्र को जागृत कर देती है। यह चक्र सृजनात्मकता, कामुकता और रचनात्मकता से जुड़ा है और आपमें इन गुणों से जुड़ी ऊर्जा को स्वस्थ करती है। तनाव और चिंता को कम करना, नींद में सुधार करना, और ऊर्जा बढ़ाना, इसे 'ब्रेक-ऑफ-डे' मुद्रा के रूप में भी जाना जाता है।

कैसे करें: आरामदायक स्थिति में बैठ जाएं। दोनों हाथों की उंगलियों को आपस में फंसा लें। हथेलियों की दिशा ऊपर की ओर रखें। दाएं हाथ का अंगूठा बाएं हाथ के अंगूठे के ऊपर रखकर हल्का सा दबाव बनाएं। जिन लोगों को सवेरे उठने में आलस्य महसूस होता है, वे सुबह उठते ही इस मुद्रा को बनाकर हाथ सिर के नीचे रखते हुए 5-6 बार धीमी-गहरी-लंबी सांस के साथ आंखों और मुख को खोलें। दोनों हाथों की उंगलियों को आपस में फंसा लें।

क्या है इसके लाभः यह चेतना और जागरूकता को बढ़ाती है व स्पष्टता, ज्ञान, और चेतना की उच्च अवस्था प्राप्त होती है। यह ऊर्जा का विकास करती है। मानव शरीर में मौजूद स्वाधिष्ठान चक्र को संतुलित करती है। यह सृजनात्मकता, कामुकता, और रचनात्मकता से जुड़ी ऊर्जा को स्वस्थ करती है। हार्मोन प्रणाली संतुलित रहती है। हार्मोनल असंतुलन के सभी पीड़ित अंतःस्रावी तंत्र के लाभों को प्राप्त करते हैं। स्वस्थ मासिक धर्म चक्र बनाए रखने में यह मदद करती है। यह सुबह उठने में परेशानी या आलस की समस्या को दूर करती है व चुस्ती-फुर्ती लाती है।

सही
जन्म कुण्डली
ही बता सकती है सही
भविष्य

ऋषि मुनि
वैदिक सॉल्युशन्स

90, विद्या नगर, साँवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
94250 91161 rishimuniprakashan@gmail.com

जन्म कुण्डली की सुक्ष्म गणनाओं के लिए विश्वसनीय नाम

भारत के प्रख्यात ज्योतिष विदुषियों द्वारा प्रमाणित सॉफ्टवेयर द्वारा ज्योतिष पत्रिकाओं में अग्रणी

१२ ग्रहों की स्थिति, उनके विवरण, षोड़ष वर्ग, सुदर्शन चक्र, मैत्री चक्र, षडबल एवं भावबल, प्रस्तारक अष्टक वर्ग सारिणी, अष्टक वर्ग सारिणी, विशोंतरी दशा, महादशा, प्रत्यंतर दशा एवं सुक्ष्म दशा सहित, कृष्णमूर्ति पद्धति, ग्रहों के उप स्वामी, ग्रहों की स्थिति लग्नानुसार, वर्षफल, वैदिक ग्रंथों के अनुसार नक्षत्र फल, साढ़े साती विवरण एवं उनके उपाय, रत्न विचार एवं समस्याओं पर उपचार, योग संग्रह, कुण्डली योग का विवरण, परिणाम सहित कुण्डली मिलान।

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

उजाले री यादां साथे राखो सा..

खम्मा घणी सा हुकुम नए साल रा राम राम..

हुकुम नयो साल, एक नई किताब रे पेहले पन्ने री तरह हुवें। हर नयो साल आपाने यों मौकों देवें कि आपा पुराणी गलतियों ने पीछे छोड़, नए अध्याय री शुरुआत करां।

हुकुम यों समय है जण हर इंसान आपरे सपनों, उम्मीदों और लक्ष्यों ने मन सूं मंथन करें एक बार फिर सूं खुद ने टटोले और ठान लेंवे कि इण साल कुछ नयों कुछ और बढ़िया कराला।

किकर करां बीते साल रो सम्मान, नए साल का स्वागत..?

हुकुम नए साल री शुरुआत करण सूं पेला, या बहुत ज़रूरी है कि आपा बीते साल रो आभार प्रकट करा चाहे वो साल अछो रियो या मुश्किलों भरों, क्योंकि वो साल आपाने कुछ न कुछ सिखायों ही है। अतीत आपणो गुरु व्है हुकुम। जित्तो **समय** सिखावे उत्तो कुण सिखावे..? इण वास्ते बीते साल ने धन्यवाद देने आपा नई ऊर्जा रे साथे नए साल री ओर कदम बढ़ा सका।

हुकुम नयों साल जीवन रों वो सफर है, जठे आप खुद आपरा लेखक हो। अपणी सोच ने सकारात्मक बणाओं कोई भी समस्या या मुश्किल आवें, उन्हें धैर्य रे साथे सुलझावण री कोशिश करों। धैर्य और समय पर्वत जेहड़ी समस्या सुलझा देवे। समय रे अंतराल में सब सुलझ जावे। बड़ा-बड़ा घाव भर जावे। सूर्योदय री एक किरण सारो अंधकार पी जावे।

नए साल में जीवन रो कोई लक्ष्य तय करणों बहुत महत्वपूर्ण है। बिना लक्ष्य बणाया किन्ही भी कार्य मे सफलता नहीं मिळे। पुराणी आदता ने छोड़ नई सोच रे साथे बदलाव जरूरी हैं।

सुबह जल्दी उठण री आदत, रोजाना एक्सरसाइज री आदत ने रोज़मर्रा में लावों। दृढ़ संकल्प करो। तन मन रो दास है हुकुम। स्वस्थ मिनख इज मस्ती में रह सके। बुखार में डॉयफ्रूट, अमृत भोजन भी नहीं भावे। जवानी सकारात्मक विचार है हुकुम। पॉजिटिव बूढ़ा भी जवान लागे। रोवता जवान भी बूढ़ा दिखे। चयन आपरो है हुकुम।

सोशल मीडिया माथे समय बर्बाद करण री बजाय किताबा पढ़ो।

उण चीज़ों रे लिए आभार जताओं जो आपरे कने हैं। उण मित्रों ने भी शुक्रिया अदा करो जिनों सानिध्य सूं आपरो जीवन बदलयो। पल पल प्रभु ने भी शुक्रिया कहो। नुगरो किने छोको लागे सा। शुक्रिया री या आदत आपरें जीवन में संतोष और खुशी लावेला।

हुकुम नए साल री शुरुआत अपनों रे साथे करों, वाणे साथे वक्त बितावण सूं रिश्ता मजबूत हुवेला और आपने भावनात्मक समर्थन भी मिळेला।

और परिवार और दोस्तों रे साथे भी समय बिताओं इणसूं मन मे उत्साह और उमंग बण्योड़ों रेहवें।

आपरो स्वास्थ्य आपरी सबसूं बड़ी पूंजी है। संतुलित आहार लेवों, तनाव सूं बचों ।

हुकुम नए साल रो मतलबः एक नई दिशा

नए साल रों अर्थ केवल कैलेंडर बदलनों नहीं है। यों अपणी जिंदगी ने एक नई दिशा देवण रों अवसर है। इन्हें एक जिम्मेदारी री तरह सूं लेवा। छोटा-छोटा कदम उठाने आपाणा बड़ा बड़ा सपना ने पूरा करण री ओर बढ़ सकां।

हुकुम नए साल री शुरुआत ने जीवन रो एक नयों मोड़ मानों। हर दिन बढ़िया बणावण वास्ते हर रोज मेहनत शुरू करों। हुकुम याद राखजों, हर दिन नयों है, हर सुबह एक नई शुरुआत है। इण नए साल ने आप आपरी जिंदगी रों सबसूं शानदार अध्याय बणायजो।

उजाले री यादों में जिओ हुकुम।

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- *दिल में तुम्हारे अपनी कमी छोड़ जाएंगे,*
  आंखों में इंतजार की लकीर छोड़ जाएंगे।
  याद रखना मुझे ढूंढ़ते फिरोगे एक दिन,
  जिंदगी में एक दोस्त की कमी छोड़ जाएंगे।

- *कोई नज़र भी उठाए उस पे तो दिल घड़क जाता है..!*
  उस शख़्स को चाहता हूँ अपनी आबरू की तरह

- *इश्क उसी से करो जिसमें कमियां हज़ार हो...*
  ये खूबियों से भरे चेहरे इतराते बहुत हैं....

- *क्यों आजमाते हो हमें बेगानों की तरह,*
  "कभी तो मिलने आओ, अपनों की तरह"..

- *तुम नाराज हो जाओ, रूठो या खफा हो जाओ,,*
  पर बात इतनी भी ना बिगाड़ो कि बिछड़ ही जाओ,,

- *"नज़र के सामने रहना और नज़र नहीं आना,*
  उनके सिवा ये हुनर किसी को नहीं आता,

कार्टून कौतुक

खुश रहें - खुश रखें

रोज रात में सोने से पहले ये हिसाब जरूर करें कि दिन में अच्छे काम किए या नहीं

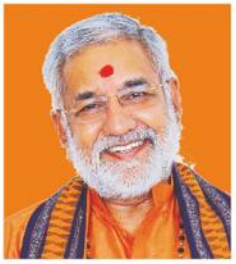

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

कहानी - विक्रम संवत की शुरुआत राजा विक्रमादित्य ने की थी। एक दिन राजा विक्रम अपने गुरु के पास बैठे हुए थे। गुरु ने विक्रमादित्य से पूछा- 'बताओ राजा आप आज किस विशेष उद्देश्य से आए हैं?'

विक्रमादित्य ने कहा- 'मुझे आप कोई ऐसा एक मंत्र बता दें, जिसे मैं भी ध्यान रखूं और मेरी आगे आने वाली पीढ़ी भी ध्यान रखें। गुरु ने संस्कृत में एक श्लोक लिखकर राजा को दे दिया। उस श्लोक का अर्थ था कि दिनभर की व्यस्तता के बाद जब रात में सोने जाओ तो ये विचार करो कि हमने आज दिनभर में जो जीवन जिया है, वह पशुओं की तरह था या मनुष्य की तरह आज कोई अच्छा काम भी किया है। अगर कोई अच्छा काम नहीं किया है तो तुम्हें आज की रात सोने का क्या अधिकार है?'

राजा ने अपने सिंहासन पर ये श्लोक लिखवा लिया और इसके बाद हर रोज वे इस मंत्र को याद रखते थे। रात को सोने से पहले विचार करते कि आज मैंने कोई सद्कर्म किया है या नहीं? एक दिन वे दिनभर के कामों में बहुत व्यस्त थे, पूरा दिन गुजर गया और रात में सोने का समय हो गया। सोने से पहले उन्हें ध्यान आया कि आज का मेरा सद्कर्म क्या है? विक्रमादित्य ने बहुत सोचा, लेकिन उन्हें कोई अच्छा काम याद नहीं आया।

विक्रमादित्य तुरंत महल से बाहर निकले और एक खेत पर देखा कि एक किसान ठंड में फसल की रखवाली करते हुए सो गया है। विक्रमादित्य ने सोचा कि अपनी फसल के लिए इसका समर्पण है। उन्होंने तुरंत ही अपनी गर्म शाल उस किसान को ओढ़ा दी। महल आकर उन्होंने याद किया कि आज मैंने मानवता की मदद की है और इसके बाद वे सो सके।

सीख- विक्रमादित्य का ये आचरण हमें संदेश दे रहा है कि हमें दिन भर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम अच्छे काम करते रहें। रात में सोने से पहले अपने अच्छे कामों का हिसाब जरूर करना चाहिए।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

आपसे कहा जाता है -
- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

सर्दियों में अपने परिवार के साथ खुशियां मनाने के अवसर पर एक स्वादिष्ट बंगाली मिठाई का मारवाड़ी वर्जन...

केसरिया मूंग दाल रसगुल्ले...

(वैसे रसगुल्ले छेना पनीर से बनाये जाते हैं।)

सामग्रीः मूंग की धुली दाल-1 कप, चीनी - 2 कप, पानी - 4 कप, इलायची पाउडर - 1/4 चम्मच, केसर के धागे - 15, (1/2 चम्मच गुनगुने दूध में भीगे), खाने वाला फूड ग्रेड पीला रंग - 1 चुटकी, देसी घी तलने के लिए, बारीक कटे पिस्ता बादाम - सजाने के लिए

विधिः मूंग की धुली दाल को भिगोए 8 से 10 घण्टे, चीनी में पानी मिलाकर 1 तार की चाशनी बना लें, चाशनी में इलायची पाउडर डालें। दूध में भीगा केसर डालें। दाल को अच्छे से धोकर मिक्सी में बारीक पीस कर पेस्ट बना लें। अब इस दाल के पेस्ट को एक परात में निकाल लें, और हाथ से खूब अच्छे से फेंटे, दाल को तब तक फेंटे जब तक ये सफेद व हल्की ना हो जाये, दाल फूलकर दोगुनी हो जायेगी।

फेंटने के बाद दाल में चुटकी भर पीला रंग मिलाएं और फेंटे। कढ़ाई में देसी घी गरम करें और मध्यम आंच पर कढ़ाई में पकोड़ी की तरह रसगुल्ले डालने शुरू करें। कड़ाई में डालते ही ये फूलकर डबल हो जायेंगे। अब इन रसगुल्लों को घी से निकलकर गरम गरम चाशनी में डालते जाएं। 4 से 5 घंटे चाशनी में डुबोकर रख दें, ये रसगुल्ले चाश्नी पीकर रसदार हो जायेंगे और स्वादिष्ट लगेगें। केसर के धागों, कटे पिस्ते व बादाम से सजाकर गरम या ठंडे इच्छा अनुसार परोसें।

ध्यान रखें...
दाल को डबल होने तक अच्छे से हाथ से फेंटे नही तो रसगुल्ले टाइट हो जायेगे और रस भी अंदर नही जायेगा। एक एक रसगुल्ले के अंदर आप भीगी हुई चिलोंजी या पिस्ता भी रखकर तल सकते हैं.

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

इस महीने व्यय अधिक संभावित है। स्वास्थ में सुधार होगा। समाज में और कर्म क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य होंगे। जोखिम उठाने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। दांपत्य जीवन मधुर रहेगा वाहन सुख की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी भोतिक सुख सुविधाओं पर खर्च करेंगे। अपने बलबूते पर प्रगति करते हुए जीवन लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेंगे।

वृषभ

कार्य क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरी में प्रमोशन मिलने की संभावना रहेगी। व्यापार में विस्तार होगा। आत्मविश्वास बढ़ेगा। आकस्मिक रूप से खर्च बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। संतान की ओर से तनाव रहेगा।

मिथुन

घर में शुभ एवं मांगलिक कार्य होंगे। धार्मिक कार्यों में धन व्यय होगा। लंबी यात्राओं के योग बनेंगे। नौकरी पेशा जातकों को कार्य क्षेत्र में कुछ परेशानी आ सकती है, जो जातक अभी-अभी व्यापार में आए हैं, उन्हें बहुत ज्यादा प्रयत्न करना पड़ेंगे। पैरों में दर्द, अनिद्रा जैसी समस्याएं हो सकती है। वाहन सावधानी से चलाएं। पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

कर्क

कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की संभावना है। व्यापार करने वाले जातकों को अप्रत्याशित रूप से लाभ होने की संभावना है। नौकरी करने वाले जातक अपना कार्य क्षेत्र बदलने का विचार कर सकते हैं। पाचन से संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी से मन मुटाव संभावित है। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। शिक्षा एवं संतान के क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी।

सिंह

वे जातक जो पार्टनरशिप के साथ काम कर रहे हैं, उन्हें इस महीने कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पार्टनर से विवाद संभावित है। जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कर्ज लेने की स्थिति बन सकती है। स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहेगा। त्वचा और आंख संबंधी कोई समस्या हो सकती है। खर्च की अधिकता रहेगी। लोकप्रियता बढ़ेगी। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं में खर्च करना पड़ेगा। प्रेम एवं विवाह के क्षेत्र में श्रेष्ठ सफलता मिलेगी।

कन्या

अपने स्वास्थ्य की परवाह करें। परिवार वालों से अच्छा बर्ताव करें। आकस्मिक रूप से लाभ की संभावना है। नौकरी पेशा जातकों को प्रमोशन मिल सकता है। इच्छित जगह ट्रांसफर मिल सकता है। व्यापारी वर्ग अपने व्यवसाय का विस्तार करेगा। घर में शुभ कार्य होंगे। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुफ्त उठाएंगे। ऋण के माध्यम से संपत्ति का निर्माण होगा।

तुला

परिवार के मामले में इस महीने में मिश्रित परिणाम मिल सकता है। जिनसे सहयोग की अपेक्षा नहीं थी, उनसे सहयोग मिल सकता है। जिससे अपेक्षा थी उनसे शायद न मिले। आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा। एलर्जी के कारण होने वाले रोग परेशान कर सकते हैं। संतान के कार्यों की चिंता रहेगी। विरोधी परास्त होंगे। खर्च की अधिकता रहेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। पाचन तंत्र, पेट, गैस की तकलीफ हो सकती है, सावधान रहें। धार्मिक / शुभ यात्रा के योग प्रबल रहेंगे।

वृश्चिक

नौकरी पेशा जातकों को कार्य क्षेत्र में दबाव रहेगा। व्यापारी वर्ग के लिए आर्थिक अनिश्चितता बनी रहेगी। परिवार के ऊपर धन व्यय करना पड़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं का आनंद लेंगे। यात्रा के योग प्रबल रहेंगे। शुभ एवं मांगलिक कार्य, विवाह संबंध आदि के योग प्रबल बने रहेंगे।

धनु

धनु राशि के लिए कार्य क्षेत्र की दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा। नौकरी पेशा जातकों को सम्मान मिलेगा। व्यापारी अपने व्यापार का विस्तार करेंगे एवम लाभ होगा। व्यय बढ़ा हुआ रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सीजनल बीमारियां परेशान कर सकती हैं। वाणी पर संयम रखना होगा नहीं तो बनते हुए कार्य बिगड़ जाएंगे। अचानक धन लाभ के योग प्रबल रहेंगे।

मकर

काम का दबाव अधिक रहेगा। कार्य क्षेत्र में अधिक चुनौती होगी। अध्यात्म की ओर रूझान बढ़ेगा। भाग्य का सहयोग मिलेगा। प्रतियोगी कड़ी टक्कर देंगे। इस महीने आप अपने आप को ऊर्जा से भरा हुआ पाएंगे। उत्साह रहेगा एवं स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

कुम्भ

यह महीना कार्य क्षेत्र की दृष्टि से आपके लिए चुनौतीपूर्ण रहेगा। सब कुछ आपके हिसाब से नहीं हो पाएगा जिसके कारण आप चिंतित हो सकते हैं। लाभ के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। पैरों से संबंधित समस्या हो सकती है। एलर्जी भी परेशान कर सकती है। इन सबके बावजूद परिवार का वातावरण सुखद रहेगा। परिवार में प्रेम भाव बना रहेगा एवं सहयोग मिलेगा। धैर्य रखें।

मीन

काम का दबाव अधिक रहेगा। लाभ मध्यम रहेगा। समय पर बात याद नहीं रह पाऐगे। उलझन में फंसे रहेंगे। किसी को पैसा उधार देना या विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। पांव में कष्ट के योग रहेंगे। कई जगह अनावश्यक खर्च वहन करना पड़ेगा फिर भी धन की व्यवस्था हो जाएगी। संतान के कार्य रुक कर हो जाएंगे।

स्वामला®

धूतपापेश्वर
आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष

१५० वर्षों से अधिक

अब ४ व्हॅरियंट्स में उपलब्ध

स्वामला रोजाना, सेहत का खजाना!

- स्वास्थ्य बनाये रखें
- रोगप्रतिकारशक्ति सक्षम रखने में मदद करें
- शरीर के घटकों को बल दे
- श्वसनसंस्था को बल दे
- बार बार उत्पन्न होनेवाली आरोग्य समस्याओं को कम करने में सहायता करें

Caution: To be taken under medical supervision.
सावधान: चिकित्सक की सलाह अनुसार ले.

F25SWAd 6.25X9.25H403

Follow us on: sdlconsumerayurved www.sdlindia.com

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड | शास्त्रोक्त, मानकीकृत, सुरक्षित आयुर्वेद औषधियाँ Health & Trade Enquiries: 1800 22 9874

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2023-2025
Despatch Date - 02 January, 2025

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761, Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
https://srimaheshwaritimes.com